आलोक

भाग 1

नौवीं कक्षा के लिए

आलोक

नौवीं कक्षा के लिए

माध्यमिक शिक्षा विभाग, असम सरकार

आलोक

भाग 1

(नौवीं कक्षा के लिए)

: प्रस्तुतिकरण और अनुमोदन :

असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्

गुवाहाटी-21

: संपादक मंडल :

डॉ. अच्युत शर्मा # रामनाथ प्रसाद

गोलोक चंद्र डेका # सुरेश सिंह # मंगला हालै

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

AALOK BHAG 1 : A Text-book of class IX for non-Hindi Medium Schools (Hindi[4]), prepared and approved by the Board of Secondary Education, Assam, vide letter No. SEBA/AB/ELE/4/ 2001/11, Dated Guwahati the 3rd January, 2012 and published by Asom Rastrabhasha Prachar Samiti, Guwahati-32.

Free Textbook

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

गुवाहाटी-32

प्रथम प्रकाशन : 2011
पुनर्मुद्रण : 2012
पुनर्मुद्रण : 2013
पुनर्मुद्रण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2015
पुनर्मुद्रण : 2016
पुनर्मुद्रण : 2017
पुनर्मुद्रण : 2018
पुनर्मुद्रण : 2019
पुनर्मुद्रण : 2020
पुनर्मुद्रण : 2021
पुनर्मुद्रण : 2022
पुनर्मुद्रण : 2023

असम सरकार द्वारा नि:शुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पाठ्यपुस्तक

(टैक्स्ट पेपर 70 जीएसएम और कवर पेपर 165 जीएसएम पर मुद्रित)

मुद्रक : सुनील बाइंडिंग वर्क्स
गणेशपाड़ा, आनंद दैमारी पथ, गुवाहाटी-25

डॉ. रनोज पेगु, एम.बी.बी.एस.
मंत्री, असम

सत्यमेव जयते

शिक्षा, मैदानी जनजाति और
पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग

संदेश

विद्यालयीन शिक्षा का आवश्यक हिस्सा है – पाठ्यपुस्तक। विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित करते हैं। विद्यार्थी ही हमारे राज्य व देश के भविष्य के वास्तविक संसाधन हैं। मानव सभ्यता की धारा शिक्षा द्वारा ही गतिमान होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान में हमारी सरकार ने शिक्षा क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व दिया है।

मौजूदा राज्य सरकार ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक सफलता दिलाने के साथ-साथ उनके जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति तथा राज्य के कल्याण के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है। प्रज्ञान भारती के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत क वर्ग से द्वादश वर्ग तक के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक अविराम रूप से दी जा रही है। सन् 2020 से हमारी सरकार ने इस योजना को स्नातक वर्ग तक विस्तारित किया है। समूचे राज्य में उच्चतर माध्यमिक और स्नातक वर्गों में नामांकन शुल्क की माफी की घोषणा होने से एक सकारात्मक पहल की शुरुआत हुई है।

समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के शिक्षार्थियों को मैट्रिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के शुल्कों को माफ करने की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों की पोशाकों (यूनीफॉर्म) की आपूर्ति के लिए सरकार ने आवश्यक व्यवस्था की है। आनंदराम बरुवा योजना के जरिए मैट्रिक पास मेधावी छात्र-छात्राओं को लैपटॉप या उसके बदले में आर्थिक अनुदान देने की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के शिक्षण-मार्ग को सुगम बनाने के महान उद्देश्य से कार्यान्वित प्रज्ञान भारती योजना के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण जैसे पवित्र कार्यों के निष्पादन में योगदान दे रहे राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद तथा असम राज्यिक पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन निगम एवं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मैं धन्यवाद देता हूँ। ज्ञानार्जन की दिशा में हमारे विद्यार्थी निरंतर परिश्रम करते हुए राष्ट्र के संसाधन के रूप में अपने आप को निर्मित करने में सक्षम होंगे। इसी आशा के साथ मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

रनोज पेगु

(डॉ. रनोज पेगु)
शिक्षा मंत्री, असम

प्राक्कथन

असम माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने नए पाठ्यक्रम के आधार पर शैक्षिक वर्ष 2012 से नौवीं कक्षा के लिए **आलोक भाग 1** नामक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की है। छात्र-छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक पाठ के अंत में विविध प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं, जिससे पूरे पाठ को समझने व उत्तर देने में उन्हें समुचित सहायता प्राप्त होगी।

पाठ्यपुस्तक के पांडुलिपि प्रणयन में कई अनुभवी विशेषज्ञों को दायित्व सौंपा गया था। उन्होंने पूरी निष्ठा से अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए उक्त पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग दिया है। अत: परिषद् इनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करती है।

पाठकों एवं विज्ञ व्यक्तियों से आग्रह है कि यदि इस पाठ्यपुस्तक में कहीं भूल या त्रुटि ज्ञात हो, तो इसके संबंध में सकारात्मक परामर्श दें, जिससे आगामी संस्करण में समुचित संशोधन किया जा सके।

बामुनीमैदाम, गुवाहाटी
दिसंबर, 2011

सचिव
असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्
गुवाहाटी-21

दो शब्द

निरक्षरता ही किसी राष्ट्र तथा समाज के विकास में रुकावट डालती है। समाज के लिए यह एक अभिशाप है। भारतवर्ष से पूर्णरूपेण निरक्षरता-उन्मूलन के उद्देश्य से केंद्रीय सरकार ने पूरे देश में 'शिक्षा का अधिकार कानून, 2009' लागू किया है। इसके अनुसार देश के विद्यालयों के कैरिकुलम और पाठ्यक्रमों में भी नवीनता लाई गयी है। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप बच्चों को आकर्षित करनेवाली हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया है।

मुद्रण और प्रकाशन के क्षेत्र में शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक प्रकाशित कर यथासमय छात्र-छात्राओं तक पहुंचाना ही समिति का मुख्य उद्देश्य है। मूलत: इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए असम सरकार की ओर से नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरित करने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की अनुकंपा से और भारत रत्न लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जी के नेतृत्व में सन् 1938 में संस्थापित असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का मुख्य लक्ष्य है-भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को सुचारु रूप से संचालित करना। इन कार्यक्रमों में हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन अन्यतम है। उल्लेखनीय है कि असम सरकार के निर्देशानुसार शैक्षिक वर्ष 1974 से ही समिति हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन करती आई है। परवर्ती समय में केंद्र सरकार की सहायता से असम सरकार ने सन् 1986 से नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित की है।

सन् 2011 से राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना के अनुसार नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें केंद्रीय रूप से राज्य के प्रत्येक शिक्षा खंड तक निर्धारित समयसीमा के अंदर सफलतपूर्वक पहुंचायी जा रही हैं। उल्लेखनीय है कि कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन के चलते असम सरकार ने शिक्षावर्ष जनवरी के बदले अप्रैल महीने तक बढ़ा दिया है। वर्तमान परिस्थिति के साथ सामंजस्य रखते हुए इस वर्ष भी असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने हिंदी पाठ्यपुस्तकों की आपूर्ति हेतु सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ हाथों ली हैं।

असम के शिक्षा क्षेत्र के आमूलचूल परिवर्तन और विकास के जरिए देश के भीतर एक उत्कृष्ट राज्य के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए असम सरकार ने विभिन्न महत्वाकांक्षी योजनाएँ चला रही हैं। वर्तमान में सरकार ने नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना को 12वीं कक्षा तक विस्तारित की है। इसके अतिरिक्त सरकार की ओर से मध्याह्न भोजन, पोशाक वितरण, गरीब परिवार के बच्चों का शुल्क माफी, गुणोत्सव कार्यक्रम के साथ-साथ महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रा-छात्राओं को अनुदान राशि दी जा रही है। इसके अंतर्गत 'क' श्रेणी से 12वीं कक्षा तक नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण की यह प्रशंसनीय और शिक्षार्थी केंद्रित योजना है। सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को सफल बनाने में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पूरी निष्ठा व तत्परता के साथ काम करने के लिए संकल्पबद्ध है।

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

विषय-सूची

गद्य खंड

1.	**हिम्मत और जिंदगी**	: रामधारी सिंह 'दिनकर'	1–10
2.	**परीक्षा**	: प्रेमचंद	11–20
3.	**बिंदु-बिंदु विचार**	: रामानंद दोषी	21–30
4.	**चिड़िया की बच्ची**	: जैनेंद्र कुमार	31–41
5.	**आप भले तो जग भला**	: श्रीमन्नारायण	42–52
6.	**चिकित्सा का चक्कर**	: बेढब बनारसी	53–68
7.	**अपराजिता**	: शिवानी	69–81
8.	**मणि-कांचन संयोग**	: डॉ. अच्युत शर्मा	82–92

पद्य खंड

9.	**कृष्ण-महिमा**	: रसखान	95–103
10.	**दोहा-दशक**	: बिहारीलाल	104–115
11.	**नर हो, न निराश करो मन को**	: मैथिलीशरण गुप्त	116–120
12.	**मुरझाया फूल**	: महादेवी वर्मा	121–129
13.	**गाँव से शहर की ओर**	: अज्ञेय	130–136
14.	**साबरमती के संत**	: प्रदीप	137–142
15.	**चरैवेति**	: नरेश मेहता	143–146
16.	**टूटा पहिया**	: धर्मवीर भारती	147–152

गद्य खण्ड

उचित प्रकार की शिक्षा का अर्थ है प्रज्ञा को जागृत करना तथा समन्वित जीवन का पोषण करना और केवल ऐसी ही शिक्षा एक नवीन संस्कृति तथा शांतिमय विश्व की स्थापना कर सकेगी। – जे. कृष्णमूर्ति

1

रामधारी सिंह 'दिनकर'

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रदेश के मुंगेर जिले के गंगा के उत्तरी तट पर स्थित गाँव सिमरिया में 1908 ई. में हुआ था।

दिनकर के पिता कृषक थे। उनका देहांत तभी हो गया, जब दिनकर दो वर्ष के थे। उनका लालन-पालन उनकी माँ ने किया। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही पाकर, मैट्रिक की परीक्षा दिनकर ने मोकामाघाट के हाईस्कूल से 1928 ई. में पास की। इसके बाद उन्होंने पटना कॉलेज से 1932 ई. में बी.ए. किया। परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी न थी कि दिनकर आगे पढ़ सके। इसलिए वे एक हाई स्कूल में पढ़ाने लगे।

1934 ई. में उन्होंने बिहार सरकार में नौकरी आरंभ की और सन् 1952 तक विभिन्न पदों पर कार्य करते रहे। 1952 ई. में कांग्रेस ने उन्हें राज्य सभा के लिए मनोनीत किया। 1965 ई. में भारत सरकार ने उन्हें हिन्दी सलाहकार के पद पर नियुक्त किया। इस पद पर वे मृत्युपर्यंत (1974 ई.) बने रहे।

दिनकर जी का गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार था। उनकी गद्य की पुस्तक **संस्कृति के चार अध्याय** को साहित्य अकादमी पुरस्कार और काव्य-ग्रंथ **उर्वशी** को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। राष्ट्रपति ने उन्हें **'पद्मभूषण'** से सम्मानित किया।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं -

गद्य : मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, देश-विदेश, उजली आग, भारत की सांस्कृतिक कहानी, रेती के फूल आदि।

पद्य : प्रणभंग, रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी आदि।

दिनकर के निबंधों में विचारों की स्पष्टता और अभिव्यक्ति की सहजता एवं सजीवता का अद्‌भुत मेल है। उन्होंने सामाजिक जीवन, संस्कृति एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख लिखे हैं।

*प्रस्तुत पाठ **हिम्मत और जिंदगी** दिनकर जी का ऐसा ही एक विचारोत्तेजक निबंध है। इसमें लेखक ने कहा है कि जीवन में धूप में तपने वाला ही चाँदनी का आनंद ले सकता है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। वस्तुत: लेखक ने एक अच्छी जिंदगी जीने की राह दिखाई है। अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों से पाठ की रोचकता काफी बढ़ी है।*

हिम्मत और जिंदगी

जिंदगी के असली मजे उनके लिए नहीं है, जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं। बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है, जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कंठ सूखा हुआ, ओंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है।

सुख देनेवाली चीजें पहले भी और अब भी हैं। फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मजे बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है।

जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है, जो दिन भर धूप में थक कर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की जरूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

इसके विपरीत वह आदमी भी है, जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखों के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मजे ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

उपवास और संयम ये आत्महत्या के साधन नहीं है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथा:', जीवन को भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता।

बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती है। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एक मात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी।

महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।

श्री विन्स्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

जिंदगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के

लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए।

दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं, जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज सुनाई पड़ती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे जिंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है ?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मजा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीनेवाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है, जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है।

साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा

हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है।

झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, जिंदगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखानेवाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज सुनता रहता है, एक ऐसी आवाज जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज उसे बराबर कहती रहती है, ''तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।'' सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार न सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी, कि तुममें साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक्त पर जिंदगी से भाग खड़े हुए।

जिंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिंदगी का कोई मजा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने जिंदगी को ही आने में रोक रखा है।

जिंदगी से, अंत में, हम उतना ही पाते हैं, जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना जिंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है, जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अँगारों से भी लिखे गए हैं। जिंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकर चलता है कि जिंदगी

कभी भी खत्म न होने वाली चीज है।

अरे! ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा?

दुनिया में जितने भी मजे बिखेरे गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज भी तुम्हारी हो सकती है, जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मान कर लौटे जा रहे हो।

कामना का अंचल छोटा मत करो, जिंदगी के फल के दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

यह अरण्य, झुरमुट जो काटे अपनी राह बना ले,
क्रीतदास यह नहीं किसी का जो चाहे अपना ले।
जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर! जो उससे डरते हैं।
वह उनका जो चरण रोप निर्भय होकर लड़ते हैं।

अभ्यासमाला

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. किन व्यक्तियों को सुख का स्वाद अधिक मिलता है ?

(क) जो सुख का मूल्य पहले चुकाता है।

(ख) जो सुख का मूल्य पहले चुकाता है और उसका मजा बाद में लेता है।

(ग) जिसके पास धन और बल दोनों हैं।

(घ) जो पहले दु:ख झेलता है।

2. पानी में जो अमृत-तत्त्व है, उसे कौन जानता है ?

(क) जो प्यासा है।

(ख) जो धूप में खूब सूख चुका है।

(ग) जिसका कंठ सूखा हुआ है।

(घ) जो रेगिस्तान से आया है।

3. 'गोधूली वाली दुनिया के लोगों' से अभिप्राय है -

(क) विवशता और अभाव में जीने वाले लोग।

(ख) जय-पराजय के अनुभव से परे लोग।

(ग) फल की कामना न करने वाले लोग।

(घ) जीवन को दाँव पर लगाने वाले लोग।

4. साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह -

(क) सदा आगे बढ़ता जाता।

(ख) बाधाओं से नहीं घबराता है।

(ग) लोगों की सोच की परवाह नहीं करता।

(घ) बिलकुल निडर होता है।

(आ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

1. चाँदनी की शीतलता का आनंद कैसा मनुष्य उठा पाता है ?
2. लेखक ने अकेले चलने वाले की तुलना सिंह से क्यों की है ?
3. जिंदगी का भेद किसे मालूम है ?

4. लेखक ने जीवन के साधकों को क्या चुनौती दी है ?

(इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. लेखक ने जिंदगी की कौन-सी दो सूरतें बताई हैं और उनमें से किसे बेहतर माना है ?
2. जीवन में सुख प्राप्त न होना और मौके पर हिम्मत न दिखा पाना— इन दोनों में से लेखक ने किसे श्रेष्ठ माना है और क्यों ?
3. पाठ के अंत में दी गई कविता की पंक्तियों से युधिष्ठिर को क्या सीख दी गई है ?

(ई) सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है।

(ख) कामना का अंचल छोटा मत करो, जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो।

भाषा और व्याकरण ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो-

(क) भोजन का असली स्वाद **उसको** मिलता है, **जो** कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है।

(ख) लहरों में तैरने का **जिन्हें** अभ्यास है, **वे** मोती लेकर बाहर आएँगे।

(ग) **जो** सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं **उन्हें** स्वाद अधिक मिलता है।

इन वाक्यों में मोटे छपे शब्द 'उसको', 'जो', 'जिन्हें', 'वे' और 'उन्हें' संबंधवाचक सर्वनाम हैं क्योंकि वाक्यों में इनका परस्पर संबंध है। संबंधवाचक सर्वनामों का प्रयोग करते हुए कोई अन्य पाँच वाक्य बनाओ।

2. इस पाठ में अरबी-फारसी के अनेक शब्द आए हैं, जैसे मजा, जिंदगी। इनके हिंदी रूप हैं- आनंद, जीवन। यहाँ कुछ हिंदी शब्द दिए जा रहे हैं।

पाठ में से उनके अरबी-फारसी रूप चुनकर लिखो :

भय, सुगंधित, अनुभव, विशेषता, अंतर, वास्तविक, प्रयास, आवश्यकता।

योग्यता-विस्तार

1. अवसर मिलने पर दिनकर कृत 'कुरुक्षेत्र' में से 'भीष्म-युधिष्ठिर' संवाद का चयन करो और कक्षा में उसे सुनाओ।
2. साहस और उत्साह का संदेश देने वाली कुछ कहानियों अथवा निबंधों का संकलन करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

खौफ = भय, डर

तरलाई = शीतलता, तरलता

कस्तूरी = एक अत्यंत सुगंधित बहुमूल्य पदार्थ, जो एक विशेष प्रकार के नर हिरन की नाभि के पास की गाँठ में पैदा होता है (यह औषधि के काम में आता है)

लाक्षागृह = लाख का घर, जिसे पांडवों को मारने के लिए कौरवों ने बनवाया था

विंस्टन चर्चिल = द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री

सिफत = विशेषता

मकसद = उद्देश्य, हेतु

पंजा डालना = हासिल।

हमजोली = संगी-साथी

गोधूलि = संध्या बेला

बँधे हुए घाट का पानी पीना = आराम की जिंदगी जीना, चुनौती स्वीकार न करना

दाँव लगाना = बाजी लगाना

मद्धिम = धीमी

अर्नाल्ड बेनेट = इंग्लैंड का उच्चकोटि का विचारक

कबूल = स्वीकार

अंतराल = गहरा तल

मौक्तिक कोष = मोतियों का भंडार, महान उपलब्धियाँ

निर्झरी = झरना

अरण्य = वन, जंगल

क्रीतदास = खरीदा या मोल लिया हुआ गुलाम

रोप = रोपण, धान आदि की पौध भूमि में लगाना

2

प्रेमचंद

हिन्दी के महान कथाकार प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई,1880 को बनारस के लमही गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद का बचपन अभावों में बीता और शिक्षा बी.ए. तक ही हो पाई। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की; परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और वे लेखन-कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए। 8 अक्टूबर, 1936 को इस महान साहित्यकार का देहांत हो गया।

प्रेमचंद की कहानियाँ **मानसरोवर** के आठ भागों में संकलित हैं। **सेवासदन**, **प्रेमाश्रम**, **रंगभूमि**, **कायाकल्प**, **निर्मला**, **गबन**, **कर्मभूमि**, **गोदान** उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने **हंस**, **जागरण**, **माधुरी** आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया। कथा साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार का गद्य लेखन भी प्रचुर मात्रा में किया। आप साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया उसकी अभिव्यक्ति उन्होंने कथा-साहित्य में की। किसानों और मज़दूरों की दयनीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं।

प्रेमचंद का साहित्य मूलत: समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना से प्रेरित है। वह अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा प्रतिनिधित्व करता है।

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज, मुहावरेदार और पात्रानुकूल है।

≈ *' **परीक्षा** ' कहानी प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने अफसर या अधिकारी के चयन में विद्वता के अतिरिक्त दया, परोपकार की भावना, कर्त्तव्य–परायणता जैसे सद्गुणों पर अधिक बल दिया है। सच्चे अर्थों में मनुष्य केवल विद्या और ऊँची उपाधियों से महान नहीं होता; बल्कि उसके हृदय में संचित प्रेम–भावना ही उसे महान बनाती है। प्रेमचंद की यह बहुचर्चित कहानी इसी विचार–धारा से संपुष्ट है। कहानी में दिखाया गया है कि सुजानसिंह ने रियासत के दीवान पद के लिए उम्मीदवारों की परीक्षा किस प्रकार ली।*

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए, तो उन्हें परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से उन्होंने विनय की, ''दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की। अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हैं। दूसरे, अब अवस्था भी ढल गई। राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रह गई। कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।''

राजा-साहब अपने अनुभवशील और नीति-कुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना तो हारकर उन्होंने प्रार्थना स्वीकर कर ली। पर, शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान उन्हीं को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला- ''देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की आवश्यकता है। जो सज्जन अपने को इस काम के योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं कि वे ग्रेजुएट हों; मगर उन्हें पुष्ट होना आवश्यक है। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।''

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। कोई पंजाब से चला आता, तो कोई मद्रास से। कोई नए फैशन का प्रेमी था, कोई पुरानी सादगी पर मिटता हुआ था। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर '**अ**' नौ बजे दिन तक सोया करते थे; आजकल वे बगीचे में टहलते उषा के दर्शन करते थे। मिस्टर '**ब**' को हुक्का पीने की लत थी, परंतु आजकल बहुत रात गए, किवाड़ बंद करके अंधेरे में सिगरेट पीते थे। मिस्टर '**स**,' '**द**' और '**ज**' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था; लेकिन, ये सज्जन आजकल '**आप**' और '**जनाब**' के बगैर नौकर से बातचीत नहीं करते थे। महाशय '**क**' नास्तिक थे; मगर, आजकल उनकी धर्म-निष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती! मिस्टर '**ल**' को किताबों से घृणा थी; परंतु आजकल वे बड़े-बड़े धर्म-ग्रंथ खोले, पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बातचीत कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता मालूम होता था। लोग समझते थे कि एक महीने की झंझट है; किसी तरह काट लें। कहीं कार्य सिद्ध हो गया, तो कौन पूछता है?

लेकिन, मनुष्य का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है। एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर विद्या है। इसे क्यों

छिपाकर रखे ? संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाएँ।

चलिए, तय हो गया। कोर्ट बन गए! खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के 'अप्रेंटिस' की तरह ठोकरें खाने लगी। रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराला था। खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद लेकर तेज़ी से उठते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली जाती है। लेकिन, दूसरी ओर खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए। लेकिन, हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उसपर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए उस नाले में आया; लेकिन, कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथों से ढकेलता। लेकिन, बोझ अधिक था गाड़ी फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता; मगर, वहाँ कोई सहायक नज़र न आता था। गाड़ी को अकेले छोड़कर वह कहीं जा भी नहीं सकता था। विपत्ति में फँसा हुआ था।

इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए झूमते-झामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा; परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा; मगर बंद आँखों से। उनमें सहानुभूति का नाम न था। लेकिन, उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य भी था, जिसके हृदय में दया थी और साहस

था। आज हॉकी खेलते हुए, उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया। किसान को देखते ही सब बात ज्ञात हो गई। हॉकी-स्टिक किनारे पर रख दी, कोट उतार डाला और किसान के पास आकर बोला,- ''मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?''

किसान ने देखा कि एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला- ''हुजूर; मैं आपसे कैसे कहूँ!''

युवक ने कहा- ''मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा! तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधों; मैं पहियों को ढकेलता हूँ। अभी गाड़ी ऊपर जाती है।''

किसान गाड़ी पर आकर बैठा। युवक ने पहियों को ज़ोर लगाकर खिसकाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा था। वह घुटनों तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत न हारी।

उसने फिर ज़ोर लगाया। उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला। उनकी हिम्मत बँध गई। उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर लगाया। बस! गाड़ी नाले की ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला- ''महाराज! आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।''

युवक ने हँसकर कहा-''आप मुझे कुछ इनाम देंगे?''

किसान ने गंभीर भाव से कहा-''नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।'' युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ। क्या ये सुजानसिंह तो नहीं? आवाज मिलती-जुलती है। चेहरा-मोहरा भी वही है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से

देखा। शायद वह उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला–''गहरे पानी में पैठने से मोती मिलता है।''

निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रात:काल से ही अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे; न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपा–दृष्टि होगी। संध्या–समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राजा के कर्मचारी और दरबारी और दीवानी के उम्मदीवारों के समूह, सब रंग–बिरंगी सज–धज बनाए आ विराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा–''मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ ही साथ आत्मबल भी। हृदय वही है, जो उदार हो; आत्मबल वही है जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे; और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम होते हैं और जो हैं,वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ–सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।''

रियासत के कर्मचारी और रईसों ने पं. जानकीनाथ की तरफ देखा और उम्मीदवारों के दल की आँखें उधर उठीं; मगर,उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार–साहब ने फिर फरमाया–''आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं ज़ख्मी होने पर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के

ऊपर चढ़ाए, उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का निवास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए; परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी न हटेगा।''

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. पूर्ण वाक्य में दो :

(क) 'परीक्षा' कहानी में किस पद के लिए परीक्षा ली गई है ?

(ख) दीवान साहब के समक्ष क्या शर्त रखी गई ?

(ग) 'परीक्षा' कहानी में उम्मीदवार कौन-सा सामूहिक खेल खेलते हैं ?

(घ) दीवान के पद के लिए किसका चयन किया गया ?

2. संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) दीवान सुजानसिंह ने महाराज से क्या प्रार्थना की ? क्यों ?

(ख) उम्मीदवार विभिन्न प्रकार के अभिनय कैसे और क्यों कर रहे थे ?

(ग) एक उम्मीदवार ने गाड़ीवाले की मदद कैसे की ?

(घ) किसान ने अपने मददगार युवक से क्या कहा ? उसका क्या अर्थ था ?

(ङ) सुजानसिंह ने उम्मीदवारों की परीक्षा कैसे ली ?

(च) पं० जानकीनाथ में कौन-कौन से गुण थे ?

(छ) सुजानसिंह के मतानुसार दीवान में कौन-कौन से गुण होने चाहिए ?

3. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) लेकिन, मनुष्य का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

(ख) गहरे पानी में बैठने से मोती मिलता है।

(ग) उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

4. किसने किससे कहा, लिखो :

(क) कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में में मिल जाए।

(ख) मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो।

(ग) नारायण चाहेंगे तो दिवानी आपको ही मिलेगी।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. नीचे लिखी संज्ञाओं में जातिवाचक, व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ पहचानो :

देवगढ़, शक्ति, दीवान, जानकीनाथ, सादगी, अंगरखे, हंस, पुल, दया शिखर, नारायण, खिलाड़ी

2. '**अनुभवशील**' शब्द में '**अनुभव**' तथा '**शील**' शब्दों का योग है। इसका अर्थ है **अनुभवी**। '**शील**' प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाओ।

3. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तित करो :

(क) खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे। (सामान्य वर्तमान)

(ख) लंबा आदमी सामने खड़ा है। (पूर्ण भूतकाल)

(ग) ऐसे गुणवाले संसार में कम होते हैं। (सामान्य भविष्य)

4. दो शब्दों में यदि पहले शब्द के अंत में 'अ' ,'आ' हो और बाद के शब्द के आरंभ में 'इ', 'ई' या 'उ','ऊ' हो तो उन दोनों में संधि होने पर क्रमश: 'ए', अथवा 'औ' हो जाता है; जैसे- देव+इंद्र =देवेंद्र, महा+ईश =महेश, मंत्र+उच्चारण=मंत्रोच्चारण, पर+उपकार=परोपकार।

नीचे लिखे शब्दों में संधि करो -

प्रश्न +उत्तर, गण+ईश, वीर+इंद्र, सूर्य+उदय, यथा+इच्छा

5. विलोम शब्द लिखो :

सज्जन, उपस्थित, उपयुक्त, अपकार

योग्यता-विस्तार

1. तुमने कभी किसी संकट में फँसे व्यक्ति की मदद की है ? अगर 'हाँ' तो अपना अनुभव लिखो।
2. अवसर मिलने पर प्रेमचंद की कहानियों का रसास्वादन लो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

रियासत	=	राज्य, प्रांत
प्रबंध	=	व्यवस्था, इंतजाम
नास्तिक	=	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला
पदच्युत	=	बर्खास्त
घृणा	=	नफरत
अवस्था	=	दशा, उम्र
निर्णय	=	फैसला
पहिया	=	गाड़ी का चक्का
हिम्मत न हारना	=	साहस न छोड़ना
उम्मीदवार	=	प्रार्थी
नसीब	=	भाग्य, किस्मत
कलेजा धड़कना	=	बेचैन होना, व्याकुल होना
निदान	=	समाधान
धनाढ्य	=	अमीर
संकल्प	=	निश्चय, इरादा

3

बिंदु-बिंदु विचार

– रामानंद दोषी

प्रस्तुत पाठ में दो विचार प्रधान लघु निबंध प्रस्तुत किए गए हैं। पहले निबंध 'वाणी और व्यवहार' में लेखक ने किसी भी सीख को रट लेने तथा उसे समझ-बूझकर आचरण में सही ढंग से न उतार पाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। उसने वाणी और व्यवहार की एकरूपता पर बल दिया है।

'पारसमणि' निबंध में लेखक ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर छिपी 'पारसमणि' को पहचानने के लिए परामर्श दिया है। लेखक की दृष्टि में यह पारसमणि है- हमारी सेवा-भावना, हमारा अपना परिश्रम और लगन। ऐसी पारसमणि के स्पर्श से मनचाहा सोना बनाया जा सकता है, वांछित उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है। किंतु इसके साथ ही उसने हमें यह चेतावनी भी दी है कि सोना बनाते समय मन की शुद्धता अनिवार्य है, अन्यथा सोने की मादकता तथा उसे और अधिक पाने का लालच हमें विनाश की ओर ले जा सकता है।

1. वाणी और व्यवहार

मुन्ना जोर-जोर से अपना पाठ रट रहे हैं- ''क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस : क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस।''

बड़ा सुंदर पाठ है। हिन्दी में इसका अर्थ लगभग यह हुआ कि 'शुचिता देवत्व की छोटी बहन है।' मेरा ध्यान अपनी किताब से उचट कर मुन्ना की ओर लग जाता है।

पाठ याद हो गया। मुन्ना के मित्र बाहर से बुला रहे हैं। मुन्ना पैर में चप्पल डाल कर सपाटे-से बाहर निकल जाते हैं। उनके खेलने का समय हो गया है।

अब कमरे में बिटिया आती हैं। भाई पर बहुत लाड़ है इनका। मुन्ना सात समंदर पार की भाषा पढ़ रहे हैं- इसलिए भाई का आदर भी करती हैं। बिटिया अंग्रेजी नहीं पढ़तीं।

मेज के पास पहुँचकर बिटिया निशान के लिए कागज लगाकर मुन्ना की किताब बंद करती हैं; किताबों-कॉपियों-कागजों के बेतरतीब ढेर को सँवारकर करीने से चुनती हैं; खुले पड़े पेन की टोपी बंद करती हैं; गीला कपड़ा लाकर स्याही के दाग-धब्बे पोंछती हैं और कुरसी को कायदे से रखकर चुपचाप चली जाती हैं।

क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस!

मेरे सामने ज्ञान नंगा होकर खिसियाना-सा रह जाता है।

क्षण मात्र में सब कुछ बदल जाता है! गंभीर घोष से सुललित शैली में दिए गए अनेकानेक भाषणों में सुने सुंदर सुगठित वाक्य कानों में गूँजने लगते हैं! मनमोहिनी जिल्द की शानदार छपाईवाली पुस्तकों में पढ़े कलापूर्ण अंश आँखों के आगे तैर जाते हैं!

प्रवचन और अध्ययन सब बौने हो गए हैं!

आचरण की एक लकीर ने सबको छोटा कर दिया है।

ज्ञान चाहे मस्तिष्क में रहे या पुस्तक में, वह चाहे मुँह से बखाना जाए या मुद्रण के बंदीखाने में रहे- आचरण में उतरे बिना विफल मनोरथ है।

धर्म और राजनीति, समाज और व्यवहार के क्षेत्रों में विविध-विविध मंचों से उपदेश देनेवाले मुन्नाओ! केवल कंठ से मत बोलो- हम तुम्हारे हृदयों की गूँज सुनना चाहते हैं। वाणी और व्यवहार में

समता आने दो- हम वास्तव में तुम्हारे समक्ष श्रद्धानत होना चाहते हैं।

मुन्ना! पाठ को रटो मत, उसे अपने अंदर समो लो!

बात को मुँह से और स्वयं को घर से बाहर निकालने से पहले इन दाग-धब्बों को पोंछ लो, जो तुम्हारी असावधानी से चारों ओर पड़ गए हैं।

2. पारसमणि

पारसमणि है तुम्हारे पास?

नहीं तो।

और तुम्हारे पास?

नहीं।

और तुम्हारे?

नहीं।

यहाँ-वहाँ जाने कितनों से पूछा, पर पारसमणि तो कहीं मिली नहीं। क्या इस अद्‌भुत मणि की बात निरी कल्पना है? यदि वास्तव में ऐसी कोई मणि है, तो मुझ अभागे को मिलती क्यों नहीं? तभी किसी ने कहा, ''है, मेरे पास है पारसमणि। तुम्हें चाहिए? क्या करोगे उसका?''

उत्तर दिया : हाँ, चाहिए। इसीलिए न, खोजता फिर रहा हूँ। उसके स्पर्श से लोहे को सोना बनाऊँगा।

उसी ने कहा : शुभ संकल्प है तुम्हारा। मणि तो मैं तुम्हें दे दूँ, पर एक बात बताओ- लोहा है तुम्हारे पास?

मुझे जैसे काठ मार गया। पारस की पहली शर्त लोहा है- यह तो कभी ध्यान ही न आया।

मेरा असमंजस देख वही बोला ''न सही लोहा, लकड़ी, पत्थर,

चमड़ा, पीतल कुछ तो होगा, वही लाओ, मेरे पास बहुत प्रकार की पारसमणियाँ हैं।''

आश्चर्य! क्या पारसमणियों के भी बहुत प्रकार होते हैं? परंतु मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। बिल्कुल खाली हाथ हूँ। हाय, सोना बनाने का कैसा सुयोग हाथ से निकला जा रहा है।

उसी ने धीरज बँधाया : निराश मत हो। जिसके पास कुछ नहीं है, उसके लिए भी पारसमणि है।

सुखद आश्चर्य से भर उठा मैं। मणि लेने के लिए हाथ फैला दिए।

वही बोला : याचना के लिए फैलाए गए हाथ का भाग केवल तिरस्कार है, बंधु!

हाथ बढ़ाओ तो किसी उद्योग के लिए। तुम पारसमणि खोजते फिर रहे हो न, परंतु वह तो तुम्हारे भीतर ही है– स्पर्शमणि। खाली हाथ हो, तो सेवा के स्पर्श से, लोहे–पीतल वाले हो, तो कौशल के स्पर्श से और प्रतिभा वाले हो, तो लगन के स्पर्श से मनचाहा सोना बना सकते हो तुम। स्पर्श तुम्हारा जितना शुद्ध होगा, सोना भी उसी मात्रा में शुद्ध प्राप्त होगा तुम्हें।

मैं धन्य होकर लौटने लगा, तो उसी ने टोका : गुर सिखाया है, इसलिए यह पूछने का अधिकार है मेरा, सोना बनाकर उसका करोगे क्या?

मैं हत्प्रभ रह गया – यह भी कोई प्रश्न हुआ भला!

उसी ने कहा : प्रश्न यह उचित है और आवश्यक भी। सोने में अच्छाई जितनी है, बुराई उससे कम नहीं है। सोना जिसके पास है, उसे मद से मारता है और जिसके पास नहीं है, उसे लोभ से त्रस्त रखता है। शुद्ध सोने का वास शुद्ध व्यक्ति और शुद्ध समाज में ही संभव है।

अभ्यासमाला

(1)

बोध एवं विचार

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) मुन्ना कौन-सा पाठ याद कर रहा था ?

(ख) मुन्ना को बाहर कौन बुला रहा था ?

(ग) मुन्ना की बहन उसके लिए क्या-क्या कार्य किया करती थी ?

(घ) आपकी राय में अंग्रेजी की सूक्ति का मुन्ना और उसकी बहन में से किसने सही-सही अर्थ समझा ?

(ङ) पाठ के अनुसार सात समंदर की भाषा क्या है ?

2. संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) लेखक का ध्यान अपनी किताब से उचट कर मुन्ना की ओर क्यों गया ?

(ख) बिटिया मुन्ना की मेज को क्यों सँवार देती है ?

(ग) लेखक को सारे प्रवचन-अध्ययन बौने क्यों लगे ?

(घ) ''हम वास्तव में तुम्हारे समक्ष श्रद्धानत होना चाहते हैं।''- इस वाक्य में लेखक ने 'वास्तव' शब्द का प्रयोग क्यों किया है ?

(ङ) 'वाणी और व्यवहार में समता आने दो।'-यदि वाणी और व्यवहार एक हो तो इसका परिणाम क्या होगा ? अपना अनुभव व्यक्त करो।

(च) 'पाठ याद हो गया।' मुन्ना का पाठ याद हो जाने पर भी लेखक उससे प्रसन्न नहीं हैं, क्यों ?

(छ) लेखक ने इस निबंध में अंग्रेजी की सूक्ति–'क्लीनलीनेस इज़ नैक्स्ट टु गॉडलीनेस' को आधारबिंदु क्यों बनाया है ?

3. आशय स्पष्ट करो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) आचरण की एक लकीर ने सबको छोटा कर दिया है।

(ख) केवल कंठ से मत बोलो – हम तुम्हारे हृदयों की गूंज सुनना चाहते हैं।

4. सही शब्दों का चयन कर वाक्यों को फिर से लिखो :

(क) लेखक ..... पढ़ रहा था।

(समाचार पत्र, किताब, पत्रिका, चिट्ठी)

(ख) बिटिया ..... नहीं पढ़तीं।

(अंग्रेजी, हिन्दी, असमीया, बंगला)

(ग) ..... आचरण में उतरे बिना विफल मनोरथ है।

(प्रवचन, अध्ययन, व्यवहार, ज्ञान)

(घ) आचरण की एक ..... ने सबको छोटा कर दिया है।

(रेखा, बिंदू, लकीर, इच्छा)

(ङ) प्रवचन और अध्ययन सब ..... हो गए हैं।

(छोटे, नाटे, ऊँचे, बौने)

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका एक वचन और बहुवचन दोनों में एक ही रूप रहता है; किंतु वाक्य में प्रयुक्त क्रियाओं को देखकर वचन निर्णय किए जाते हैं। जैसे–

मुन्ना का **पाठ** याद हो गया।

मुन्ना के **मित्र** बाहर बुला रहे हैं।

ऐसे ही किन्हीं दस शब्दों का चयन करो और दोनों वचनों में वाक्य बनाओ।

2. **निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण करो :**

शुचिता, क्षण, प्रवचन,आचरण, मुद्रण, मस्तिष्क, भाषण, कॉपी।

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिए दो-दो समानार्थी (पर्याय) लिखो :**

किताब, सोना, लाड़, पत्थर, समंदर, आँख।

4. **नीचे दिए गए शब्दों में विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) अलग-थलग हुए हैं। आप इनके उपयुक्त विशेषण-विशेष्य के जोड़े बनाओ :**

विशाल, ऊँची, सड़क, बुटी, सुदीर्घ, प्राणदायी, विष, विध्वंसक, मंदिर, मीनार, तोप, प्राणघातक।

योग्यता-विस्तार

कथनी और करनी में समानता की आवश्यकता पर एक संक्षिप्त निबंध लिखो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

वाणी = बोली, वचन

शुचिता = पवित्रता

बेतरतीब = अव्यवस्थित, बिना क्रम के

करीने से = अच्छी तरह से, ढंग से

घोष = आवाज, ध्वनि

प्रवचन = उपदेशपरक भाषण

समक्ष = सामने, सम्मुख

बौना = छोटा, नाटा

लकीर = रेखा

मस्तिष्क = दिमाग

मनोरथ = मनोकामना

श्रद्धानत = श्रद्धा से नत

(2)

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. किसी ने कहा : ''मेरे पास है पारसमणि'' - इसमें 'किसी' कौन है ?
   (क) कोई राह चलता व्यक्ति (ख) लेखक का विवेक
   (ग) लेखक की बुद्धि (घ) लेखक की कल्पना
2. ''लोहा है तुम्हारे पास ?'' में 'लोहा' से क्या आशय है ?
   (क) उद्यशीलता (ख) लौह धातु
   (ग) भौतिक उपकरण (घ) अनुभव

(आ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

3. लेखक पारसमणि क्यों ढूँढ़ रहा था ?
4. लेखक ने स्पर्शमणि के कौन-कौन से रूप बताए हैं ?
5. 'शुद्ध स्पर्श' से क्या तात्पर्य है ?
6. सोना का होना और न होना दोनों ही समस्या के कारण क्यों हैं ?

(इ) आशय स्पष्ट करो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) याचना के लिए फैलाए हाथ का भाग केवल तिरस्कार है, बंधु !
(ख) शुद्ध सोने का वास शुद्ध व्यक्ति और शुद्ध समाज में ही संभव है।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

नीचे दिए गए वाक्य को पढ़ो :

(क) सोना पाकर उसका करोगे क्या ?
   - सोना पाकर उसका क्या करोगे ?

(ख) सोने के आकांक्षी हो तुम।
   - तुम सोने के आकांक्षी हो।

वाक्य में विशेष अंश पर बल देने के लिए पदों के सामान्य क्रम को बदल दिया जाता है। पाठ में से इसी प्रकार के वाक्य छाँटकर लिखो और उनका सामान्य पदक्रम भी लिखो।

योग्यता-विस्तार

गांधीवादी चिंतक के रूप में विख्यात **रवींद्र केलेकर** का यह लघु निबंध पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो –

गिनी का सोना

शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी का सोना अलग। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है, इसलिए वह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मजबूत भी होता है। औरतें अकसर इसी सोने के गहने बनवा लेती हैं।

फिर भी होता तो वह है गिन्नी का ही सोना।

शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हमलोग उन्हें ''प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट'' कहकर उनका बखान करते हैं।

पर बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब ''प्रैक्टिकल आइडियॉलिस्टों'' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है।

सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।

चंद लोग कहते हैं, गांधी जी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसी लिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

हाँ, पर गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पारसमणि = ऐसी मणि जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाए

निरी = मात्र, सिर्फ

काठ मारना = सुन्न रह जाना, जड़वत हो जाना

हाथ से निकलना = मौका चूक जाना

असमंजस = दुविधा

सुयोग = सुअवसर, अच्छा मौका

याचना = माँगना

प्रतिभा = सृजनशील बुद्धि

गुर सिखाना = रहस्य की बात बताना

हत्प्रभ = भौंचक

मद = नशा, घमंड

त्रस्त = परेशान, दुखी

4

जैनेंद्र कुमार

प्रेमचंदोत्तर कालीन हिंदी कथाकारों में जैनेंद्र कुमार का स्थान प्रमुख है। आपका जन्म 1905 ई. में अलीगढ़ के कोड़ियागंज के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जैन गुरुकुल ऋषि ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तीनापुर में हुई। आपने आगे चलकर स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लिया और जेल यात्रा की। लिखने की प्रेरणा आपको जेल में ही मिली। आपकी लेखन कला से महान कथाकार प्रेमचंद काफी प्रभावित हुए। उन्होंने आपको हिन्दी का गोर्की कहा। आपकी पहली कहानी **खेल** विशाल भारत में प्रकाशित हुई। इससे आपको काफी यश मिला। आपके उपन्यास **परख** पर हिन्दुस्तानी अकादमी ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

जैनेंद्र कुमार मूलत: मनोवैज्ञानिक कथाकार हैं। आप एक विचारक के रूप में भी सामने आते हैं। आपके विचारों पर गांधीवाद की छाप है।

कल्याणी, परख, सुनीता, त्याग पत्र, अनाम स्वामी आदि आपके उपन्यास हैं। **एक रात, स्पर्धा, दो चिड़ियाँ, जैनेंद्र की कहानियाँ** आदि आपके कहानी-संग्रह तथा **समय और हम, परिप्रेक्ष्य, सोच-विचार, जड़ की बात** आदि निबंध संग्रह हैं।

चिड़िया की बच्ची *जैनेंद्र कुमार की एक मनोविश्लेषनात्मक कहानी है। इसमें कहानीकार ने एक धनाढ्य व्यक्ति के विचार तथा एक छोटी चिड़िया की भावनाओं को बड़े मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। सेठ माधवदास चिड़िया को कैद करके अपने पास रखना चाहता है। इसलिए वह तरह-तरह के प्रलोभन देकर उस चिड़िया को अपनी बातों में उलझाए रखता है, पर कोमलप्राण चिड़िया को सेठ की बातें समझ नहीं आतीं। वह तो केवल अपनी माँ को जानती है। अत: अँधेरा होने से पहले अपनी माँ के पास पहुँच जाना चाहती है। वह कोमलप्राण चिड़िया प्रेम की भूखी है। उसके मातृस्नेह के आगे धन का कोई महत्व नहीं है। इसलिए सेठ के नौकर के खुले पंजे में आकर भी वह न आ सकी और उड़ती हुई एक साँस में अपनी माँ के पास पहुँच गयी। यह कहानी बच्चों को सकारात्मक प्रेरणा देती है।*

चिड़िया की बच्ची

माधवदास ने अपनी संगमरमर की नई कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौजों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वह गलीचे पर बैठते हैं और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद-चर्चा करते हैं, नहीं तो उनसे रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुजार देते हैं।

आज कुछ-कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन-छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें जिंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है! पर जी भरकर भी कुछ खाली सा रहता है।

उस दिन संध्या समय उनके देखते-देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आन बैठी। चिड़िया बहुत सुन्दर थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते-होते किनारों पर जरा-जरा

नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार स्याह थे। उसका नन्हा – सा सिर तो बहुत प्यारा लगता था और शरीर पर चित्र–विचित्र चित्रकारी थी। चिड़िया को मानो माधवदास की सत्ता का कुछ पता नहीं था और मानो तनिक देर का आराम भी उसे नहीं चाहिए था। कभी पर हिलाती थी, कभी फुदकती थी। वह खूब खुश मालूम होती थी। अपनी नन्ही सी चोंच से प्यारी–प्यारी आवाज निकल रही थी।

माधवदास को वह चिड़िया बड़ी मनमानी लगी। उसकी स्वच्छंदता बड़ी प्यारी जान पड़ती थी। कुछ देर तक वह उस चिड़िया का इस डाल से उस डाल थिरकना देखते रहे। इस समय वह अपना बहुत–कुछ भूल गए। उन्होंने उस चिड़िया से कहा, 'आओ, तुम बड़ी अच्छी आईं। यह बगीचा तुम लोगों के बिना सूना लगता है। सुनो चिड़िया, तुम खुशी से यह समझो कि यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।'

चिड़िया पहले तो असावधान रही। फिर जानकर कि बात उससे की जा रही है, वह एकाएक तो घबराई। फिर संकोच को जीतकर बोली, 'मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने मैं यहाँ टिक गई थी।'

माधवदास ने कहा, 'हाँ, बगीचा तो मेरा है। यह संगमरमर की कोठी भी मेरी है। लेकिन, इस सबको तुम अपना भी समझ सकती हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम कैसी भोली हो, कैसी प्यारी हो। जाओ नहीं, बैठो। मेरा मन तुमसे बहुत खुश होता है।'

चिड़िया बहुत–कुछ सकुचा गई। उसे बोध हुआ कि यह उससे गलती तो नहीं हुई कि वह यहाँ बैठ गई है। उसका थिरकना रुक गया। भयभीत–सी वह बोली, 'मैं थककर यहाँ बैठ गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माफ करें!'

माधवदास ने कहा, 'मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरी रागनियों का जी बहलेगा। तुम कैसी प्यारी हो, यहाँ ही तुम क्यों न रहो?'

चिड़िया बोली, 'मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने मैं जरा घर से उड़ आई थी, अब साँझ हो गई है और माँ के पास जा रही हूँ। अभी-अभी मैं चली जा रही हूँ। आप सोच न करें।'

माधवदास ने कहा, 'प्यारी चिड़िया, पगली मत बनो। देखो, तुम्हारी चारों तरफ कैसी बहार है। देखो, वह पानी खेल रहा है, उधर गुलाब हँस रहा है। भीतर महल में चलो, जाने क्या-क्या न पाओगी! मेरा दिल वीरान है। वहाँ कब हँसी सुनने को मिलती है? मेरे पास बहुत सा सोना-मोती है। सोने का एक बहुत सुन्दर घर मैं तुम्हें बना दूँगा, मोतियों की झालर उसमे लटकेगी। तुम मुझे खुश रखना। और तुम्हें क्या चाहिए! माँ के पास बताओ क्या है? तुम यहाँ ही सुख से रहो, मेरी भोली गुड़िया।'

चिड़िया इन बातों से बहुत डर गई। वह बोली, 'मैं भटककर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलती नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से उड़ी जा रही हूँ। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं। मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुतेरी सुनहरी धूप बिखरी रहती है। मुझे और क्या करना है? दो दाने माँ ला देती है और जब मैं पर खोलने बाहर जाती हूँ तो माँ मेरी बाट देखती रहती है। मुझे तुम और कुछ मत समझो, मैं अपनी माँ की हूँ।'

माधवदास ने कहा, 'भोली चिड़िया, तुम कहाँ रहती हो? तुम मुझे नहीं जानती हो?'

चिड़िया, 'मैं माँ को जानती हूँ, भाई को जानती हूँ, सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। महामान्य, तुम कौन हो? मैं तुम्हें नहीं जानती।'

माधवदास, 'तुम भोली हो चिड़िया! तुमने मुझे नहीं जाना, तब तुमने कुछ नहीं जाना। मैं ही तो हूँ सेठ माधवदास। मेरे पास क्या नहीं है! जो माँगो, मैं वही दे सकता हूँ।'

चिड़िया, 'पर मेरी तो छोटी-सी जात है। आपके पास सब कुछ है। तब मुझे जाने दीजिए।'

माधवदास, 'चिड़िया, तू निरी अनजान है। मुझे खुश करेगी तो तुझे मालामाल कर सकता हूँ।'

चिड़िया, 'तुम सेठ हो। मैं नहीं जानती, सेठ क्या होता है। पर सेठ कोई बड़ी बात होती होगी। मैं अनसमझ ठहरी। माँ मुझे बहुत प्यार करती है। वह मेरी राह देखती होगी। मैं मालामाल होकर क्या होऊँगी, मैं नहीं जानती। मालामाल किसे कहते हैं? क्या मुझे वह तुम्हारा मालामल होना चाहिए?'

सेठ, 'अरी चिड़िया तुझे बुद्धि नहीं है। तू सोना नहीं जानती, सोना? उसी की जगत को तृष्णा है। वह सोना मेरे पास ढेर का ढेर है। तेरा घर समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनवाऊँगा कि कहीं दुनिया में न होगा, ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक-फुदककर मुझे खुश करियो। तेरा भाग्य खुल जाएगा। तेरे पानी पीने की कटोरी भी सोने की होगी।'

चिड़िया, 'वह सोना क्या चीज होती है?'

सेठ, 'तू क्या जानेगी, तू चिड़िया जो है। सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है। बस, यह जान ले कि सेठ माधवदास तुझसे बात कर रहा है। जिससे मैं बात तक कर लेता हूँ उसकी किस्मत

खुल जाती है। तू अभी जग का हाल नहीं जानती। मेरी कोठियों पर कोठियाँ हैं, बगीचों पर बगीचे हैं। दास-दासियों की संख्या नहीं है। पर तुझसे मेरा चित्त प्रसन्न हुआ है। री चिड़िया! तू इस बात को समझती क्यों नहीं?'

चिड़िया, 'सेठ, मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझती नहीं। पर, मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी।'

सेठ, 'ठहर-ठहर, इस अपने पास के फूल को तूने देखा? यह एक है। ऐसे अनगिनती फूल हैं। ऐसे अनगिनती फूल मेरे बगीचों में हैं। वे भाँति-भाँति के रंग के हैं। तरह-तरह की उनकी खुशबू हैं। चिड़िया, तैंने मेरा चित्त प्रसन्न किया है और वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। वहाँ घोंसले में तेरी माँ है, पर माँ क्या है? इस बहार के सामने तेरी माँ क्या है? वहाँ तेरे घोंसले में कुछ भी तो नहीं है। तू अपने को नहीं देखती? कैसी सुन्दर तेरी गरदन। कैसी रंगीन देह! तू अपने मूल्य को क्यों नहीं देखती? मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा। तैंने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।'

चिड़िया, 'सेठ, मैं अपने को नहीं जानती। इतना जानती हूँ कि माँ मेरी माँ है और मुझे यहाँ देर हो रही है। सेठ, मुझे रात मत करो, रात में अँधेरा बहुत हो जाता है और मैं राह भूल जाऊँगी।'

सेठ ने कहा, 'अच्छा, चिड़िया जाती हो तो जाओ। पर, इस बगीचे को अपना ही समझो। तुम बड़ी सुंदर हो।'

यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज हुई जिसे सुनकर एक दास झटपट भागकर बाहर आया। यह सब छनभर में हो गया और चिड़िया कुछ भी नहीं समझी।

सेठ कहते रहे, 'तुम अभी माँ के पास जाओ। माँ बाट देखती

होगी। पर, कल आओगी न? कल आना, परसों आना, रोज आना।'

यह कहते-कहते दास को सेठ ने इशारा कर दिया और वह चिड़िया को पकड़ने के जतन में चला।

सेठ कहते रहे, 'सच तुम बड़ी सुन्दर लगती हो! तुम्हारी भाई-बहिन हैं? कितने भाई-बहिन हैं?'

चिड़िया, 'दो बहिन, एक भाई। पर मुझे देर हो रही है।'

'हाँ हाँ जाना। अभी तो उजेला है। दो बहन, एक भाई है? बड़ी अच्छी बात है।'

पर चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी हो-हो चारों ओर देखती थी। उसने कहा, 'सेठ मुझे देर हो रही है।'

सेठ ने कहा, 'देर अभी कहाँ? अभी उजेला है, मेरी प्यारी चिड़िया! तुम अपने घर का इतने और हाल सुनाओ। भय मत करो।'

चिड़िया ने कहा, 'सेठ मुझे डर लगता है। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो राह नहीं सूझेगी।'

इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसके देह को छू गया। वह चीख देकर चिचियाई और एकदम उड़ी। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी। तब वह उड़ती हुई एक साँस में माँ के पास गई और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी, 'ओ माँ, ओ माँ!'

माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, 'क्या है मेरी बच्ची, क्या है?' पर, बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई, बोली कुछ नहीं, बस सुबकती रही, 'ओ माँ, ओ माँ!'

बड़ी देर में उसे ढाढ़स बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती में ही चिपककर सोई। जैसे अब पलक न खोलेगी।

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) सेठ माधवदास ने संगमरमर की क्या बनवाई है ?

(1) कोठी (2) मूर्त्ति (3) मंदिर (4) स्मारक

(ख) किसकी डाली पर एक चिड़िया आन बैठी ?

(1) जूही (2) गुलाब (3) बेला (घ) चमेली

(ग) चिड़िया के पंख ऊपर से चमकदार और ..... थे।

(1) सफेद (2) स्याह (3) लाल (4) पीला

(घ) चिड़िया से बात करते-करते सेठ ने एकाएक दबा दिया -

(1) हाथ (2) पाँव (3) बटन (4) हुक्का

2. संक्षिप में उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) सेठ माधवदास की अभिरुचियों के बारे में बताओ।

(ख) शाम के समय सेठ माधवदास क्या-क्या करते हैं ?

(ग) चिड़िया के रंग-रूप के बारे में क्या जानते हो ?

(घ) चिड़िया किस बात से डरी रही थी ?

(ङ) 'तू सोना नहीं जानती, सोना ? उसी की जगत को तृष्णा है।' - आशय स्पष्ट करो।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था ?

(ख) सेठ माधवदास चिड़िया को क्या-क्या प्रलोभन दे रहा था?

(ग) माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है? क्या माधवदास नि:स्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था?

4. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) सेठ माधवदास और चिड़िया के मनोभावों में क्या अंतर हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट करो।

(ख) कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा लगा? अपने विचार लिखो।

(ग) 'माँ मेरी बाट देखती होगी' - नन्ही चिड़िया बार-बार इसी बात को कहती है। अपने अनुभव के आधार पर बताओ कि हमारी जिंदगी में माँ का क्या महत्व है?

(घ) क्या माधवदास के बनाए सोने के पिंजरे में चिड़िया सुख से रह सकती थी? - एक पक्षी के लिए पिंजरा का क्या महत्व है?

5. किसने , किससे और कब कहा?

(क) यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है।

(ख) मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माफ करें।

(ग) सोने का एक बहुत सुन्दर घर मैं तुम्हें बना दूँगा।

(घ) क्या है मेरी बच्ची, क्या है?

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. पाठ में पर शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं -

(क) गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आन बैठी।

(ख) कभी पर हिलाती थी।

(ग) पर बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई।

तीनों 'पर' के प्रयोग तीन उद्देश्यों से हुए हैं। इन वाक्यों का आधार लेकर तुम भी 'पर' का प्रयोग कर ऐसे तीन वाक्य बनाओ, जिनमें अलग-अलग उद्देश्यों के लिए 'पर' के प्रयोग हुए हों।

2. पाठ में **तैंने, छनभर, खुश करियो** – तीन वाक्यांश ऐसे हैं, जो खड़ीबोली हिंदी के वर्तमान रूप में **तूने, क्षणभर, खुश करना** लिखे-बोले जाते हैं। इस तरह के कुछ अन्य शब्दों की खोज करो।

3. मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने। मैं जरा घर से उड़ आयी थी। – इस वाक्य में रेखांकित शब्द कारक के विभक्ति चिह्न (परसर्ग) हैं। ये विभक्ति चिह्न संज्ञा और सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जोड़ते हैं।
पाठ से कुछ अन्य विभक्ति चिह्नों को चुनो और उसके भेद भी बताओ।

योग्यता-विस्तार

1. तुम अनेक रंग के पक्षी देखे होगे। अपने आसपास पाए जाने वाले कुछ पक्षियों के रंगों का अवलोकन करो और अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखो।

2 तुमने गौर किया होगा कि मनुष्य, पशु, पक्षी – इन तीनों में ही माँएँ अपने बच्चों का पूरा-पूरा ध्यान रखती हैं। प्रकृति की इस अद्‌भुत देन का अवलोकन कर अपने शब्दों में लिखो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

संध्या = शाम
प्रफुल्लित = आनंदित
चित्त = मन
स्वप्न = सपना
थिरकना = नाचना
बेखटके = बेहिचक
व्यसन = आदत
तृप्ति = संतुष्टि
स्याह = काले रंग का
तनिक = थोड़ा
पर = पंख
साँझ = शाम
वीरान = खाली, उजाड़
निरी = बिल्कुल
जगत = संसार
तृष्णा = चाह, इच्छा
किस्मत = भाग्य
जतन = प्रयत्न, प्रयास
सुबकना = रोना
ढांढ़स = साहस

5

आप भले तो जग भला

श्रीमन्नारायण

प्रस्तुत पाठ अत्यंत भाव-गंभीर तथा हृदय-स्पर्शी है। इस पाठ में जीवन जीने की एक दृष्टि दी गई है। लेखक ने विभिन्न दृष्टांतों, प्रसंगों और उद्धरणों द्वारा यह बताने का प्रयत्न किया है कि यदि मनुष्य स्वयं भला है तो उसे सारा संसार भला दिखाई देता है। भला होने से आशय है- सदैव दूसरों की अच्छाइयों को देखना, अपने अवगुणों पर भी ध्यान देना और हर परिस्थिति में खुश रहना। अपने निंदक का भी एहसानमंद होना और प्रत्येक व्यक्ति के साथ प्रेम और नम्रतापूर्ण व्यवहार करना।

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हजारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चौंका। उसने जिधर नजर डाली, उधर ही हजारों कुत्ते दिखाई दिए। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखाई पड़े। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका।

सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखाई दिए। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अंत में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखाई दिए। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलाई। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखाई दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो आता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला', 'आप बुरे तो जग बुरा।' अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बरताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, ''आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?''

उन्होंने जरा देर सोचकर उत्तर दिया, ''मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।''

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं। उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है? हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, ''लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।'' दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बंद कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।

इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिन भर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा :

निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै बिचारा।
आपन डुबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर 'निंदक' हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गई। हमारे मित्र तुरंत बिगड़कर बोले, ''देखिए महाशय, यह आपकी सरासर गलती है। आइंदा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।'' बेचारे महाशय जी बड़े दुखी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिए ही उठकर चले गए। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकांत में कहा, ''देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?''

उनकी आँखों में आँसू छलछला आए। बड़े प्रेम से बोले, ''जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आए तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।''

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और संतोष हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, ''सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रय में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।''

पृथ्वीसिंह जरा चौंककर बोले, ''आपका क्या मतलब बापूजी?''

''भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।''

''मैं समझ गया, बापूजी!''– पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ करने की जरूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था। बापू कड़ी–से–कड़ी आलोचना कर सकते थे और करते भी है, पर हँसकर मीठी चुटकियाँ लेकर, अपना प्रेम दरसाकर।''

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है। उन्हें गाएँ पालने का शौक था। इसलिए गाएँ और नन्हे बछड़े मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार जोर की बारिश आने वाली थी। सभी गाएँ तो झोंपड़ी के अंदर चली गईं, पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आए पर ज्यों–ज्यों उन्होंने जोर से खींचना शुरू किया त्यों–त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढ़ी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे झोंपड़ी की तरफ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अंदर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार–कुशल अवश्य थी और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं तो फिर मनुष्य होकर क्यों नहीं समझेंगे?

कल हमारे मित्र का रसोइया बिना खबर दिए ही चला गया। बेचारा करता भी क्या! सुबह से शाम तक उसके महाशय की डाँट खानी पड़ती थी। ''तूने आज दाल बिलकुल बिगाड़ दी। उसमें नमक बहुत डाल दिया।'' ''अरे बेवकूफ तूने साग में नमक ही नहीं डाला।'' ''यह जली रोटी कौन खाएगा रे!'' आदि की झड़ी लगी रहती थी।

जब कोई चीज जरा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डाँटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर कभी तारीफ के दो शब्द न बोले जाते। ''वाह! तारीफ कर देने से उसका दिमाग चढ़ जाएगा।'' मेरे मित्र कह देते। ठीक है! है तो वह भी आदमी ही। उसके भी दिल है। बेचारा कुछ रुपए का नौकर यंत्र नहीं बन सकता। तंग आकर भाग जाने के सिवा और क्या चारा था?

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती– न मित्रों से, न ऑफिस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

उस पर भी मजा यह है कि वे अपनी जिंदगी और विचारों से पूरी तरह संतुष्ट हैं। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श हैं। दूसरे लोग जो उनका सम्मान नहीं करते, मूर्ख हैं। ग्रीस के महान संत सुकरात ने एक बात बड़े पते की कही थी, ''जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।''

अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे?

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. एक काँच के महल में कितने कुत्ते घुसे थे ?
   (क) एक (ख) दो
   (ग) एक हजार (घ) कई हजार
2. काँच का महल किसका प्रतीक है ?
   (क) संसार (ख) अजायब घर
   (ग) चिड़ियाघर (घ) सपनों का महल
3. ''निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै विचारा।
   आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।''
   – प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता कौन हैं ?
   (क) कबीर दास (ख) रैदास
   (ग) बिहारीलाल (घ) दादू
4. आदमी भूखा रहता है–
   (क) धन का (ख) जन का
   (ग) प्रेम का (घ) मान का
5. गांधीजी ने अहिंसा की तुलना सीमेंट से क्यों की है ?
   (क) अहिंसा से मनुष्य एक साथ रहता है।
   (ख) अहिंसा किसी को अलग नहीं होने देती।
   (ग) अहिंसा सीमेंट की तरह एक-दूसरे को जोड़ कर रखती है।
   (घ) अहिंसा में सीमेंट जैसी ताकत है।

(आ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में):

1. दो कुत्तों की घटना का वर्णन करके लेखक क्या सीख देना चाहते हैं ?
2. लेखक ने संसार की तुलना काँच के महल से क्यों की है ?
3. अब्राहम लिंकन की सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या था ?
4. लेखक ने गांधी और सरदार पृथ्वीसिंह के उदाहरण क्या स्पष्ट करने के लिए दिए हैं ?
5. रसोइया ने बिना खबर दिए लेखक के मित्र की नौकरी क्यों छोड़ दी ?
6. ''अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें।''- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

(इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. अपने मित्र को परेशान देखकर लेखक को किस किस्से का स्मरण हो आता है ?
2. दुखड़ा रोते रहने वाले व्यक्ति का दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना क्यों बेहतर है ?
3. 'प्रेम और सहानुभूति से किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है।' — यह स्पष्ट करने के लिए लेखक ने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं ?
4. लेखक ने अपने मित्र की किन गलतियों का वर्णन किया है ?
5. इस पाठ का आधार पर बताओ कि 'हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।'

(ई) आशय स्पष्ट करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाए एक सेर जहर के।

(ख) लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।

(ग) जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करो :

नज़र, ज़ोर, हज़ार, नाराज़, ज़रूर, ज़रा, ज़िंदगी, तारीफ़, ऑफ़िस, सफ़ाई, फैशन, फ़न।

उपर्युक्त शब्दों में 'ज़' और 'फ़' अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी से आए तत्सम शब्दों की ध्वनियाँ हैं। इन्हें संघर्षी ध्वनि कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण करते समय हवा घर्षण के साथ निकलती है, जबकि 'ज' और 'फ' ध्वनि के उच्चारण में हवा रुकती है।

निम्नलिखित शब्दों में अंतर समझते हुए उच्चारण करो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो-

जरा (बुढ़ापा)	ज़रा (थोड़ा-सा)
राज (राज्य)	राज़ (रहस्य)
तेज (चमक)	तेज़ (फुर्तीला)
फन (साँप का फण)	फ़न (कला)

नोट : *आजकल इन शब्दों में '**नुक्ता**' का प्रयोग बहुत कम हो रहा है।*

2. निम्नलिखित गद्यांश का पाठ करते समय इसका ध्यान रखो कि तिरछी रेखाएँ क्षणभर ठहराव का संकेत देती हैं। इसी के अनुसार इसे पढ़ो।

महात्मा गांधी ने/ पृथ्वीसिंह से कहा/ ''सरदार साहब, /अगर आप सेवाग्राम में आकर /मेरे आश्रम में रह सकें / तभी मैं समझूँगा कि /आपने अहिंसा का पाठ /सचमुच सीख लिया है।''

पृथ्वीसिंह जरा चौकर बोले, /''आपका क्या मतलब बापूजी?''/भाई, / मेरा आश्रय तो/एक प्रयोगशाला जैसा ही है/जिन लोगों की कहीं नहीं बनती,/अक्सर वे मेरे पास/आ जाते हैं। उन सबको एक साथ रखने में/मैं सीमेंट का काम करता हूँ/और वह सीमेंट/मेरी अहिंसा ही है।''

3. निम्नलिखित विलोम शब्दों के अर्थ का अंतर स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग करो :

ध्वनि – प्रतिध्वनि　　हिंसा – अहिंसा

क्रिया – प्रतिक्रिया　　फल – प्रतिफल

4. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करो :

(क) जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो आता है। (वचन बदलो)

(ख) दुखी होने का कोई कारण नहीं। (प्रश्नवाचक बनाओ)

(ग) रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। (विस्मयादिबोधक बनाओ)

(घ) वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार-कुशल अवश्य थी। (लिंग बदलो)

(ङ) है तो वह भी आदमी ही। (सामान्य वाक्य बनाओ)

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो :

आग बबूला होना, नुक्ताचीनी करना, टूट पड़ना, चुटकियाँ लेना, कोई चारा न होना

योग्यता-विस्तार

1. ''निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥''
कबीर की इन पंक्तियों और पाठ में उल्लिखित दादू की पंक्तियों की तुलना करो।

2. कबीर, रहीम और वृंद के उन नीतिपरक दोहों का संकलन करो जिनमें मीठा बोलने, परनिंदा न करने, प्रेम और विनम्रतापूर्ण व्यवहार करने की बातें कही गई हैं।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

काँच = शीशा

प्रतिध्वनि = टकराकर लौटी हुई ध्वनि

गश खाना = बेहोश होना, मूर्छित होना

मिसाल = उदाहरण

बरताव = व्यवहार

ऐब = दोष, बुराई

नुक्ताचीनी = दोष निकालना, आलोचना

शहतीर = लकड़ी का लंबा लट्ठा

अमल = आचरण, व्यवहार

टीका-टिप्पणी = आलोचना

आग बबूला होना = बहुत गुस्सा करना, गुस्से से लाल होना

सरासर = पूरी तरह

आइंदा = भविष्य में, आगे

सेवाग्राम = वर्धा में स्थित गांधी जी का आश्रम

सीमेंट का काम करना = जोड़ने और मिलाने का काम करना

मीठी चुटकियाँ लेना = हँसी-हँसी में व्यंग्य करना।

ग्रीस = यूनान देश।

सुकरात = प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक।

निंदक बाबा वीर हमारा,
बिनही कौड़ी बहै विचारा।
आपन डूबे और को तारे,
ऐसा प्रीतम पार उतारे॥ = निंदा करनेवाला मनुष्य बड़ा वीर है। जो अपने विचारों को बिना कोई कीमत लिए प्रकट करता है। ऐसा करने में भले ही वह स्वयं डूब जाता है, अर्थात् दूसरों की बुराई करने का दोष अपने ऊपर ले लेता है, परंतु दूसरों को उनकी बुराई का ज्ञान करा देता है। ऐसा व्यक्ति प्रिय है क्योंकि वह सबका कल्याण करता है।

6

बेढब बनारसी

हिन्दी साहित्य में 'हँसोड़ परम्परा के जीवंत प्रतीक' बेढब बनारसीजी जाने-माने हास्य-व्यंग्य साहित्यकार हैं। इनका असली नाम कृष्णदेव प्रसाद गौड़ है। इनका जन्म 11 नवम्बर 1895 को वाराणसी में हुआ था तथा मृत्यु 6 मई 1968 को हुई थी। बनारसी जी का अधिकांश समय अध्यापन कार्यों में बीता था। इन्होंने सरकारी व्यवस्था से लेकर सामाजिक परम्पराओं तथा व्यवसायों तक पर तीखे व्यंग्यवाण चलाए हैं। उनकी रचनाओं की भाषाशैली सरल, सहज तथा मुहावरेदार है जो पाठक के मन पर विशेष प्रभाव डालती है।

बनारसी जी ने अनेक कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास तथा निबन्ध आदि की रचनाएँ की हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने नागरी प्रचारिणी पत्रिका, आँधी, प्रसाद, खुदा की राह पर, तरंग आदि पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। **बेढब की बहक, काव्य कमल, बिजली, बेढब की वाणी, नया जमाना** आदि बनारसी जी की काव्य रचनाएँ हैं। उनकी कहानियों में **बनारसी एक्का, मसूरीवाला, गाँधी का भूत, टनाटन, धन्यवाद** आदि प्रमुख हैं। **लेफ्टिनेंट पिगसन की डायरी** उनका चर्चित उपन्यास है। **हुक्कापानी, उपहार, गालिब की कविता, रूहे सुखून** आदि निबन्ध है।

बनारसीजी की भाषा अत्यंत सरल एवं सहज है। अरबी एवं अंग्रेजी के शब्दों तथा मुहावरों के प्रयोग से पाठ की रोचकता अधिक बढ़ गयी है।

चिकित्सा का चक्कर *पाठ में बनारसी जी ने अपने देश में प्रचलित लगभग सभी प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों से चिकित्सा करने वाले चिकित्सकों, वैद्य-हकीमों तथा ओझाओं पर अच्छा-खासा व्यंग्य किया है। इसके अतिरिक्त लेखक के मित्रों एवं सगे-संबंधियों के सलाह-नुस्खों के साथ-साथ चिकित्सकों एवं वैद्य-हकीमों के हाव-भाव तथा पोशाकों पर भी कटाक्ष किया है।*

लेखक के बीमार पड़ने पर उनके मित्र, पड़ोसी एवं सगे-संबंधी उन्हें देखने आते हैं। जो आता है कोई न कोई नुस्खा अपने साथ ले आता है, पर लेखक को आराम महसूस नहीं होता है। डॉक्टर, वैद्य, हकीम, ओझा सभी बुलाये जाते हैं। बीमारी से छुटकारा पाने के लिए तरह-तरह के इलाज शुरू होते हैं। कोई साधारण तो कोई गंभीर बीमारी बताकर लेखक की परेशानी को और बढ़ा देता है। कोई चुड़ैल अथवा ऊपरी हवा का प्रकोप बताकर ऊटपटांग टोटके करने की सलाह देता है तो कोई पाइरिया बताकर लेखक के सारे दाँत तुड़वा (उखड़वा) देने की सलाह देता है। इलाज के चक्कर में लेखक अत्यंत दुर्बल हो जाते हैं। सैकड़ों रुपये खर्च करने पर भी उनकी बीमारी दूर नहीं होती है। अंत में अपनी पत्नी की सलाह पर लेखक निश्चिंत होकर ढंग से खाना खाने लगते हैं और पंद्रह दिनों में पूरी तरह तंदुरुस्त हो जाते हैं।

चिकित्सा का चक्कर

मैं बिल्कुल हट्टा-कट्टा आदमी हूँ। देखने में मुझे कोई भला आदमी रोगी नहीं कह सकता। मेरी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है। आज तक कभी बीमार नहीं पड़ा। लोगों को बीमार देखता था, तो मुझे बड़ी इच्छा होती थी कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता तो अच्छा होता। यह तो न था कि मेरे बीमार होने पर भी दिन में दो बार बुलेटिन निकलते, पर इतना अवश्य था कि मेरे बीमार पड़ने पर हंटले बिस्कुट - जिन्हें साधारण अवस्था में घरवाले खाने नहीं देते, दवा की बात और है - खाने को मिलते। यू.डी.क्लोन की शीशियाँ सिर पर कोमल करों से बीबी उड़ेलकर मलती और सबसे बड़ी इच्छा तो यह थी कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारण करके पूछते, कहिए, बेढबजी, कैसी तबीयत है ? किसकी दवा हो रही है ? कुछ फायदा है ? जब कोई इस प्रकार से रोनी सूरत बनाकर ऐसे प्रश्न करता, तब मुझे बड़ा मजा आता और उस समय मैं आनंद की सीमा के उस पार पहुँच जाता।

हाँ, तो एक दिन मैं हॉकी खेलकर आया। कपड़े उतारे, स्नान किया। शाम को ही भोजन कर लेने की मेरी आदत है, पर आज मैच में रिफ्रेशमेण्ट जरा ज्यादा खा गया था, इसलिए भूख न थी। श्रीमती जी ने खाने को पूछा। मैंने कह दिया कि आज स्कूल में मिठाई खाकर आया हूँ, कुछ विशेष भूख नहीं है। उन्होंने कहा, ''विशेष न सही साधारण सही। मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो

अच्छा था। संभव है, मेरे आने में देर हो।'' मैंने फिर इनकार नहीं किया, उस दिन थोड़ा ही खाया। बारह पूरियाँ थीं और वही रोज वाली आध पाव मलाई। खा चुकने के बाद पता चला कि 'प्रसाद' जी के यहाँ से बाग बाजार का रसगुल्ला आया है। रस तो होगा ही। कल तक संभव है, कुछ खट्टा हो जाए। छह रसगुल्ले निगल कर मैंने चारपाई पर धरना दिया। रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।

एकाएक तीन बजे रात को नींद खुली। नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में मालूम पड़ता था, कोई बड़ी-बड़ी सूइयाँ लेकर कोंच रहा है। परन्तु मुझे भय नहीं मालूम हुआ, क्योंकि ऐसे ही समय के लिए औषधियों का राजा, रोगों का रामबाण, अमृतधारा की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। मैंने तुरन्त उसकी कुछ बूँदें पान कीं। दोबारा दवा पी। तिबारा। ''पीत्वा-पीत्वा पुनः पीत्वा'' की सार्थकता उसी समय मुझे मालूम हुई। प्रातःकाल होते-होते शीशी समाप्त हो गई। दर्द में किसी प्रकार कमी न हुई। प्रातःकाल एक डाक्टर के यहाँ आदमी भेजना पड़ा।

डाक्टर साहब सरकारी अस्पताल के थे। वे एक इक्के पर तशरीफ लाए। सूट तो वे ऐसा पहने हुए थे कि मालूम पड़ता था, प्रिंस ऑफ वेल्स के बैलेटों में हैं। ऐसे सूटवाले का इक्के पर आना वैसा ही मालूम हुआ, जैसा लीडरों का मोटर छोड़कर पैदल चलना। मैं अपना पूरा हाल भी न कहने पाया था कि आप बोले, 'जुबान दिखलाइए'। प्रेमियों को जो मजा प्रेमिकाओं की आँख देखने में आता है, शायद वैसा ही डाक्टरों को मरीजों की जीभ देखने में आता है। डाक्टर महोदय मुस्कुराए। बोले, 'घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए, दो खुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही

गायब हो जाएगा, जैसे हिन्दुस्तान से सोना गायब हो रहा है।' मैं तो दर्द से बेचैन था। डाक्टर साहब साहित्य का मजा लूट रहे थे। चलते चलते बोले, 'अभी अस्पताल खुला न होगा, नहीं तो आपको दवा मँगानी न पड़ती। खैर, चंद्रकला फार्मेसी से दवा मँगवा लीजिएगा। वहाँ दवाइयाँ ताजी मिलती हैं। बोतल में पानी गरम करके सेंकिएगा।' दवा पी गई। गरम बोतलों से सेंक भी आरंभ हुई। सेंकते-सेंकते छाले पड़ गए, पर दर्द में कमी न हुई।

दोपहर हुआ, शाम हुई, पर दर्द ने मुझसे ऐसा प्रेम दिखलाया कि हटने का नाम दूर। लोग देखने के लिए आने लगे। मेरे घर पर मेला लगने लगा। ऐसे-ऐसे लोग आए कि कहाँ तक लिखूँ। हाँ, एक विशेषता थी, जो आता एक-न-एक नुस्खा अपने साथ लेता आता था। किसी ने कहा, अजी कुछ नहीं, हींग पिला दो। किसी ने कहा, चूना खिला दो। खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज बाकी नहीं रह गई, जिसे लोगों ने न बताई हो।

तीन दिन बीत गए, दर्द में कमी न हुई। लोग आते मुझे देखने के लिए, पर चर्चा छिड़ती थी, ''प्रसाद जी का अमुक नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसा है? राय कृष्णदास हफ्ते में नौ बार दाढ़ी क्यों बनाते हैं?'' मुझे भी कुछ बोलना ही पड़ता था। ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी हो।

आखिर में लोगों ने कहा कि तुम कब तक इस तरह पड़े रहोगे, किसी दूसरे की दवा करो। लोगों की सलाह से डाक्टर चूहानाथ कातरजी को बुलाने की सलाह हुई। आप लोग डाक्टर साहब का नाम सुनकर हँसेंगे, पर यह मेरा दोष नहीं है, उनके मा-बाप का दोष है। यदि उनका नाम रखना होता तो अवश्य ही कोई साहित्यिक नाम रखता। वे थे यथा नाम तथा गुण। आपकी फीस आठ रुपए थी और मोटर का एक रुपया अलग। आप लंदन के एफ.आर.सी.एस. थे।

कुछ लोगों का सौंदर्य रात में बढ़ जाता है, वैसे ही डाक्टरों की फीस रात में बढ़ जाती है। खैर, डाक्टर साहब बुलाए गए। आते ही हमारे हाल पर रहम किया और बोले, ''मिनटों में दर्द गायब हुआ जाता है, थोड़ा पानी गरम कराइए, तब तक यह दवा मँगवाइए।'' एक पुर्जे पर आपने दवा लिखी, पानी गरम हुआ। दो रुपये की दवा आई। डाक्टर बाबू ने तुरंत एक छोटी-सी पिचकारी निकाली, उसमें एक लंबी सूई लगाई, पिचकारी में दवा भरी और मेरे पेट में वह सूई कोंचकर दबा डाली।

डाक्टर साहब कुछ कहकर और मुझे सांत्वना देकर चले गए। उसके बाद मुझे नींद आ गई और मैं सो गया। मेरी नींद कब खुली, कह नहीं सकता, पर दर्द में कमी हो चली थी और दूसरे दिन प्रात:काल पीड़ा रफूचक्कर हो गई थी।

कोई दो सप्ताह मुझे पूरा स्वस्थ होने में लगे। बराबर डाक्टर चूहानाथ कातरजी की दवा पीता रहा। अठारह आने की शीशी प्रतिदिन आती रही। दवा के स्वाद का क्या कहना। शायद मुर्दे के मुख में डाल दी जाए तो तिलमिला उठे। पंद्रह दिन के बाद मैं डाक्टर साहब के घर गया उन्हें धन्यवाद देने के लिए। मैंने पूछा कि अब तो दवा पीने की कोई आवश्यकता न होगी। वे बोले, ''यह तो आपकी इच्छा पर है। पर यदि आप काफी एहतियात न करेंगे तो आपको 'अपेंडिसाइटीज' हो जाएगा। आपकी श्रीमतीजी बड़ी भाग्यवती हैं। अगर छह घंटे की देर और हो जाती तो उन्हें जिंदगी-भर रोना पड़ता। वह तो कहिए कि आपने मुझे बुला लिया। अभी कुछ दिनों दवा पीजिए।''

इसी बीच में डाक्टर महोदय ने ऐसे-ऐसे मर्जों के नाम सुनाए कि मेरी तबीयत फड़क उठी। भला मुझे ऐसे मर्ज हुए, जिनका नाम साधारण क्या बड़े पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते। मालूम नहीं, ये मर्ज

सब डाक्टरों को मालूम हैं कि केवल हमारे कातरजी को ही मालूम हैं। खैर, मैंने दवा जारी रखी।

अभी एक सप्ताह भी पूरा न हुआ था कि दो बजे दिन को एकाएक सिर दर्द रूपी फौज ने मेरे शरीर रूपी किले पर हमला कर दिया। डाक्टर साहब ने जिन-जिन भयंकर मर्जों का नाम लिया था, उनका स्वरूप मेरी रोती हुई आँखों के सामने नृत्य करने लगा। मैं सोचने लगा कि हुआ हमला उन्हीं में से किसी एक मर्ज का। तुरंत डाक्टर साहब के यहाँ आदमी दौड़ाया गया कि इंजेक्शन का सामान लेकर चलिए। वहाँ से आदमी बिना माँगी पत्रिका की भाँति लौटकर आया कि डाक्टर साहब कहीं गए हैं। इधर मेरी हालत क्या थी, उसका वर्णन यदि सरस्वती शार्टहैण्ड से भी लिखें तो संभवत: समाप्त न हो। हवाई जहाज के पंखे की तेजी के समान तो करवटें बदल रहा था, इधर मित्रों और घरवालों की कांफ्रेंस हो रही थी कि अब कौन बुलाया जाए, पर नि:शस्त्रीकरण सम्मेलन की भाँति कोई न किसी की बात मानता था, न कोई निश्चय ही हो पाता था।

मालूम नहीं, लोगों में क्या-क्या बहसें हुईं, कौन-कौन प्रस्ताव फेल हुए, कौन-कौन पास। अंत में हमारे मकान के बगल में रहने वाले पंडितजी की विजय हुई और आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञरंजन, चिकित्सा-मार्तंड, कविराज पंडित सुखदेव शास्त्री को बुलाने की बात तय हुई। एक सज्जन उन्हें बुलाने के लिए भेजे गए। कोई पैंतालीस मिनट बीत गए, परंतु न वैद्यजी आए, न भेजे गए सज्जन का ही पता चला। एक ओर दर्द आयकर की तरह बढ़ता जा रहा था, दूसरी ओर इन लोगों का भी पता नहीं। और भी बेचैनी बढ़ी, अन्त में जो साहब गए थे, लौटे। वे बोले, ''वैद्यजी ने बड़े गौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी बुध के संक्रांति वृत्त में शनि की स्थिरता है, इकतीस पल नौ विपल में शनि

बाहर हो जाएगा और डेढ़ घटी एकादशी का योग है। उसके समाप्त होने पर मैं चलूँगा। सुनकर मेरा कलेजा कबाब हो गया। मगर वे कह आए थे, अतएव बुलाना भी आवश्यक था। मैंने फिर उन्हें भेजा।

कोई आधे घंटे बाद वैद्यजी एक पालकी पर तशरीफ लाए। आकर आप मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गए। आप धोती पहने हुए थे और कंधे पर एक सफेद दुपट्टी डाले हुए थे। इसके अतिरिक्त शरीर पर सूत के नाम पर जनेऊ था, जिसका रंग देखकर यह शंका होती थी कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्यजी ने कुछ न पूछा। पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले, ''वायु का प्रकोप है, यकृत से वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत में जा पहुँची है। इससे मंदाग्नि का प्रादुर्भाव होता है और किसी कारण जब भोज्य पदार्थ प्रतिहत होता है, तब शूल का कारण होता है।''

कविराज जी मालूम नहीं क्या बक रहे थे और मेरी तबीयत दर्द और क्रोध के एक दूसरे ही संसार में छटपटा रही थी। आखिर मुझसे न रहा गया। मैंने एक सज्जन से कहा, जरा आलमारी में से 'आप्टे' का कोश तो लेते आइए। यह सुनकर लोग चकराए। कुछ लोगों को संदेह हुआ कि अब मैं होश में नहीं हूँ। मैंने कहा दवा तो पीछे होगी, मैं पहले समझ तो लूँ कि मुझे रोग क्या है। तत्पश्चात वैद्यजी, 'चरक', 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे। और अंत में कहा, देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी आपको लाभ होगा। पंडितजी ने दवा दी। कहा कि अदरख के रस में इस औषधि का सेवन करना होगा। खैर साहब, फीस दी गई। किसी प्रकार वैद्यजी से पिण्ड छूटा। दो दिन दवा की गई। कभी-कभी तो कम अवश्य हो जाता था, पर पूरा दर्द न गया। सी.आई.डी. के समान पीछा छोड़ता ही न था।

चारपाई पर पड़ा रहने लगा। दिन को मित्रों की मंडली आती थी। वह आराम देती थी कम, दिमाग चाटती थी अधिक। एक सज्जन मुझे देखने के लिए तशरीफ लाए थे। बोले, ''साहब, आप लोगों को देश का हर समय ध्यान रखना चाहिए। आप किसी भारतीय हकीम अथवा वैद्य को दिखलाइए।'' मैंने मन में सोचा कि वैद्य महाराज को तो मैंने दिखा ही लिया, हकीम भी सही।

हकीम साहब आए। यद्यपि मैं अपनी बीमारी का जिक्र और अपनी बेबसी का हाल लिखना चाहता हूँ, पर हकीम साहब की पोशाक और उनके रहन-सहन तथा फैशन का जिक्र न करना मुझसे न हो सकेगा। सर्दी बहुत तेज नहीं थी। बनारस में बहुत तेज सर्दी नहीं पड़ती। फिर भी ऊनी कपड़ा पहनने का समय आ गया था। परन्तु हकीम साहब चिकन का बंददार कुरता पहने हुए थे। सिर पर बनारसी लोटे की तरह टोपी रखी हुई थी। पाँव में पाजामा ऐसा मालूम होता था कि चूड़ीदार पाजामा बनने वाला था, परन्तु दर्जी ईमानदार था, उसने कपड़ा चुराया नहीं, सबका सब लगा दिया अथवा यह भी हो सकता है कि ढीली मोहरी के लिए कपड़ा दिया गया हो, दर्जी ने कुछ कतर-व्योंत की हो और चुस्ती दिखाई हो। जूता कामदार दिल्ली वाला था। हकीम साहब पतले-दुबले इतने थे कि मालूम पड़ता था, अपनी तंदुरुस्ती अपने मरीजों को बाँट दी है। हकीम साहब में नजाकत भी बला की थी। रहते थे बनारस में, मगर कान काटते थे लखनऊ के।

आते ही मैंने सलाम किया, जिसका उत्तर उन्होंने मुस्कुराते हुए बड़े अंदाज से दिया और बोले, ''मिजाज कैसा है ?''

मैंने कहा, ''मर रहा हूँ। बस, आपका ही इंतजार था। अब यह जिन्दगी आपके ही हाथों में है।''

हकीम साहब ने कहा, ''यार! आप तो ऐसी बात करते हैं, गोया

जिंदगी से बेजार हो गए हैं। भला ऐसी गुफ्तगू भी कोई करता है। मरे आपके दुश्मन, नब्ज तो दिखाइए। खुदाबंदकरीम ने चाहा तो आनन-फानन में दर्द रफूचक्कर होगा।''

मैंने कहा, ''अब आपकी दुआ है। आपका नाम बनारस ही नहीं, हिंदुस्तान में लुकमान की तरह मशहूर है, इसीलिए आपको तकलीफ दी गई है।''

दस मिनट तक हकीम ने नब्ज देखी। फिर बोले, ''मैं नुस्खा लिखे देता हूँ। इसे इस वक्त आप पीजिए, इंशा अल्लाह जरूर शिफा होगी।''

हकीम साहब चलने को तैयार हुए। उठे। उठते-उठते बोले, ''जरा एक बात का ख्याल रखिएगा कि आजकल दवाइयाँ लोग बहुत पुरानी रखते हैं। मेरे यहाँ ताजी दवाइयाँ मिलती हैं।''

दर्द फिर कम हो चला। परन्तु दुर्बलता बढ़ चली थी। कभी-कभी दर्द का दौरा भी अधिक वेग से हो जाता था। घरवालों को और मुझे भी दर्द के संबंध में विशेष चिंता होने लगी। कोई कहता था कि लखनऊ जाओ, कोई एक्स-रे का नाम लेता था। किसी-किसी ने राय दी कि जल-चिकित्सा कीजिए। एक सज्जन ने कहा, यह सब कुछ नहीं, आप होमियोपैथी इलाज शुरू कीजिए। देखिए, कितनी शीघ्रता से लाभ होता है। बोले, ''साहब, इन नन्हीं-नन्हीं गोलियों में मालूम नहीं कहाँ का जादू है। साहब, जादू का काम करती हैं, जादू का।''

एक प्रकृति-चिकित्सा वाले ने कहा था कि आप गीली मिट्टी पेट पर लेपकर धूप में बैठिए। एक हफ्ते में दर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डाक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा, ''देखिए साहब, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। समझदार हैं।'' मैं बीच में बोल उठा, ''समझदार न होता तो आपको कैसे यहाँ बुलाता।''

इसी बीच मेरी नानी की मौसी मुझे देखते आई। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोली, ''मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।'' मैंने पूछा, ''यह ऊपरी खेल क्या है नानी जी?'' बोलीं, ''बेटा, सब कुछ किताब में ही थोड़े लिखा रहता है। बात यह है कि किसी चुड़ैल का फसाद है।'' मेरी स्त्री और माता की ओर देख कहने लगीं, ''देखो न इसकी बरौनी कैसी खड़ी है। कोई चुड़ैल लगी है। किसी को दिखा देना चाहिए।'' मैंने कहा, ''डाक्टर तो मेरी जान के पीछे लग गए हैं। क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर है?'' जब सब लोग चले गए तब मेरी पत्नी ने कहा, ''तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है?'' मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी प्रकार की आशा क्या करता? पर बीच-बीच दवा भी होती जाती थी।

कुछ लाभ अवश्य हुआ, पर पूरा फायदा न हुआ। मैंने अब पक्का इरादा कर लिया कि लखनऊ जाऊँ। जो बात काशी में नहीं हो सकती, लखनऊ में हो सकती है। वहाँ सभी साधन हैं।

सब तैयारी हो चुकी थी कि इतने में एक और डाक्टर को एक मेहरबान लिवा लाए। उन्होंने देखा, ''जरा मुँह तो देखूँ।'' मैंने कहा, ''मुँह जीभ जो चाहे देखिए।'' देखकर बड़े जोर से हँसे। मैं घबराया, ऐसी हँसी केवल कवि-सम्मेलन में बेढंगी कविता के समय सुनाई देती है। मैं चकित भी हुआ। डाक्टर, बोले, ''किसी डाक्टर को यह सूझी नहीं, तुम्हें 'पाइरिया' है। उसी का जहर पेट में जा रहा है और सब फसाद पैदा कर रहा है।'' मैंने कहा, ''तब क्या करूँ?'' डाक्टर साहब ने कहा, ''इसमें करना क्या है? किसी दंत-चिकित्सक के यहाँ जाकर दाँत निकलवा दीजिए।'' मैंने अपने मन में कहा, आपको यह तो कहने में कुछ कठिनाई ही नहीं हुई। गोया दाँत निकलवाने में कोई

तकलीफ ही नहीं होती। खैर, रात भर मैंने सोचा? मैंने भी यही निश्चय किया कि यही डाक्टर ठीक कहते हैं। दंत-चिकित्सक के यहाँ से पुछवाया। उसने कहलाया कि तीन रुपये फी दाँत तुड़वाने के लिए लगेंगे। कुल दाँतों के लिए छियानबे रुपये लगेंगे। मगर मैं आपके लिए छह रुपये छोड़ दूँगा। इसके अतिरिक्त दाँत बनवाई डेढ़ सौ अलग। यह सुनकर पेट का दर्द के साथ सिर में भी चक्कर आने लगा। मगर मैं न सोचा कि जान सलामत है तो सब कुछ। इतना और खर्च करो। श्रीमती से मैंने रुपये माँगे। उन्होंने पूछा, ''क्या होगा?'' मैंने सारा हाल कह दिया। वे बोलीं, ''तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गई है? आज कोई कहता है दाँत उखड़वा डालो, कल कोई कहेगा, सारे बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डाक्टर कहेगा, नाक नुचवा डालो, आँखें निकलवा दो। यह सब फिजूल है। खाना ठिकाने से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे।'' मैंने कहा, ''तुम्हें अपनी दवा करनी थी तो इतने रुपये क्यों बरबाद कराए?''

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) लेखक बीमार पड़ने पर कौन-सा बिस्कुट खाना चाहता है ?

(1) ब्रिटेनिया (2) पारलेजी

(3) गुडडे (4) हंटले

(ख) कहानी में औषधियों का राजा और रोगों का रामबाण किसे बताया गया है ?

(1) गीली मिट्टी (2) गर्म पानी

(3) अमृत धारा (4) मलाई

(ग) वैद्यजी लेखक को देखने किस सवारी से आए थे ?

(1) मोटर से (2) रिक्शा से

(3) पालकी में (4) घोड़े पर

(घ) गीली मिट्टी पेट पर लेप कर धूप में बैठने की सलाह लेखक को किसने दी ?

(1) वैद्य जी ने (2) डॉ. चूहानाथ कातरजी ने

(3) हकीम साहब ने (4) प्रकृति चिकित्सक ने

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) लेखक की आयु कितनी है ?

(ख) बाग बाजार का रसगुल्ला किसके यहाँ से आया था ?

(ग) सरकारी डॉक्टर ने लेखक को किस फार्मेसी से दवा मंगाने की सलाह दी ?

(घ) डॉक्टर चूहानाथ कातरजी की फीस कितनी थी ?

(ङ) लेखक को ओझा से दिखाने की सलाह किसने दी ?

3. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) लेखक बीमार कैसे पड़ा ?

(ख) पेट में दर्द होने पर लेखक ने कैसी दवा ली ?

(ग) अपने देश में चिकित्सा की कौन-कौन-सी पद्धतियाँ प्रचलित हैं ?

(घ) डॉ. चूहानाथ कातर जी ने लेखक का इलाज कैसे किया ?

(ङ) वैद्य जी ने लेखक को दर्द का क्या कारण बताया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) लेखक ने वैद्यजी और हकीम साहब की पोशाकों के बारे में कैसा व्यंग्य किया ?

(ख) चिकित्सकों के अलावा लेखक ने और किन लोगों पर कटाक्ष किया है ?

(ग) 'दो खुराक पीते-पीते दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे हिंदुस्तान से सोना गायब हो रहा है।' - भाव स्पष्ट करो।

(घ) 'चिकित्सा का चक्कर' पाठ का कौन-सा प्रसंग तुम्हें सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

(ङ) 'रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।' - यह हास्य-व्यंग्य के प्रसंग प्रसाद जी के यहाँ से आये बाग बाजार के रसगुल्ले के संबंध में है, जिनमें से छह बड़े-बड़े रसगुल्ले लेखक ने खाना खा चुकने के बाद खाये थे। इसी तरह पाठ से पाँच हास्य-व्यंग्य के प्रसंग छाँटकर लिखो।

5. किसने, किससे और कब कहा ?

(क) अभी अस्पताल खुला न होगा, नहीं हो आपको दवा मँगानी न पड़ती।

(ख) यार ! आप तो ऐसी बात करते हैं, गोया जिंदगी से बेजार हो गए हैं।

(ग) मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।

(घ) तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गयी है ?

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नांकित संज्ञाओं के स्त्रीलिंग रूप लिखो :**

   डॉक्टर, कवि, विद्वान, आचार्य, पंडित, श्रीमान्, ससुर, नाना, मौसा, भाग्यवान

2. **निम्नांकित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो :**

   दिमाग चाटना, कतर-व्योंत करना, पिण्ड छुड़ाना, रफूचक्कर होना, कान काटना, हवा हो जाना, करवटें बदलना

3. वैद्य जी ने कुछ न पूछा। पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले 'वायु का प्रकोप है, यकृत से वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आँत में जा पहुँचा है।

   - इन पँक्तियों में रेखांकित शब्द किसी न किसी कारक की विभक्तियों को सूचित करते हैं। इस तरह कारक के आठ भेदों के अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कारक के सभी विभक्तियों का प्रयोग करते हुए आठ वाक्य लिखो।

4. 'ईमानदार', 'कामदार' जैसे शब्दों के अंत में 'दार' प्रत्यय लगे हैं। 'दार' प्रत्यय लगाकर अन्य पाँच शब्द लिखो।

5. पाठ में आये अरबी-फारसी भाषा के किन्हीं दस शब्दों को छाँटकर उनका हिन्दी में अर्थ लिखो।

योग्यता-विस्तार

1. इस पाठ में लेखक ने डॉक्टर, वैद्य और हकीम की वेशभूषा का वर्णन किया है। यह मानकर कि ओझा नजर उतारने के लिए आया है, उसके रूप-स्वरूप और वेशभूषा का वर्णन करो।

2. पद्मसिंह शर्मा का 'मुझे मेरे मित्रों से बचाओ' तथा हरिशंकर परसाई का 'कचहरी जाने वाला जानवर' नामक हास्य रचना पढ़ो।

3. 'चिकित्सा का चक्कर' नामक हास्य लेख को नाटक रूप में लिखिए और अपने सहपाठियों की मदद से कक्षा में उसका अभिनय करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

बुलेटिन = विज्ञप्ति, समाचार प्रसारित होना
रिफ्रेशमेंट = जलपान, अल्पाहार
सूक्ष्म = महीन
स्थूल = मोटा, बड़ा
रामबाण = तुरंत असर करने वाला
इक्का = घोड़ा गाड़ी, तांगा
एहतियात = सावधानी, संयम
अपेंडिसाइटीज = एक प्रकार की बीमारी
मर्ज = रोग
निःशस्त्रीकरण = हथियारबंदी, हथियारों पर प्रतिबंध लगाना
मंदाग्नि = पाचन शक्ति कमजोर हो जाना
शूल = दर्द
कामदार = कसीदाकारी किया हुआ
नजाकत = नाजुक होने का भाव, कोमलता
नब्ज = नाड़ी
नुस्खा = चिकित्सक द्वारा दी गयी दवा और सलाह की पर्ची
शिफा = फायदा, आराम, तन्दुरुस्ती
लुकमान = एक प्रसिद्ध हकीम
ओझा = तांत्रिक, नजर उतारने वाला
पाइरिया = दाँत की एक बीमारी

7

शिवानी

शिवानी का जन्म 17 अक्टूबर 1923 को विजया दशमी के दिन राजकोट (गुजरात) में हुआ था। इनका पूरा नाम गौरापंत शिवानी है, पर साहित्य जगत में ये शिवानी नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके पिता अश्विनी कुमार पाण्डेय राजकुमार कॉलेज के प्राचार्य फिर माणबदर और रामपुर रियासत के दीवान भी रहे। इनके माता-पिता संगीतप्रेमी तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे। पितामह हरिराम पाण्डेय संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। शिवानी की किशोरावस्था शांति निकेतन में बीता था। पर पति की असामयिक मृत्यु के पश्चात वे लखनऊ में रहने लगी। कुछ समय के लिए शिवानीजी अमेरिका में बसे अपने पुत्र के परिवार के बीच रहीं। उनका अंतिम समय दिल्ली में बीता, जहाँ 21 मार्च 2003 को वे परलोक सिधारीं।

शिवानीजी एक सशक्त लेखिका थी। उन्होंने कई उपन्यास, कहानियाँ, बाल उपन्यास तथा संस्मरण आदि लिखीं। उनकी पहली रचना 'नटखट' में प्रकाशित हुई थी। 'मैं मुर्गा हूँ' पहली बार 1951 में 'धर्मयुग' पत्रिका में छपी थी। '**सुनहु तात**' (कहानी), '**सोने दे**' (आत्मवृत्तात्मक आख्यान) तथा '**अतिथि**' (उपन्यास) उनकी बहुचर्चित रचनाओं में से हैं। लखनऊ से प्रकाशित 'स्वतंत्र भारत' का चर्चित स्तम्भ 'वातायन' की वे नियमित लेखिका थीं। साहित्य सेवा के लिए शिवाजी को भारत सरकार ने 1979 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया था।

≈ ***अपराजिता*** *शीर्षक कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम एक ऐसी महिला के जीवन पर आलोकपात किया गया है जो जीवन की विषम परिस्थितियों का सामना करती हुई अपराजिता बनी रही। शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण डॉ. चन्द्रा को सामान्य लोगों की तरह काम-काज करने में असुविधा होती थी। परन्तु उनके मन में असीम धैर्य और सुदृढ़ इच्छाशक्ति थी। उन्होंने जीवन में आनेवाली सभी बाधाओं और विकट परिस्थितियों का डटकर मुकाबला किया और उन पर विजय प्राप्त कर ली। विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा ने महत्वपूर्ण अवदान दिया। निरंतर साधना के बल पर वे प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच गईं। डॉ. चन्द्रा की जीवन गाथा केवल शारीरिक अक्षम लोगों के लिए ही प्रेरणा-स्रोत नहीं है, बल्कि उन सभी लोगों के लिए प्रेरणाप्रद है जो अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही निराश होकर मार्ग में आनेवाली बाधाओं के समक्ष पराजय स्वीकार कर लेते हैं।*

अपराजिता

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही व्हील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिए के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे-धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूर मंजिल की शरण गही है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

''मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकती है?''

''मैडम आप कह रही थी कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकता है?''

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर

पर टूट पड़ा है। और इधर लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन के नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

''मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर से उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किन्तु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए, डॉ. चंद्रा और उनकी अद्‌भुत साहसी जननी श्रीमती सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली

माइक्रोबायोलॉजी में। अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा भारतीय हैं। जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवनभर केवल गरदन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।''

सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरूद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।''

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र में बैठ गई थी। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास-रूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिंता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुरसी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर-पीरियड उसके पीछे खड़ी रहती। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एस.सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम.एस.सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानिया से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा।

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने में उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने कढ़ाई-बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री

के साथ मुस्कराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

''मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।'' किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।''

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ पर उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं- 'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगों, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्‌भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।''

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. हम अपनी विपत्ति के लिए हमेशा दोषी ठहराते हैं -
   (क) परिवार वालों को (ख) अपने आप को
   (ग) विधाता को (घ) अपने दुश्मन को
2. लेखिका से मुलाकात के समय डॉ. चन्द्रा किस संस्थान के साथ जुड़ी हुई थी।
   (क) भारतीय विज्ञान संस्थान, मुंबई (ख) आई.आई.टी., मद्रास
   (ग) आई.आई.टी., खड़गपुर (घ) भारतीय आयुर्वेद संस्थान, दिल्ली
3. अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई'- लेखिका कार से उतरती डॉ. चन्द्रा को आश्चर्य से देखती ही रह गई क्योंकि-
   (क) लेखिका को वह कुछ जानी-पहचानी-सी लग रही थी।
   (ख) डॉ. चन्द्रा बहुत ही प्रसिद्ध महिला थी और लेखिका ने अखबार में उसकी तस्वीर देखी थी।
   (ग) शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद डॉ. बिना किसी के सहारे कार से उतरकर व्हील चेयर में बैठी और कोठी के अन्दर चली गई।
   (घ) अपने नयी पड़ोसिन के प्रति उसके मन में स्वाभाविक कौतूहल जन्मी थी।
4. 'मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी'- डॉ. चन्द्रा ने नई कार की नक्शा बनायी थी क्योंकि-
   (क) उस समय वे कुछ नया आविष्कार करना चाहती थीं जिससे उन्हें विज्ञान जगत में प्रतिष्ठा मिले।

(ख) डॉ. चन्द्रा चाहती थीं कि कोई उसे सामान्य-सा सहारा भी न दे और इसलिए वे ऐसी कार बनाना चाहती थीं जिसे वे स्वयं चला सकतीं।

(ग) उन्होंने सोचा था कि उस नयी कार चलाने पर उनके पैर धीरे-धीरे ठीक हो जाएँगे।

(घ) उनकी कार माँ को चलानी पड़ती थी और वे माँ को कष्ट देना नहीं चाहती थीं।

5. डॉ. चन्द्रा के एलबम के अंतिम पृष्ठ पर एक चित्र था, जिसमें -

(का) वह डॉक्टरेट की उपाधि ले रही थी।

(ख) उनकी माँ जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त 'वीर जननी' पुरस्कार ग्रहण कर रही थी।

(ग) उनके परिवार को सभी सदस्य थे।

(घ) वह राष्ट्रपति से 'गर्ल गाइड' का पुरस्कार ले रही थी।

(आ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. हमें कब अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है ?
2. डॉ. चन्द्रा के अध्ययन का विषय क्या था ?
3. लेखिका से डॉ. चन्द्रा ने हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेंटर में क्या पूछने का अनुरोध किया था ?
4. डॉ. चन्द्रा की स्कूली शिक्षा कहाँ तक हुई थी ?
5. डॉ. चन्द्रा ने किस संस्थान से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की थी ?

(इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. लेखिना ने जब डॉ. चन्द्रा को पहली बार कार से उतरते देखा तो उनके मन में कैसा भाव उत्पन्न हुआ था ? अपने शब्दों में लिखो
2. लेखिका यह क्यों चाहती है कि 'लखनऊ का वह मेधावी युवक' डॉ. चन्द्रा के संबंध में लिखी उनकी पंक्तियों को पढ़े ?
3. 'अभिशप्त काया' कहकर लेखिका डॉ. चन्द्रा की कौन-सी विशेषता स्पष्ट करना चाहती है ?
4. डॉ. चन्द्रा की कविताएँ पढ़कर लेखिका की आँखें क्यों भर आईं ?
5. शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा की उपलब्धियों का उल्लेख करो।

6. विज्ञान के अतिरिक्त और किन-किन विषयों में डॉ. चन्द्रा की रुचि थी ?
7. डॉ. चन्द्रा की माता कहाँ तक 'वीर जननी पुरस्कार' की हकदार है ? - अपना विचार स्पष्ट करो।
8. 'चिकित्सा ने जो खोया है वह विज्ञान ने पाया'- यह किसने और क्यों कहा था ?

(ई). आशय स्पष्ट करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ख) ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. हिन्दी में अंग्रेजी की स्वर ध्वनि 'ऑ' का आगम हुआ। यद्यपि इसका उच्चारण हिन्दी की ध्वनि 'औ' की भाँति होता है परंतु वास्तव में यह 'ऑ' है 'औ' नहीं। इसमें मुख को थोड़ा गोलाकार करना पड़ता है।
   जैसे - काल (समय), कॉल (बुलावा), कौल (शपथ)। तीनों के उच्चारण और अर्थ में अंतर दिखाई देता है।
   निम्नलिखित शब्दों को बोलकर पढ़ो :
   डॉक्टर, कॉलेज, बॉल, कॉन्वेंट, ऑफ

2. पाठ में कुछ ऐसे शब्द आए हैं जिनका अर्थ एक से नहीं, अनेक शब्दों से अर्थात् वाक्यांश से स्पष्ट हो सकता है।
   जैसे - 'जिजीविषा' अर्थात् जिसमें जीने की इच्छा हो।
   निम्नलिखित शब्दों के अर्थ वाक्यांश में दो :
   अभिशप्त, आभामंडित, सुदीर्घ, निष्प्राण, सहिष्णु

योग्यता-विस्तार

1. 'अपराजिता' शीर्षक पाठ में शारीरिक अक्षमता के बावजूद डॉ. चन्द्रा किस प्रकार एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में उभरने में सफल हुई इसके बारे में हम पढ़ चुके। ऐसे ही एक और व्यक्ति हैं डॉ. स्टीफेन हॉकिंग जिन्होंने डॉ. चन्द्रा की तरह ही विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके बारे में पढ़ो और संक्षेप में लिखकर कक्षा में सुनाओ।

2. शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार के प्रयास की जानकारी हासिल करो। अपने इलाके में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों की सहायता के लिए काम करनेवाली सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के बारे में भी जानने का प्रयास करो।

3. 'शारीरिक अक्षमता प्रतिभा विकास के बाधक तत्व नहीं है'।

   – इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

विलक्षण = विशेष प्रकार के, अद्‌भुत
काया = शरीर
रिक्तता = खालीपन
अंतर्यामी = मन की बातें जाननेवाला, भगवान
अकस्मात् = अचानक
विधाता = ईश्वर
अभिशप्त = अभिशाप से ग्रस्त
नतमस्तक = सिर झुकाकर
प्रौढ़ा = अधेड़ उम्र की महिला
आवागमन = आने-जाने का कार्य
नियति = भाग्य
आघात = चोट

बित्ते भर की = छोटी कद की
देवांगना = देवलोक में रहनेवाली महिला, देवी, अप्सरा
मेधावी = बुद्धिमान
प्रयास = कोशिश
विछिन्न = अलग
नूर मंजिल = लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल
उत्फुल्ल = प्रसन्न
विषाद = दु:ख, उदासी
उत्कट = तीव्र, प्रबल
जिजीविषा = जीने की इच्छा
माइक्रोबायोलॉजी = विज्ञान की एक शाखा जिसमें सूक्ष्म जीवों का अध्ययन किया जाता है
कंठगत = गले में अटके हुए
पक्षाघात = लकवा मारने का रोग
पटुता = निपुणता
सर्वांग = सारे अंग, पूरा शरीर
यातनाप्रद = कष्ट देने वाला
कंठ अवरुद्ध होना = गला रुँधना, भावातिरेक के कारण बोल न पाना
उपचार = इलाज
ऑर्थोपैडिक = हड्डियों से संबंधित
निष्ठा = दृढ़ता, निश्चयतापूर्वक
जिरह-बख्तर = कवच
क्षत-विक्षत = बुरी तरह घायल
आभामंडित = तेज से भरा हुआ
रंचमात्र = जरा भी
व्यथा = दु:ख, कष्ट
उल्लास = खुशी, उमंग

8

मणि-कांचन संयोग

डॉ. अच्युत शर्मा

वैष्णव-गुरु श्रीमंत शंकरदेव और शाक्त माधवदेव का महामिलन असम के सांस्कृतिक इतिहास की कदाचित् सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। इस अतुल्य घटना से एक ओर दोनों महान विभूतियों के जीवन और कर्म प्रभावित हुए तो दूसरी ओर इसके परिणामस्वरूप असम-भूमि का सांस्कृतिक जीवन व्यापक रूप से संजीवित हो उठा। प्रस्तुत लेख में इस महामिलन की पृष्ठभूमि में घटित घटनाओं का सजीव एवं रोचक वर्णन किया गया है। श्री माधवदेव की मातृ-भक्ति, बलि-विधान की असारता, पूर्ण समर्पण पर पर आधारित भक्ति की महत्ता, गुरु-शिष्या का पवित्र संबंध जैसी बातें इस लेख में मूर्त हो उठी हैं।

महाबाहु ब्रह्मपुत्र की गोद में बसा विश्व का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है माजुलि। इसी में स्थित है धुवाहाता-बेलगुरि नामक वह पवित्र स्थान, जहाँ एकशरण भागवती वैष्णव धर्म के प्रवर्तक श्रीमंत शंकरदेव (ई. 1449-1568) और परम शाक्त माधवदेव (ई. 1489-1596) का महामिलन हुआ था। यह महामिलन मध्ययुगीन असम की ही नहीं, अपितु असम-भूमि के संपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास की संभवत:

सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। उन दिनों संत शंकरदेव शक्ति की उपासना, तंत्र-मंत्र, बलि-विधान एवं अनेकानेक कठोर धार्मिक बाह्याचारों से जकड़े हुए असमीया समाज को मुक्ति का नया पथ दिखाने तथा उसे आध्यात्मिक उन्नति के सरलतम मार्ग पर ले चलने के महान प्रयास में जुटे हुए थे। ऐसी स्थिति में योग्य गुरु शंकर को योग्य शिष्य माधव मिल गए।

शंकर-माधव का मिलन पावन असम-भूमि के लिए सोने में सुगंध-जैसा साबित हुआ। इस मिलन से भारतवर्ष के इस पूर्वोत्तरी भू-खंड में भागवती वैष्णव-धर्म अथवा एकशरण नाम-धर्म के प्रचार-प्रचार-कार्य में एक अद्‌भुत गति आ गई थी। शंकर-माधव के सम्मिलित प्रयास से इस पावन कार्य में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोत्तरी होने लगी थी। सांसारिक जीवन में शंकर-माधव मामा-भांजे थे, पर इस महामिलन के उपरांत दोनों गुरु-शिष्य के पवित्र बंधन में बंध गए थे। इसका साक्षी बना था ब्रह्मा का वरद पुत्र ब्रह्मपुत्र नद। महाशक्ति का आगार ब्रह्मपुत्र अपनी गोद में मामा-भांजे को गुरु-शिष्य बनते देखकर अत्यंत हर्षित हो उठा था। उसने इस महामिलन के उमंग-रस को बंगाल की खाड़ी से होकर हिंद महासागर तक पहुँचाने के लिए अपनी लोहित जल-धारा को आदेश दिया था।

असमीया साहित्य के समर्थ हस्ताक्षर रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने शंकर-माधव के महामिलन को 'मणि-कांचन संयोग' की आख्या से अभिहित किया है। इस महामिलन की भूमिका के रूप में घटित घटनाएँ बड़ी ही रोचक हैं।

श्रीमंत शंकरदेव की चचेरी बहन मनोरमा और बहनोई गोविन्द गिरि अथवा दीघल-पुरीया गिरि के सुयोग्य पुत्र थे माधवदेव। अपनी सारी पैत्रिक संपत्ति कोचबिहार की पश्चिमी सीमा पर स्थित बांडुका में बसे

बड़े भाई दामोदर को सौंपकर माधवदेव जब भांडारीडुबि या टेंबुवानि की ओर वापस आ रहे थे तो उनको खबर मिली कि उनकी माँ सख्त बीमार हैं। भांडारीडुबि में बहन उर्वशी और बहनोई रामदास के पास रहनेवाली अपनी विधवा माँ के स्वास्थ्य को लेकर माधवदेव अत्यंत चिंतित हो उठे। उन्होंने तुरंत मनौती मानी 'हे देवी गोसानी! तुम्हें सफेद बकरों का एक जोड़ा भेंट करूँगा। माँ को शीघ्र स्वस्थ कर दो।'

माधवदेव जब बहनोई रामदास के घर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि देवी गोसानी की कृपा से उनकी माँ स्वस्थ होने लगी थीं। यह देखकर माधवदेव की जान में जान आई। उन्होंने मन ही मन देवी माता को प्रणाम करके उनके प्रति अकृत्रिम कृतज्ञता प्रकट की। थोड़ी ही दिनों में माँ पूरी तरह स्वस्थ हो उठीं तो माधवदेव ने मनौती के अनुसार सफेद बकरों का एक जोड़ा खरीद कर रखने के लिए बहनोई रामदास से अनुरोध किया। इसके लिए आवश्यक धन देकर माधवदेव व्यापार के लिए निकल पड़े।

व्यापार से वापस आकर माधवदेव ने बहनोई रामदास से बकरों की बात पूछी तो रामदास ने उत्तर दिया- 'मोल-भाव करके बकरों को मालिक के पास ही रख छोड़ा है।' देवी-पूजा के दिन एकदम निकट आ गए तो माधवदेव ने बकरों को ले आने का प्रस्ताव रखा। तब बहनोई रामदास ने उत्तर दिया- 'बकरे लाकर क्या करोगे? इस लोक में बकरा काटनेवाले को उस लोक में बकरे के हाथों कटना पड़ता है।' क्रोधित होकर माधवदेव ने बकरे न खरीदने का कारण पूछा तो रामदास ने पुनः कहा- 'बलि चढ़ाना विनाशकारी कार्य है। उससे किसकी प्राप्ति होगी? दूसरी जीव की हत्या बेकार ही तुम क्यों करोगे?'

गुरु शंकरदेव से मिली ज्ञान-ज्योति के बल पर रामदास ने माधवदेव को बहुत समझाया, पर उन बातों से माधवदेव जरा भी प्रभावित नहीं

हुए, बल्कि उनका ज्ञान-दंभ जाग उठा। बड़ी दृढ़ता से वे बहनोई साहब से बोले- 'अब तक मैंने कितने ही धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है। तुम्हारी कही हुई बातें तो कहीं नहीं मिली हैं। सबमें बलि-विधान का ही निर्देश है। तुम्हें किस शास्त्र में ऐसी बातें मिली हैं'-जरा मुझे भी तो बताओ।'

माधवदेव के ज्ञान-दंभ से रामदास थोड़ा आहत हुए, पर अप्रसन्नता व्यक्त किए बिना ही बोले - 'तुम और हम क्यों ऐसे ही शास्त्रार्थ करें? भोजन के बाद चलो उनके पास ही चलें, जिनसे हमने ये बातें सुनी हैं। उनके सामने तुम बोल भी न पाओगे। वे एक ही बात से तुम्हें निरुत्तर कर देंगे।' माधवदेव का ज्ञान-दंभ इतना बढ़ रहा था कि फौरन चलने को तैयार हुए और बोले - 'चलो, उनके पास ही चलें, शास्त्रार्थ में मुझे कैसे निरुत्तर करते हैं, वह तो देखें।' उस समय सूरज डूबने को हो रहा था, अत: अगले दिन सबेरे ही चलने की बात तय हुई।

अगले दिन भोर में ही रामदास और माधवदेव धुवाहाता-बेलगुरि सत्र में श्रीमंत शंकरदेव के पास पहुँचे। आंगन में विराजमान शंकरदेव को प्रणाम करने के पश्चात् दोनों एक ओर बैठ गए। रामदास ने बकरों की बलि वाले प्रसंग को शंकर गुरु से यह भी कहा- 'माधवदेव आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आया है।' यह सुनकर शंकर गुरु मुस्कराए और रामदास से माधवदेव का विस्तृत परिचय पूछा। रामदास ने कहा- 'यह दीघल-पुरीया गिरि का पुत्र माधव है।'

माधवदेव का परिचय पाकर शंकरदेव बड़े ही प्रसन्न हुए। अपना भांजा इतना बड़ा और गुणी-ज्ञानी बन गया है, यह जानकर उनका हृदय पुलकित हो उठा। उन्होंने अपने योग्य भांजे की शास्त्रार्थ-प्यास बुझानी चाही। दोनों में शास्त्रार्थ होने लगा। शंकरदेव निवृत्ति-मार्ग के पक्ष में और माधवदेव प्रवृत्ति-मार्ग के पक्ष में विविध शास्त्रों से प्रमाण प्रस्तुत करते

रहे। शास्त्रार्थ चलता रहा, सूर्य ढलने लगा, पर शास्त्रार्थ समाप्त नहीं हुआ। कोई भी कम नहीं थे। अंत में श्रीमंत शंकरदेव ने 'भागवत' के निम्नोक्त श्लोक को उद्धृत किया तो माधवदेव निरुत्तर हो गए –

'यथा तरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यन्ति तत्स्कंधभुजोपशाखाः।
प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां तथैव सर्वार्च्चनमच्युतेभ्यः॥' (4/39/24)

यानी, जिस प्रकार वृक्ष के मूल को सींचने से टहनियाँ, पत्ते, फूल, फल सब संजीवित होते हैं अथवा अन्न-ग्रहण के जरिए प्राण का पोषण करने से मानव-शरीर की सारी इंद्रियाँ तृप्त होती हैं, उसी प्रकार परब्रह्म कृष्ण की उपासना करने से सारे देवी-देवता अपने-आप संतुष्ट हो जाते हैं।

ज्ञानी माधवदेव ने ध्यानपूर्वक इस पुण्य-श्लोक को सुना, इस पर चिंतन-मनन किया, फिर निष्कर्ष पर पहुँचे कि शंकरदेव का मत ही पूर्णतः तर्क-सम्मत एवं सत्य है। उनका ज्ञान-दंभ पूर्णतः दूर हुआ। वे भलीभाँति समझ गए कि परब्रह्म कृष्ण ही एक मात्र आराध्य देव हैं – **'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्'** उनकी शरण में ही जीवों का कल्याण निहित है। कृष्ण-संबंधी ज्ञान-भक्ति के दाता श्रीमंत शंकरदेव को गुरु मानकर माधवदेव ने तुरंत गद्‌गद् चित्त से प्रणाम किया। अब शंकरदेव अत्यधिक आनंद के साथ भागवत के पूर्वोक्त श्लोक का अर्थ विस्तारपूर्वक बताने लगे। उनकी अमृतोपम वाणी सुनकर माधवदेव आह्लादित हो उठे।

दूसरे ही दिन प्रभात बेला में माधवदेव ने विधिपूर्वक शंकरदेव को गुरु मानकर कृष्ण के चरणों में शरण ले ली। शंकरदेव ने माधवदेव को शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया और आनंदमग्न होकर वे बोल उठे- 'तुम्हें पाकर आज मैं पूरा हुआ।' सचमुच आगे चलकर शंकरदेव और माधवदेव एक-दूसरे के पूरक बने।

शंकर-माधव के मिलनोपरांत एकशरण नाम-धर्म का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ़ता गया और कृष्ण-भक्ति की धाराएँ जन-मन को भिगोती हुई चारों दिशाओं में बहने लगीं। माधवदेव ने कृष्ण-भक्ति, गुरु-भक्ति और एकशरण नाम-धर्म के प्रचार-प्रसार-कार्य में अपने को पूरी तरह समर्पित कर दिया। अत: माधवदेव शंकर गुरु के प्रिय शिष्य ही नहीं रहे, अपितु 'माधव-बांधव' बन गए। इसीलिए श्रीमंत शंकरदेव ने अपने पुत्र रामानंद और हरिचरण के बदले पूर्ण योग्यता के आधार पर माधवदेव को धर्म-गुरु मनोनीत किया। 1568 ई. के भाद्र महीने में शंकर गुरु के तिरोभाव के पश्चात् माधवदेव ने धर्म-गुरु का गुरु-भार संभाला। आपने 1596 ई. के भाद्र महीने में अपने तिरोभाव के समय तक इस दायित्व को कुशलतापूर्वक निबाहा।

अत: हम कह सकते हैं कि पवित्र स्थान धुवाहाता-बेलगुरि में हुए दोनों महापुरुषों के महामिलन ने असम के सांस्कृतिक इतिहास में एक सुनहरे अध्याय का श्रीगणेश कर दिया था। भक्ति-धर्म के प्रचार-कार्य में श्री माधवदेव का सहयोग पाने के पश्चात् श्रीमंत शंकरदेव अधिक उन्मुक्त भाव से साहित्य-सृष्टि, संगीत-रचना आदि के जरिए असमीया भाषा-साहित्य-संस्कृति को परिपुष्ट बनाने में सक्षम हुए। उन्होंने 'कीर्तन-घोषा', 'गुणमाला', 'भक्ति-प्रदीप', 'हरिश्चंद्र उपाख्यान', 'रुक्मिणी-हरण काव्य', 'बलिछलन', 'कुरुक्षेत्र' आदि काव्य-रचनाएँ की हैं। आपने 'पत्नीप्रसाद', 'कालियदमन', 'केलिगोपाल', 'रुक्मिणी-हरण', 'पारिजात-हरण' और 'रामविजय' नामक छह अंकीया नाट भी रचे हैं। कहा जाता है कि उन्होंने बारह कोड़ी 'बरगीत' भी रचे थे, जिनमें से लगभग पैंतीस बरगीत ही आज उपलब्ध हैं।

इसी प्रकार योग्य गुरु से असीम प्रेरणा पाने के कारण श्रीश्री माधवदेव भी अपनी अनमोल देन से असमीया समाज को हमेशा के लिए गौरव के अधिकारी बनाने के काम में सफल प्रमाणित हुए।

आपकी काव्य-रचनाओं में 'नामघोषा', 'जन्मरहस्य', 'राजसूय', 'भक्ति रत्नावली' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपने 'चोर-धरा', 'पिंपरा-गुचोवा', 'भोजन-बिहार', 'भूमि-लेटोवा', 'दधि-मंथन' आदि नाटक भी रचे हैं। गुरु की आज्ञा से आपने नौ कोड़ी ग्यारह बरगीत भी रचे, जिनमें से लगभग एक सौ इक्यासी बरगीत आज उपलब्ध हैं।

असमीया जाति शंकरगुरु और माधवगुरु दोनों की आभा से उद्‌भाषित है। जिस प्रकार धरती के लिए सूर्य और चाँद की किरणों का अपना-अपना महत्व है, उसी प्रकार महान असमीया समाज के लिए शंकर-भास्कर और माधव-मृगांक की प्रतिभाएँ अपने-अपने ढंग से कल्पतरु के समान कल्याणकारी हैं। उत्तर भारतीय समाज में 'रामचरितमानस' का आदर जितना है, असमीया समाज में 'कीर्तनघोषा-नामघोषा' का भी आदर उतना ही है।

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. धुवाहाता-बेलगुरि नामक पवित्र स्थान कहाँ स्थित है ?
   (क) बरपेटा में (ख) माजुलि में
   (ग) पाटबाउसी में (घ) कोचबिहार में
2. शंकरदेव के साथ शास्त्रार्थ से पहले माधवदेव थे -
   (क) शाक्त (ख) शैव (ग) वैष्णव (घ) सूर्योपासक
3. सांसारिक जीवन में शंकरदेव और माधवदेव का कैसा संबंध था ?
   (क) चाचा-भीतजे (ख) भाई-भाई का
   (ग) मामा-भांजे का (घ) मित्र-मित्र का

4. शंकरदेव के मुँह से किस ग्रंथ का श्लोक सुनकर माधवदेव निरुत्तर हो गए थे ?

(क) 'गीता' का (ख) 'रामायण' का

(ग) 'महाभारत' का (घ) 'भागवत' का

2. किसने किससे कहा, बताओ :

(क) 'माँ को शीघ्र स्वस्थ कर दो।'

(ख) 'बलि चढ़ाना विनाशकारी कार्य है।'

(ग) 'अब तक मैंने कितने ही धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है।'

(घ) 'वे एक ही बात से तुम्हें निरुत्तर कर देंगे।'

(ङ) 'यह दीघल-पुरीया गिरि का पुत्र माधव है।'

3. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) विश्व का सबसे बड़ा नदी-द्वीप माजुलि कहाँ बसा हुआ है ?

(ख) श्रीमंत शंकरदेव का जीवन-काल किस ई. से किस ई. तक व्याप्त है ?

(ग) शंकर-माधव का मिलना असम-भूमि के लिए कैसा साबित हुआ ?

(घ) महाशक्ति का आगार ब्रह्मपुत्र क्या देखकर अत्यंत हर्षित हो उठा था ?

(ङ) माधवदेव को शिष्य के रूप में स्वीकार कर लेने के बाद शंकरदेव क्या बोले ?

(च) किस घटना से असम के सांस्कृतिक इतिहास में एक सुनहरे अध्याय का श्रीगणेश हुआ था ?

4. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) ब्रह्मपुत्र नद किस प्रकार शंकरदेव-माधवदेव के महामिलन का साक्षी बना था ?

(ख) धुवाहाटा-बेलगुरि सत्र में रहते समय श्रीमंत शंकरदेव किस महान प्रयास में जुटे हुए थे ?

(ग) माधवदेव ने कब और क्या मनौती मानी थी ?

(घ) 'इसके लिए आवश्यक धन देकर माधवदेव व्यापार के लिए निकल पड़े।' – प्रस्तुत पंक्ति का संदर्भ स्पष्ट करो।

(ङ) 'माधवदेव आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आया है।' – किसने किससे और किस परिस्थिति में ऐसा कहा था ?

5. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) शंकर–माधव के महामिलन के संदर्भ में 'मणि–कांचन संयोग' आख्या की सार्थकता स्पष्ट करो।

(ख) बहनोई रामदास के घर पहुँचने पर माधवदेव ने क्या पाया और उन्होंने क्या किया ?

(ग) रामदास ने बलि–विधान के विरोध में माधवदेव से क्या–क्या कहा ?

(घ) शास्त्रार्थ के दौरान शंकरदेव द्वारा उद्धृत 'भागवत' के श्लोक का अर्थ सरल हिन्दी में प्रस्तुत करो।

(ङ) शंकरदेव की साहित्यिक देन के बारे में बताओ।

(च) माधवदेव की साहित्यिक देन को स्पष्ट करो।

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) माधवदेव की माँ की बीमारी के प्रसंग को सरल हिन्दी में वर्णित करो।

(ख) बलि हेतु बकरे खरीदने को लेकर रामदास और माधवदेव के बीच हुई बातचीत को अपने शब्दों में प्रस्तुत करो।

(ग) रामदास और माधवदेव गुरु शंकरदेव के पास कब और क्यों गए थे ?

(घ) शंकरदेव और माधवदेव के बीच किस बात पर शास्त्रार्थ हुआ था ? उसका क्या परिणाम निकला ?

(ङ) शंकर–माधव के महामिलन के शुभ परिणाम किन रूपों में निकले ?

7. **प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभ 100 शब्दों में) :**

(क) 'ऐसी स्थिति में योग्य गुरु शंकर को योग्य शिष्य माधव मिल गए।'

(ख) 'उसने इस महामिलन के उमंग-रस को बंगाल की खाड़ी से होकर हिंद महासागर तक पहुँचाने के लिए अपनी लोहित जल-धारा को आदेश दिया था।'

(ग) 'उत्तर भारतीय समाज में 'रामचरितमानस' का आदर जितना है, असमीया समाज में 'कीर्त्तनघोषा-नामघोषा' का भी आदर उतना ही है।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क)निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के लिए एक-एक शब्द दो :

विष्णु का उपासक, शक्ति का उपासक, शिव का उपासक, जिसकी कोई तुलना न हो, संस्कृति से संबंधित, बहन के पति, जिस स्त्री का पति मर गया हो, ऐसा व्यक्ति, जो शास्त्र जानता हो

(ख)निम्नांकित शब्दों से प्रत्ययों को अलग करो :

मनौती, वार्षिक, कदाचित्, बुढ़ापा, चचेरा, पूर्वोत्तरी, आध्यात्मिक, आधारित

(ग) निम्न लिखित शब्दों का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार करो, ताकि उनका लिंग स्पष्ट हो :

महामिलन, उपासना, बढ़ोत्तरी, मोल-भाव, विनती, वाणी, तिरोभाव, संस्कृति

योग्यता-विस्तार

(क) श्रीमंत शंकरदेव और श्रीश्री माधवदेव के जीवन-वृत्तों का अध्ययन करो।

(ख) शंकरदेव और माधवदेव की साहित्यिक देन के संदर्भ में अधिक जानकारी एकत्र करो।

(ग) अपने गुरुजी की सहायता से एकशरण भागवती वैष्णव धर्म की मूलभूत बातों को जानने का प्रयास करो।

(घ) बलि-विधान की निरर्थकता पर कक्षा में एक परिचर्चा का आयोजन करो।

(ङ) शंकर-माधव के महामिलन की तरह ही रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद का मिलन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पुस्तकालय की मदद से इस मिलन के बारे में सम्यक् जानकारी प्राप्त करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

कदाचित् = संभवतः, शायद
पावन = पवित्र
सोने में सुगंध = एक उत्ताम वस्तु में और एक उत्तम गुण का आ जाना
प्रयास = चेष्टा
बढ़ोत्तरी = वृद्धि
वरद = शुभ, वर देने वाला
उमंग = उत्साह, जोश
मनौती = मन्नत
जान में जान आना = राहत मिलना
फौरन = तुरंत, शीघ्र ही
प्रवृत्ति = सांसारिक बातों के प्रति झुकाव, आसक्ति
निवृत्ति = सांसारिक बातों के प्रति विराग-भाव, अनासक्ति
तिरोभाव = महापुरुष का देहावसान
कोड़ी = बीस का समूह, बीसी
मृगांक = चाँद, चंद्र

पद्य खण्ड

जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी, जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।

– आचार्य रामचंद्र शुक्ल

9

रसखान

हिन्दी साहित्य में कृष्णभक्ति-काव्यधारा के अंतर्गत सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, नंददास, हितहरिवंश, मीराँबाई आदि अनेकानेक कवि-कवयित्री हुए। उनमें अनन्य कृष्णभक्त मुसलमान कवि रसखान जी का स्थान अन्यतम है। आप कोमल हृदयवाले, भावुक प्रकृति के इंसान थे। इसलिए दिल्ली के बादशाह-वंश में जन्म लेते हुए भी उन्होंने अपने को राज्यलिप्सा और राज-वंश के अभिमान से दूर रखा। प्रसिद्ध है कि वे श्रीमद्भागवत का फारसी अनुवाद पढ़कर गोपियों के कृष्ण-प्रेम से अभिभूत हुए थे और अपने को भी श्रीकृष्ण की भक्ति में निमज्जित कर दिया था।

कवि रसखान जी के जन्म-समय, शिक्षा-दीक्षा, आजीविका, निधन-काल आदि बातों को लेकर विद्वानों में आज भी मतभेद बना हुआ है। कहा जाता है कि 1533 ई. के आस-पास आपका जन्म हुआ था और 1618 ई. के आस-पास आपकी मृत्यु हुई थी। प्रसिद्ध है कि गोकुल में आपने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से भक्ति की दीक्षा ग्रहण की थी। यह बात भी प्रसिद्ध है कि रामभक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रसखान को यमुना के तट पर स्वरचित 'रामचरितमानस' की कथा सर्वप्रथम सुनायी थी। अपने आराध्य से संबंधित सारे उपकरण और सभी स्थान, जैसे-गोकुल, गोवर्धन, ब्रज, वृन्दावन आदि रसखान जी को अत्यंत प्रिय रहे।

प्रेम-भक्ति के कवि रसखान की चार रचनाएँ प्रामाणिक मानी जाती हैं- '**सुजान-रसखान**', '**प्रेमवाटिका**', '**दानलीला**' और '**अष्टयाम**'। आपकी काव्य-भाषा साहित्यिक ब्रज है, जिसमें सहजता, मधुरता और सरसता सर्वत्र विराजमान है। आपने दोहा, कवित्त और सवैया छंदों का ही अधिक प्रयोग किया है। भावुक हृदय से बनी उनकी रचनाओं में भक्ति-रस, प्रेम-रस और काव्य-रस तीनों भरपूर विद्यमान हैं। अत: कवि का नाम 'रसखान' (रस की खान) पूर्णत: सार्थक बन पड़ा है।

*'**कृष्ण-महिमा**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित चारों छन्द **सुजान-रसखान** से लिए गए हैं। इन चारों छन्दों से कृष्ण-भक्ति की महिमा ही प्रकट हुई है। भाव की तल्लीनता, मार्मिकता और भाषागत सरसता चारों छंदों में विद्यमान है। **प्रथम छंद** में अपने आराध्य कृष्ण के सान्निध्य में रहने की कवि गहरी इच्छा का संकेत मिलता है। **दूसरे छंद** में अपने उपास्य से जुड़े अलग-अलग उपकरणों पर सर्वस्व न्योछावर करने की चाहत व्यंजित हुई है। **तीसरे छंद** में कवि ने आराध्य श्रीकृष्ण के बाल-रूप की माधुरी का आकर्षक वर्णन किया है। **चौथे छंद** में गोपी-भाव से अपने उपास्य कृष्ण की तरह ही वेश धारण करने (मुरली को छोड़कर) की तीव्र चाहत प्रकट हुई है।*

कृष्ण-महिमा

(1)

मानुष हौं तो वही रसखान,बसौं ब्रज-गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिली कालिन्दी-कुल-कदंब की डारन॥

(2)

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर कौ तजि डारौं।
आठ हूँ सिद्धि नवों निधि को सुख, नंद की गाइ चराइ बिसारौं।
'रसखान कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।'
कोटिक हौं कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

(3)

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना, पग पैंजनीं बाजतीं पीरीं कछोटी।
वा छवि कों रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथ सों लै गयों माखन रोटी॥

(4)

मोर पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर, ले लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरे 'रसखानि,' सो तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरीं अधरा न धरौंगी॥

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) रसखान कैसे कवि थे ?
(1) कृष्णभक्त (2) रामभक्त (3) सूफी (4) संत

(ख) कवि रसखान की प्रामाणिक रचनाओं की संख्या है –
(1) तीन (2) दो (3) चार (4) पाँच

(ग) पत्थर बनकर कवि रसखान कहाँ रहना चाहते हैं ?
(1) हिमालय पर्वत पर (2) गोवर्धन पर्वत पर
(3) विंध्य पर्वत पर (4) नीलगिरि पर

(घ) बालक कृष्ण के हाथ से कौआ क्या लेकर भागा ?
(1) सूखी रोटी (2) दाल-रोटी
(3) पावरोटी (4) माखन-रोटी

2. एक शब्द में उत्तर दो :

(क) रसखान ने किनसे भक्ति की दीक्षा ग्रहण की थी ?

(ख) 'प्रेमवाटिका' के रचयिता कौन हैं ?

(ग) रसखान की काव्य-भाषा क्या है ?

(घ) आराध्य कृष्ण का वेष धारण करते हुए कवि अधरों पर क्या धारण करना नहीं चहते ?

(ङ) किनकी गाय चराकर कवि रसखान सब प्रकार के सुख भुलाना चाहते हैं ?

3. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कवि रसखान कैसे इंसान थे ?

(ख) कवि रसखान किस स्थिति में गोपियों के कृष्ण-प्रेम से अभिभूत हुए थे ?

(ग) कवि रसखान ने अपनी रचनाओं में किन छंदों का अधिक प्रयोग किया है ?

(घ) मनुष्य के रूप में कवि रसखान कहाँ बसना चाहते हैं ?

(ङ) किन वस्तुओं पर कवि रसखान तीनों लोकों का राज न्योछावर करने को प्रस्तुत हैं ?

4. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) कवि का नाम 'रसखान' किस प्रकार पूर्णत: सार्थक बन पड़ा है ?

(ख) 'जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कुल-कदंब की डारन' - का आशय क्या है ?

(ग) 'वा छबि कों रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी' - का तात्पर्य बताओ।

(घ) ''भावतो वोहि मेरे 'रसखानि', सो तेरे कहे सब स्वांग भरौंगी'' - का भाव स्पष्ट करो।

5. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) कवि रसखान अपने आराध्य का सान्निध्य किन रूपों में प्राप्त करना चाहते हैं ?

(ख) अपने उपास्य से जुड़े किन उपकरणों पर क्या-क्या न्योछावर करने की बात कवि ने की है ?

(ग) कवि ने श्रीकृष्ण के बाल-रूप की माधुरी का वर्णन किस रूप में किया है ?

(घ) कवि ने अपने आराध्य की तरह वेश धारण करने की इच्छा व्यक्त करते हुए क्या कहा है ?

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) कवि रसखान का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

(ख) कवि रसखान की कृष्ण-भक्ति पर प्रकाश डालो।

(ग) पठित छंदों के जरिए कवि रसखान ने क्या-क्या कहना चाहा है ?

7. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभ 100 शब्दों में) :

(क) 'मनुष्य हौं तो वही ..... नित नंद की धेनु मँझारन।'

(ख) 'रसखान कबौं इन आँखिन ..... करील के कुंजन ऊपर वारौं॥'

(ग) 'धूरि भरे अति सोभित ..... पैंजनीं बाजतीं पीरीं कछोटी।'

(घ) 'मोरा-पखा सिर ऊपर राखिहौं ..... गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो :

मानुष, पसु, पाहन, आँख, छबि, भाग

(ख) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो :

कृष्ण, कालिंदी, खग, गिरि, पुरंदर

(ग) संधि-विच्छेद करो :

पीताम्बर, अनेकानेक, इत्यादि, परमेश्वर, नीरस

(घ) निम्नलिखित शब्दों के खड़ीबोली (मानक हिंदी) में प्रयुक्त होने वाले रूप बताओ :

मेरो, बसेरो, अरु, कामरिया, धूरि, सोभित, माल, सों

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के साथ भाववाचक प्रत्यय 'ता' जुड़ा हुआ है -

सहजता, मधुरता, सरसता, तल्लीनता, मार्मिकता

- ऐसे ही 'ता' प्रत्यय वाले पाँच भाववाचक संज्ञा-शब्द लिखो।

योग्यता-विस्तार

(क) पठित छंदों का सस्वर पाठ करो।

(ख) 'सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहुँ, जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं।
नारद से सुक व्यास रटे, पचि हारे पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥'

- कवि रसखान द्वारा रचित प्रस्तुत छंद का भावार्थ अपने शिक्षक की सहायता से समझने का प्रयास करो।

(ग) श्रीकृष्ण के बाल-रूप वर्णन से संबंधित पठित छंद की तुलना कवि सूरदास द्वारा रचित निम्नलिखित पद के साथ करो :

'सोभित कर नवनीत लिये।
घुटुरनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिए।
कठुला-कंठ बज्र केहरि-नख, राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिए॥'

(घ) असम के महापुरुष श्रीश्री माधवदेव जी ने अपने कुछेक बरगीतों में श्रीकृष्ण के बाल-रूप और उनकी बाल-लीलाओं का सुंदर वर्णन किया है। ऐसे बरगीतों का संग्रह करके रसखान और सूरदास विरचित समान भाव वाले छंदों के साथ उनकी तुलना करो।

(ङ) अपने शिक्षक की सहायता से रसखान और मीराँबाई की कृष्ण-भक्ति की तुलना करने का प्रयास करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

(1)

मानुष = मनुष्य
हौं = बनूँ
बसौं = निवास करूँगा
ग्वारन = ग्वाल लोग
पसु = पशु
बसु = वश
मेरो = मेरा
धेनु = गाय
मँझरन = बीच, मध्य
पाहन = पत्थर
धरयौ = धारण किया
कर = हाथ
पुरंदर = इंद्र, विष्णु
धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर धारन = इंद्र के अहंकार का नाश करने के लिए कृष्ण जी गोवर्धन पर्वत को छत्र के समान धारण किया था
जो = यदि, अगर
खग = पक्षी, चिड़िया
बसेरो = बसेरा, निवास
कालिंदी-कुल-कदंब = यमुना नदी के किनारे स्थित कदंब का पेड़
डारन = डालियाँ

(2)

या = इस
लकुटी = छड़ी
अरु = और
कामरिया = कंबल
तिहूँ पुर = तीनों लोक
आठहुँ सिद्धि = योग द्वारा प्राप्त अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामावसयित्य–ये आठ प्रकार की सिद्धियाँ
नवों निधि = कुबेर की नौ निधियाँ– महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व
गाइ = गाय
बिसारौं = भुला दूँ
कबौं = कब
सों = से
तड़ाग = तालाब
निहारौं = देखूँ
कोटिक = करोड़
कलधौत के धाम = सोने–चाँदी के नगर
करील = एक प्रकार का कंटीला पौधा
कुंजन = झाड़ियाँ
वारौं = न्योछावर करूँ

(3)

सोभित = शोभित
स्यामजू = कृष्णजी
धूरि = धूल
तैसी = वैसी ही
चोटी = बंधे/गुँथे हुए बाल, शिखा
अँगना = आँगन
पग = पाँव
पैंजनीं = झन–झन बजने वाला एक प्रकार का गहना, जो पैर में पहना जाता है
पीरीं = पीली
कछोटी = काछनी, धोती पहनने का वह ढंग जिसमें पीछे लाँग खोंसी जाती है
बिलोकत = देखकर
वारत = न्योछावर कर देता है
काम = कामदेव (सौंदर्य के देवता)
कलानिधि = चन्द्रमा
कोटी = करोड़
काग = कौआ
भाग = भाग्य
कहा = क्या
हरि = कृष्णजी

पखा = पंख
गुंज = घुँघची नामक लता के दाने, गुंजा
माल = माला
गरे = गले में
पहिरौंगी = पहनूँगी
पितम्बर = पीताम्बर, पीला वस्त्र
बन = वन
ग्वारनि = ग्वालिनों के
गोधन = गायें
भावतो वही = उन्हें अच्छा लगनेवाला
स्वांग भरौंगी = रूप/वेष बनाऊँगी
मुरली = बाँसुरी
मुरलीधर = मुरली धारण करने वाले कृष्ण
अधरान धरी = अधरों पर रखी हुई
अधरा = होंठ
अधरान धरी = कृष्णजी के द्वारा अधरों पर रखी गई बाँसुरी को
अधरान न धरौंगी अपने होंठों पर (सौतिया डाह के कारण) नहीं रखूँगी

10

बिहारीलाल

कविवर बिहारीलाल हिन्दी साहित्य के अंतर्गत रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। हिन्दी के समस्य कवियों में भी आप अग्रिम पंक्ति के अधिकारी हैं। उन्होंने प्रमुख रूप से प्रेम-शृंगार और गौण रूप से भक्ति एवं नीति के दोहों की रचना करके अपार लोकप्रियता प्राप्त की थी। उनकी यह लोकप्रियता आज भी बनी हुई है और आगे भी बनी रहेगी।

कवि बिहारी का जन्म 1595 ई. में ग्वालियर के निकट बसुवा गोविन्दपुर नामक गाँव में हुआ था। पिता केशवराय के गुरु महन्त नरहरिदास के यहाँ बिहारी को संस्कृत और पराकृत के प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथों के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ था। तत्कालीन दरबारी भाषा फारसी में भी अधिकार प्राप्त करके वे अपनी एक फारसी रचना के साथ कलाप्रिय मुगल बादशाह शाहजहाँ से मिले थे। बिहारी की काव्य-प्रतिभा से सम्राट बड़े ही प्रसन्न हुए और उनके कृपापात्र बने। अब तो कवि बिहारी का संपर्क मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ अन्य राजाओं से भी हुआ। कई राज्यों से उनको वृत्ति मिलने लगी। 1645 ई. के आस-पास वे वृत्ति लेने जयपुर पहुँचे थे। वहाँ के महाराज जयसिंह और चौहानी रानी के आग्रह पर कवि बिहारी जयपुर में ही रुक गए तथा प्रत्येक दोहे के लिए एक अशर्फी की शर्त पर काव्य-रचना करने लगे। 1662 ई. तक उनकी 'सतसई' पूरी हुई। 1663 ई. में कविवर बिहारी का देहावसान हुआ।

कवि बिहारीलाल की ख्याति का आधार उनका एकमात्र 'सतसई' ग्रंथ है, जो **बिहारी सतसई** नाम से प्रसिद्ध है। यह लगभग सात सौ दोहों का अनुपम संग्रह है। इसे शृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी भी कहते हैं। इस ग्रंथ की लोकप्रियता के संदर्भ में यूरोपीय विद्वान डॉ. ग्रियर्सन ने कहा है कि यूरोप में इसके समकक्ष कोई भी रचना नहीं है। गागर में सागर भरने के समान कविवर बिहार ने दोहे जैसे छोटे-से छंद में लंबी-चौड़ी बात भी संक्षेप में कह दी है। सरस, सुमधुर और प्रौढ़ ब्रजभाषा में रचित ये दोहे काव्य-रसिकों पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। इसीलिए लोकोक्ति प्रचलित है -

'सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगै घाव करै गंभीर॥'

*'**दोहा दशक**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित प्रथम पाँच दोहे भक्तिपरक और शेष पाँच दोहे नीतिपरक हैं। कविवर बिहारी द्वारा रचित भक्ति-नीति के दोहे संख्या की दृष्टि से कम होने पर भी भाव, भाषा और अभिव्यक्ति भंगिमा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।*

दोहा-दशक

सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल॥1॥

कोऊ कोरिक संग्रहो, कोऊ लाख हजार।
मो संपति जदुपति सदा, बिपति बिदारनहार॥ 2॥

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ॥
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ॥ 3॥

जप-माला, छापैं, तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन काँचे नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥ 4॥

कीजै चित सोई तरे, जिहि पतितनु के साथ।
मेरे गुन-औगुन-गननु, गनौ न गोपीनाथ ॥ 5॥

चटक न छाँड़तु घटत हूँ, सज्जन नेहु गंभीरु।
फीको परै न बरु घटै, रंग्यौं चोल रंगु चीरु॥ 6॥

न ए बिससिये लखि नये, दुर्जन दुसह सुभाय।
आँटे पर प्रानन हरै, काँटे लौं लगि पाय॥ 7॥

कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाए बौराइ जगु। इहिं पाएँ बौराइ॥ 8॥

मीत न नीत गलीत ह्वै, जो धरियै धन जोरि।
खाएँ खरचैं जो जुरै, तो जोरिए करोरि॥ 9॥

ओछे बड़े न ह्वै सकैं, लगौ सतर ह्वै गैन।
दीरघ होंहि न नैंक हूँ, फारि निहारै नैन॥10॥

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) कवि बिहारीलाल किस काल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं ?

(1) आदिकाल के (2) रीतिकाल के

(3) भक्तिकाल के (4) आधुनिक काल के

(ख) कविवर बिहारी की काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होने वाले मुगल सम्राट थे –

(1) औरंगजेब (2) अकबर

(3) शाहजहाँ (4) जहाँगीर

(ग) कवि बिहारी का देहावसान कब हुआ ?

(1) 1645 ई. को (2) 1660 ई. को

(3) 1662 ई. को (4) 1663 ई को

(घ) श्रीकृष्ण के सिर पर क्या शोभित है ?

(1) मुकुट (2) पगड़ी

(3) टोपी (4) चोटी

(ङ) कवि बिहारी ने किन्हें सदा साथ रहने वाली संपत्ति माना है ?

(1) राधा को (2) श्रीराम को

(3) यदुपति कृष्ण को (4) लक्ष्मी को

2. निम्नलिखित कथन शुद्ध हैं या अशुद्ध, बताओ :

(क) हिन्दी के समस्त कवियों में भी बिहारीलाल अग्रिम पंक्ति के अधिकारी हैं।

(ख) कविवर बिहारी को संस्कृत और प्राकृत के प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथों के अध्ययन का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था।

(ग) 1645 ई. के आस-पास कवि बिहारी वृत्ति लेने जयपुर पहुँचे थे।

(घ) कवि बिहारी के अनुसार ओछा व्यक्ति भी बड़ा बन सकता है।

(ङ) कवि बिहारी का कहना है कि दुर्दशाग्रस्त होने पर भी धन का संचय करते रहना कोई नीति नहीं है।

3. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कवि बिहारी ने मुख्य रूप से कैसे दोहों की रचना की है?

(ख) कविवर बिहारी किनके आग्रह पर जयपुर में ही रुक गए?

(ग) कवि बिहारी की ख्याति का एकमात्र आधार-ग्रंथ किस नाम से प्रसिद्ध है।

(घ) किसमें किससे सौ गुनी अधिक मादकता होती है?

(ङ) कवि ने गोपीनाथ कृष्ण से क्या-क्या न गिनने की प्रार्थना की है?

4. अति संक्षेप्त में उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) किस परिस्थिति में कविवर बिहारी काव्य-रचना के लिए जयपुर में ही रुक गए थे?

(ख) 'यहि बानक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल' - का भाव क्या है?

(ग) 'ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होई' - का आशय स्पष्ट करो।

(घ) 'आँटे पर प्रानन हरै, काँटे लौं लगि पाय' - के जरिए कवि क्या कहना चाहते हैं?

(ङ) 'मन काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै राम' - का तात्पर्य बताओ।

5. संक्षेप्त में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) कवि के अनुसार अनुरागी चित्त का स्वभाव कैसा होता है ?

(ख) सज्जन का स्नेह कैसा होता है ?

(ग) धन के संचय के संदर्भ में कवि ने कौन-सा उपदेश दिया है ?

(घ) दुर्जन के स्वभाव के बारे में कवि ने क्या कहा है ?

(ङ) कवि बिहारी किस वेश में अपने आराध्य कृष्ण को मन में बसा लेना चाहते हैं ?

(च) अपने उद्धार के प्रसंग में कवि ने गोपीनाथ कृष्णजी से क्या निवेदन किया है ?

(छ) कवि बिहारी की लोकप्रियता पर एक संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करो।

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) कवि बिहारीलाल का साहित्यिक परिचय दो।

(ख) 'बिहारी सतसई' पर एक टिप्पणी लिखो।

(ग) कवि बिहारी ने अपने भक्तिपरक दोहों के माध्यम से क्या कहा है ? पठित दोहों के आधार पर स्पष्ट करो।

(घ) पठित दोहों के आधार पर बताओ कि कवि बिहारी के नीतिपरक दोहों का प्रतिपाद्य क्या है ?

7. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(का) 'कोऊ कोरिक संग्रहो ..... बिपति बिदारनहार ॥'

(ख) 'जय-माला, छापैं, तिलक ..... साँचै राँचै रामु ॥'

(ग) 'कनक कनक तैं सौ गुनी ..... इहिं पाएँ बौराइ ॥'

(घ) 'ओछे बड़े न ह्वै सकैं ..... फारि निहारै नैन।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क) संधि-विच्छेद करो :

देहावसान, लोकोक्ति, उज्ज्वल, सज्जन, दुर्जन

(ख) विलोम शब्द लिखो :

अनुराग, पाप, गुण, प्रेम, सज्जन, मित्र, गगन, श्रेष्ठ

(ग) निम्नलिखित दोहों को खड़ीबोली (मानक हिन्दी) गद्य में लिखो :

मीत न नीत गलीत ह्वै, जो धरियै धन जोरि।
खाए खरचैं जो जुरै, तौ जोरिए करोरि॥
न ए बिससिये लखि नये, दुर्जन दुसह सुभाय।
आँटे पर प्रानन हरै, काँटे लौं लगि पाय॥

(घ) निम्नलिखित समस्त-पदों का विग्रह करके समास का नाम बताओ :

सतसई, गोपीनाथ, गुन-औगुन, काव्य-रसिक, आजीवन

(ङ) अंतर बनाए रखते हुए निम्नलिखित शब्द-जोरों के अर्थ बताओ :

कनक-कनक, हार-हार, स्नेह-स्नेह, हल-हल, कल-कल

योग्यता-विस्तार

(क) पठित दोहों को कंठस्थ करके अपने माता-पिता को सुनाओ।

(ख) कवि बिहारीलाल द्वारा रचित अन्य दोहों का संग्रह करके कक्षा में अंत्याक्षरी का खेल खेलो।

(ग) 'ज्यों-ज्यों बड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होई॥'
'कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।'
- उपरोक्त काव्य-पंक्तियों में आए अलंकारों के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करो।

(घ) 'दोहा' छंद की विशेषता के बारे में अपने शिक्षक से जान लो।

(ङ) कवि बिहारी द्वारा रचित निम्नलिखित शृंगारपरक दोहों का भाव अपने शिक्षक की सहायता से जानने का प्रयास करो :

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सब बात॥ 1॥

बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ। ॥ 2॥

औंधाई सीसी सु लखि, बिरह बरति बिललात।
बीचहिं सूखि गुलाबु गौ, छींटौ छुयौ न गात। ॥ 3॥

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

(1)

सीस = सिर
कटि = कमर
काछनी = पीतांबर, घुटनों तक पहनी हुई धोती
कर = हाथ
माल = माला, वैजयंती माला
उर = वक्षस्थल
बानक = वेश, रूप, बनाव
मो = मेरा
बसौ = निवास कीजिए, बसा हुआ है
बिहारीलाल = कृष्ण, कवि का नाम

(2)

कोऊ = कोई
कोरिक = करोड़
संग्रहो = संग्रह/एकत्र करना
मो मेरी

संपति = संपत्ति
जदुपति = यदुपति, कृष्ण
बिपति = विपत्ति, विपदा
बिदारनहार = नष्ट/दूर करने वाला

(3)

या = इस
अनुरागी = अनुरगगमयी, प्रेमी, लाल
चित्त = हृदय
गति स्वभाव
नहिं = नहीं
बूड़ै = डूबता है
स्याम = कृष्ण, काला
उज्जलु = उज्ज्वल, पवित्र, श्वेत

(4)

जप = मंत्र का स्मरण
छापैं = शरीर के किसी अंग पर चित्र बना लेना
तिलक = टीका, मस्तक पर चंदन आदि का चिह्न लगाना
सरै सिद्ध होना
न = नहीं
एकौ = एक भी
कामु = काम, कार्य
काँचै = कच्चा, काँच का, चंचल
बृथा = बेकार
साँचै = सच्चा, साँचा, दृढ़
राँचै = निचस करके प्रसन्न होता है
रामु = रामजी, आराध्य

(5)

कीजै = कीजिए, करुणा लाइए
चित = चित्त/हृदय में

सोई = वही
तरे = उद्धार हो
जिहि पतितनु के साथ = जैसा बर्ताव अन्य पापियों के साथ किया
गुन = गुण, अच्छाई
औगुन = अवगुण, दोष, बुराई
गननु = समूहों को
गनौ न = न गिनिए, गणना मत कीजिए
गोपीनाथ = गोपियों के नाथ श्रीकृष्ण

(6)

चटक = चमक, सहानुभूति
न छाँड़तु = नहीं छोड़ता
घटत हूँ = गंभीरता घटने पर भी
सज्जन = सत्पुरुष
नेहु = स्नेह, प्यार
गंभीरु = गंभीरता, गहराई
फीको परे न = फीका नहीं पड़ता,
= निष्प्रभ नहीं होता
बरु = भले ही
घटे = ह्रास हो, फट जाए
रंग्यौ = रँगा हुआ
चोल = मंजिष्ठ, मंजीठ
रंगु = रंग से
चीरु = चीर, वस्त्र, कपड़ा

(7)

न ए बिससिये = इन पर विश्वास न कीजिए
लखि = देखकर, देखते ही
नये = नम्र होते हुए
दुर्जन = दुष्ट लोग

दुसह = दुस्सह
सुभाय = स्वभाव
आँटे पर = अंटे/दु:ख में पड़ने पर, अवसर मिलने पर
प्रानन हरै = प्राणों का हरण करते हैं
काँटै = काँटा
लौं = की तरह, के समान
लगि पाय = पाँव/पैर में चुभकर

(8)

कनक = सोने/स्वर्ण में, धन-संपत्ति में
कनक तैं = धतूरे से
मादकता = उन्मत्तता, बावलापन, पागल बनाने की क्षमता
अधिकाइ = अधिक, ज्यादा होती है
उहिं = उसे, धतूरे को
खाए = खाने पर
बौराए = पागल होता है
जगु = जगत, दुनिया
इहिं = इसे, सोने को
पाएँ = पाने पर ही
बौराइ = पागल हो/अहंकार से भर जाता है

(9)

मीत = मित्र, दोस्त
न नीत = नीति नहीं है
गलीत ह्वै = दुर्दशाग्रस्त होने पर भी
जो धरियै = जो रखा जाए
धन जोरि = धन/रुपये-पैसे का संचय करके
खाए खरचैं जो जुरै = खाने और खर्च करने के बाद अगर बच जाए
तौ = तो, उस स्थिति में
जोरिए = संचय कीजिए
करोरि = करोड़ की संख्या में

ओछे = छोटा/निकृष्ट व्यक्ति, नीचे स्वभाव वाला
बड़े = बड़ा, महान
न ह्वै सकैं = नहीं हो सकता
लगौ = लग जाए, छू ले
सतर ह्वै = ऊँचा होकर, बढ़ कर
गैन = गगन, आकाश
दीरघ = दीर्घ, बड़ा, विशाल
होंहि न = हो नहीं पाता
नैंक हूँ = कभी भी
फारि निहारै = फाड़ कर देखा जाए, बड़ा करके देखा जाए
नैन = नयन, आँख
दीरघ होंहि ...निहारे नैन = आँखों को भले ही फाड़कर देखा जाए परंतु वे कभी भी अपने स्वाभाविक आकार से बड़ी नहीं हो पातीं

11

मैथिलीशरण गुप्त

हिन्दी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवियों में मैथिलीशरण गुप्तजी का स्थान सर्वोपरि है। देश और संस्कृति के प्रति प्रेम के अलावा गुप्तजी के काव्य में उपेक्षित-दलितों के प्रति सहानुभूति, गांधीवाद की ओर झुकाव और मानवतावादी दृष्टि मिलती है। आपके काव्य में सरलता एवं सरसता का सुखद समन्वय हुआ है। इसलिए हिन्दी के आधुनिक कालीन कवियों में गुप्तजी कदाचित् सबसे लोकप्रिय कवि रहे हैं।

राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध गुप्तजी का जन्म 1886 ई. में चिरगाँव, जिला झाँसी में हुआ था। आपके पिता सेठ रामचरणजी रामभक्त एवं सुकवि थे। आगे पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रोत्साहन पाकर आपकी काव्य-सरस्वती प्रवाहित होती गयी। 1964 ई. में आपका स्वर्गवास हुआ।

1912 ई. में प्रकाशित काव्य-ग्रंथ '**भारत-भारती**' ने गुप्तजी को राष्ट्रकवि के रूप में स्थापित किया। कालांतर में आपने '**पंचवटी**', '**किसान**', '**साकेत**', '**यशोधरा**', '**द्वापर**', '**जयभारत**', '**विष्णुप्रिया**' आदि काव्य-ग्रंथों की रचना की। आपके द्वारा विरचित '**साकेत**' एक महाकाव्य है। आपका '**किसान**' खंडकाव्य भारतीय कृषक-जीवन की करुण गाथा है। आपकी काव्य-भाषा खड़ीबोली हैं - जिस पर आपको असाधारण अधिकार प्राप्त था।

नर हो, न निराश करो मन को *कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त ने मनुष्य को कर्मठता का संदेश दिया है। कवि कहता है कि मनुष्य को अनुकूल अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने महत्व एवं व्यक्तित्व को पहचाने, तभी उसे आत्म-गौरव और अमरत्व प्राप्त हो सकता है। निराश होकर बैठना मनुष्य के लिए लज्जाजनक है।*

नर हो, न निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहके निज नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराशा करो मन को ॥

सँभलो कि सु-योग न जाए चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर है अवलंबन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ,
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ?
तुम स्वत्त्व-सुधा-रस पान करो,
उठके अमरत्व-विधान करो।
दव-रूप रहो भव-कानन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
'हम भी कुछ हैं' - यह ध्यान रहे।
सब जाय अभी, पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।
कुछ हो, न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को॥

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1 कवि ने हमें प्रेरणा दी है -
(क) कर्म की (ख) आशा की
(ग) गौरव की (घ) साधन की

2. कवि के अनुसार मनुष्य को अमरत्व प्राप्त हो सकता है -
(क) अपने नाम से (ख) धन से
(ग) भाग्य से (घ) अपने व्यक्तित्व से

3. कवि के अनुसार 'न निराश करो मन को' का आशय है -
(क) सफलता प्राप्त करने के लिए आशावान होना।
(ख) मन में निराशा तो हमेशा बनी रहती है।
(ग) मनुष्य अपने प्रयत्न से असफलता को भी सफलता में बदल सकता है।
(घ) आदमी को अपने गौरव का ध्यान हमेशा रहता है।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. तन को उपयुक्त बनाए रखने के क्या उपाय है ?
2. कवि के अनुसार जग को निरा सपना क्यों नहीं समझना चाहिए ?
3. अमरत्व-विधान से कवि का क्या तात्पर्य है ?
4. अपने गौरव का किस प्रकार ध्यान रखना चाहिए ?
5. कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखो।

(इ) सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

1. सँभलो कि सु-योग न जाए चला,
   कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला ?
2. जब प्राप्त तुम्हें सब तत्व यहाँ,
   फिर जा सकता वह सत्व कहाँ ?

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **कविता के आधार पर इन शब्दों के तुकांत शब्द लिखो :**
   अर्थ, तन, चला, सपना, तत्व, यहाँ, ज्ञान, मान
2. **इन शब्दों में से उपसर्ग अलग करो :**
   व्यर्थ, उपयुक्त, सु-योग, सदुपाय, प्रशस्त, अवलम्बन, निराश
3. **इन शब्दों के विलोम शब्द लिखो :**
   निज, उपयुक्त, निराश, अपना, सुधा, ज्ञान, मान, जन्म
4. **इन शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो :**
   नर, जग, अर्थ, पथ , अखिलेश्वर
5. 'अमरत्व' शब्द में 'त्व' प्रत्यय लगा है। भाववाचक 'त्व' प्रत्यय खासकर भाववाचक संज्ञा का द्योतक है।
   'त्व' प्रत्ययवाले किन्हीं दस शब्द लिखो।

योग्यता-विस्तार

1. व्यक्ति अपने किन कर्मों से अमर हो जाता है ?
2. मैथिलीशरण गुप्त की समान भाववाली कोई अन्य रचना याद करो और कक्षा में सुनाओ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

जग = संसार
उपयुक्त = ठीक
तन = शरीर
सदुपाय = अच्छा उपाय
निरा = केवल
पथ = रास्ता
प्रशस्त करना = विस्तार करना
अवलंबन सहारा
सत्त्व = सार
स्वत्त्व = पहचान, अपने होने का भाव
दव = जंगल में स्वत: लगने वाली आग
सुधा = अमृत
भव-कानन = संसार रूपी जंगल
मान = यश, प्रसिद्धि
मरणोत्तर मृत्यु के बाद

12

महादेवी वर्मा

आधुनिक हिन्दी काव्य-साहित्य के अंतर्गत बहनेवाली छायावादी काव्य-धारा की चार प्रमुख विभूतियों में कवयित्री महादेवी वर्मा अन्यतम हैं। आपकी कविताओं में सर्वव्यापी परम सत्ता के पति विरहानुभूति की तीव्रता परिलक्षित होती है। इस आधार पर कृष्ण-प्रेम-दीवानी मीराँबाई के साथ तुलना करते हुए आपको **आधुनिक युग की मीराँ** कहा जाता है। अपने प्रियतम अज्ञात सत्ता के प्रति तीव्र विरहानुभूति या रहस्यानुभूति के कारण आप रहस्यवादी कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हैं। अपने काव्य को आराध्य की विरहानुभूति और व्यक्तिगत दु:ख-वेदना की अभिव्यक्ति में सीमित न रखकर महादेवी वर्माजी ने उसे लोक कल्याणकारी करुणा भाव से जोड़ दिया है। इन्हीं गुणों के कारण उनकी काव्य-रचनाएँ हिन्दी-पाठकों को विशेष प्रिय रही हैं।

कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनके पिता-माता गोविंद प्रसाद वर्मा और हेमरानी वर्मा दोनों उदार विचारवाले थे। छठी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही महादेवीजी का विवाह हुआ था, परन्तु वैवाहिक संबंध आगे बना नहीं रहा। आपने शिक्षा और साहित्य की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत और दर्शन-शास्त्र के साथ बी.ए. करने के पश्चात् आपने 1933 ई. को संस्कृत में एम.ए. किया। इसके बाद उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या के रूप में अपने कर्म-जीवन का श्रीगणेश किया। महादेवी वर्मा ने जीवन भर शिक्षा और साहित्य की साधना की। 1987 ई. को आपका स्वर्गवास हुआ।

महादेवी वर्माजी ने गद्य और पद्य दोनों शैलियों में सहित्य की रचना की है। उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं -'**नीहार**', '**रश्मि**', '**नीरजा**', '**सांध्यगीत**', '**दीपशिखा**' और '**यामा**'। 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित महादेवी वर्मा को '**यामा**' काव्य-संकलन पर 'ज्ञापपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उनकी गद्य-रचनाओं में '**स्मृति की रेखाएँ**', '**अतीत के चलचित्र**', '**शृंखला की कड़ियाँ**' और '**पथ के साथी**' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपकी काव्य-भाषा संस्कृत-निष्ठ खड़ीबोली है, जो कोमलता, मधुरता, गेयता आदि गुणों से संपन्न है।

मुरझाया फूल *शीर्षक कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा ने कली के खिलकर फूल बनने से लेकर मुरझाते हुए भूमि पर गिरने तक का आकर्षक वर्णन किया है। कली और खिले फूल के प्रति सब आकर्षित होते हैं, जबकि मुरझाए फूल के प्रति उनका कोई आकर्षण नहीं रहता। यह संसार की स्वार्थपरता है, परंतु इससे बेखबर रहकर फूल अपना सर्वस्व दान करते हुए सबको हरषाता जाता है। यहाँ कवयित्री ने प्रकारान्तर से मानव-जीवन की बात करते हुए महत्वपूर्ण संदेश दिया है।*

मुरझाया फूल

था कली के रूप शैशव
में अहा, सूखे सुमन।
हास्य करता था, खिलाता
अंक में तुझको पवन॥

खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

स्निग्ध किरणें चंद्र की
तुझको हँसाती थीं सदा
ओस मुक्ता-जाल से
शृंगारती थी सर्वदा॥

वायु पंखा झल रही,
निद्रा विवश करती तुझे।
यत्न माली का रहा
आनंद से भरता तुझे॥

कर रहा अठखेलियाँ
इतरा सदा उद्यान में।
अंत का यह दृश्य आया,
था कभी क्या ध्यान में॥

सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क बिखराया हुआ।
गंध, कोमलता, नहीं
मुख-मंजु मुरझाया हुआ॥

आज तुझको देखकर
चाहक भ्रमर आता नहीं।
वृक्ष भी खोकर तुझे
हा, अश्रु बरसाता नहीं॥

जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥

कर दिया मधु और सौरभ
दान सारा एक दिन।
किंतु रोता कौन है
तेरे लिए दानी सुमन?

मत व्यथित हो पुष्प, किसको
सुख दिया संसार ने?
स्वार्थमय सबको बनाया,
है यहाँ करतार ने॥

विश्व में हे पुष्प! तू
सबके हृदय भाता रहा।
दान कर सर्वस्व फिर भी,
हाय, हरषाता रहा॥

जब न तेरी ही दशा पर,
दुःख हुआ संसार को!
कौन रोएगा सुमन,
हमसे मनुज निस्सार को?

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

अ. सही विकल्प का चयन करो :

(1) कवयित्री महादेवी वर्मा की तुलना की जाती है –
(क) सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ
(ख) मीराँबाई के साथ
(ग) उषा देवी मित्रा के साथ
(घ) मन्नू भंडारी के साथ

2. कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म कहाँ हुआ था?
(क) गाजियाबाद में (ख) हैदराबाद में
(ग) फैजाबाद में (घ) फर्रुखाबाद में

3. महादेवी वर्मा की माता का नाम क्या था?
(क) हेमरानी वर्मा (ख) पद्मावती वर्मा
(ग) फूलमती वर्मा (घ) कलावती वर्मा

4. 'हास्य करता था, ... अंक में तुझको पवन।'
(क) खिलाता (ख) हिलाता (इ) सहलाता (ई) सुलाता

5. 'यत्न माली का रहा ..... से भरता तुझे।'
(क) प्यार (ख) आनंद (ग) सुख (घ) धीरे

6. करतार ने धरती पर सबको कैसा बनाया है?
(क) सुंदर (ख) त्यागमय (ग) स्वार्थमय (घ) निर्दय

(आ) 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दो :

1. छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा रहस्यवादी कवयित्री के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।
2. महादेवी वर्मा के पिता-माता उदार विचारवाले नहीं थे।
3. महादेवी वर्मा ने जीवन भर शिक्षा और साहित्य की साधना की।
4. वायु पंखा झल कर फूल को सुख पहुँचाती रहती है।
5. मुरझाए फूल की दशा पर संसार को दुख नहीं होता।

(इ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. महादेवी वर्मा की कविताओं में किनके प्रति विरहानुभूति की तीव्रता परिलक्षित होती है?
2. महादेवी वर्मा का विवाह कब हुआ था?
3. महादेवी वर्मा ने किस रूप में अपने कर्म-जीवन का श्रीगणेश किया था?
4. फूल कौन-सा कार्य करते हुए भी हरषाता रहता है?
5. भ्रमर फूल पर क्यों मँडराने लगते हैं?

(ई) अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

1. किन गुणों के कारण महादेवी वर्मा की काव्य-रचनाएँ हिन्दी-पाठकों को विशेष प्रिय रही हैं?
2. महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य-रचनाएँ क्या-क्या हैं? किस काव्य-संकलन पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था?
3. फूल किस स्थिति में धारा पर पड़ा हुआ है?
4. खिले फूल और मुरझाए फूल के साथ पवन के व्यवहार में कौन-सा अंतर देखने को मिलता है?
5. खिले फूल और मुरझाए फूल के प्रति भौंरे के व्यवहार क्या भिन्न-भिन्न होते हैं?

(उ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. महादेवी वर्मा की साहित्यिक देन का उल्लेख करो।
2. खिले फूल के प्रति किस प्रकार सब आकर्षित होते हैं, पठित कविता के आधार पर वर्णन करो।
3. पठित कविता के आधार पर मुरझाए फूल के साथ किए जाने वले बर्ताव का उल्लेख करो।
4. पठित कविता के आधार पर दानी सुमन की भूमिका पर प्रकाश डालो।

(ऊ) सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

1. कवयित्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।
2. 'मुरझाया फूल' शीर्षक कविता में फूल के बारे में क्या-क्या कहा गया है ?
3. 'मुरझाया फूल' कविता के माध्यम से कवयित्री ने मानव जीवन के संदर्भ में क्या संदेश दिया है ?
4. पठित कविता के आधारप र फूल के जीवन और मानव-जीवन की तुलना करो।

(ई) प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

1. 'स्निग्ध किरणें चंद्र की ..... शृंगारती थी सर्वदा।'
2. 'कर रहा अठखेलियाँ ..... या कभी क्या दयान में।'
3. 'मत व्यथित हो पुष्प ..... यहाँ करतार ने।'
4. जब न तेरी ही दशा पर .... हमसे मनुज निस्सार को।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो :**
   श्रीगणेश करना, आँखों का तारा, नौ दो ग्यारह होना,
   हवा से बातें करना, अंधे की लकड़ी, लकीर का फकीर होना

2. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों को गद्य-रूप में प्रस्तुत करो :

(क) खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥

3. लिंग-निर्धारण करो :

कली, शैशव, फूल, किरण, वायु, माली, कोमलता, सौरभ, दशा

4. वचन परिवर्तन करो :

भौंरा, किरणें, अठखेलियाँ, झोंके, चिड़िया, रेखाएँ, बात, कली

5. लिंग परिवर्तन करो :

कवयित्री, प्रियतम, पिता, पुरुष, प्राचार्या, माली, देव, मोरनी

6. कार शब्दांश के पूर्व **आ, वि, प्र, उप, अप** और **प्रति** उपसर्ग जोड़ कर शब्द बनाओ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।

योग्यता-विस्तार

1. हाव-भाव के साथ प्रस्तुत कविता का पाठ करो।
2. कवि माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक निम्नोक्त कविता को पढ़ो और अपने गुरुजी की सहायता से इसके संदेश को समझने का प्रयास करो :
'चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँगा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ॥

चाहा नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवाों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ॥
मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक॥'

3. 'सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क बिखराया हुआ
गंध, कोमलता, नहीं
मुख-मंजु मुरझाया हुआ॥'
– रेखांकित काव्य-पंक्ति में आए अलंकार के बारे में अपने-अपने शिक्षक से जान लो।
4. कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा रचित किसी अन्य कविता का संग्रह करके कक्षा में सुनाओ।
5. प्रकृति से संबंधित किसी विषय पर कविता लिखकर अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

शैशव = बचपन
सुमन = फूल, पुष्प
अंक = गोद
मंजुव = मनोहर, सुंदर
लुब्ध = पूरी तरह लुभाया हुआ, मोहित, लालची
भ्रमर = भौंरा
स्निग्ध = निर्मल
मुक्ता = मोती
शृंगारती थी = शृंगार करती थी
सदा/सर्वदा = हमेशा
निद्रा = नींद
विवश = बाध्य, मजबूर
अठखेलियाँ/ अठखेली = मतवाली चाल, चपलता, चुलबुलापन

13

अज्ञेय

अज्ञेय का मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। उन्होंने अज्ञेय नाम से काव्य रचना की है। उनका जन्म 7 मार्च, 1911 ई. को कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनका बचपन लखनऊ, श्रीनगर और जम्मू में बीता। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अंग्रेजी और संस्कृत में हुई। हिंदी उन्होंने बाद में सीखी। वे आरंभ में विज्ञान के विद्यार्थी थे। बी.एस.सी. करने के बाद उन्होंने एम.ए. अंग्रेजी में प्रवेश लिया। क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें अपना अध्ययन बीच में ही छोड़ना पड़ा। वे चार वर्ष जेल में रहे तथा दो वर्ष नजरबंद।

अज्ञेय ने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ कीं। उन्होंने कई नौकरियाँ कीं और छोड़ीं। कुछ समय तक वे जोधपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर भी रहे। वे हिन्दी के प्रसिद्ध समाचार साप्ताहिक दिनमान के संस्थापक संपादक थे। कुछ दिनों तक उन्होंने नवभारत टाइम्स का भी संपादन किया। इसके अलावा उन्होंने सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, नया प्रतीक आदि अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। आजादी के बाद की हिंदी कविता पर उनका व्यापक प्रभाव है। उन्होंने सप्तक परंपरा का सूत्रपात करते हुए तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक और चौथा सप्तक का संपादन किया। प्रत्येक सप्तक में सात कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं, जो शताब्दी के कई दशकों की काव्य-चेतना को प्रकट करती हैं।

हिन्दी के प्रयोगवाद और नई कविता के प्रवर्तक माने जाने वाले इस महान साहित्यकार का देहावसान 1987 ई. में हुआ। वे प्रकृति-प्रेम और मानव-मन

के अंतर्द्वंद्वों के कवि हैं। उनकी कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता का आग्रह है और बौद्धिकता का विस्तार भी। उन्होंने शब्दों को नया अर्थ देने का प्रयास करते हुए हिन्दी काव्य-भाषा का विकास किया है। उन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं, जिनमें **साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत भारती सम्मान** और **भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार** प्रमुख हैं।

उनकी मुख्य काव्य-कृतियाँ हैं - **भग्नदूत, चिंता, हरी घास पर क्षण पर, इंद्रधनु रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार** आदि। अज्ञेय की संपूर्ण कविताओं का संकलन **सदानीरा** नाम से दो भागों में हुआ है।

*संकलित कविता **गाँव से शहर की ओर** में नगरीकरण की प्रक्रिया से उत्पन्न गाँव और शहर के विडंबनापूर्ण संबंध और उसमें मनुष्य की स्थिति की ओर संकेत है। पहले गाँव से शहर तक पहुँचाना मुश्किल था, जबकि अब गाँवों से शहर की ओर लोगों का पलायन बढ़ता जा रहा है। यह भारतीय मनुष्य की त्रासद स्थिति है।*

गाँव से शहर की ओर

उस बार हम गाँव से
सैर को निकले थे
हमने पाया
कि गाँव के बाहर हमारी पहुँच नहीं है :
सारे रास्ते –
डगर और पगडंडियाँ तक
सब वापस गाँव की ओर ही लौट जाते हैं

इस बार हम फिर
शहर से गाँव की सैर को निकले
और हमने पाया
कि गाँव तक हमारी पहुँच नहीं रही :
सारे रास्ते,
अब
गाँव से शहर की ओर दौड़ रहे हैं।

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

अ. सही विकल्प का चयन करो :

(1) कवि ने गाँव से शहर की ओर निकलने के बाद क्या अनुभव किया ?

(क) गाँव से शहर बहुत अच्छा है।

(ख) शहर के लोग गाँव के लोगों से अच्छे हैं।

(ग) गाँव के बाहर रहना बुरी बात है।

(घ) उनकी पहुँच गाँव के बाहर है।

2. शहर से गाँव की सैर को निकलने के पश्चात् कवि को कैसा लगा ?

(क) गाँव तक उनकी पहुँच नहीं रही।

(ख) गाँव के लोग शहर के लोगों से मिल नहीं पाते।

(ग) शहर के लोग गाँव में रह नहीं सकते।

(घ) गाँव के लोग शहर वालों से अच्छा बर्ताव नहीं करते।

3. कवि इस कविता के माध्यम से यही कहना चाहता है कि –

(क) लोगों को गाँव में रहना अच्छा लगता है और वे शहर में आना नहीं चाहते।

(ख) अब गाँव के लोग शहर की ओर आने लगे और वे फिर वापस गाँव जाना नहीं चाहते।

(ग) लोगों को शहर में रहना अच्छा लगता है और वे गाँव में जाना नहीं चाहते।

(घ) लोग कुछ दिन शहर में और कुछ दिन गाँव में बिताना पसन्द करते हैं।

(आ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. पहली बार लेखक कहाँ सैर करने निकले थे ?
2. दूसरी बार लेखक कहाँ सैर करने निकले ?
3. 'गाँव के बाहर हमारी पहुँच नहीं है' – हमारे जीवन की किस स्थिति का परिचायक है ?

(इ) लगभग 50 शब्दों में उत्तर दो :

1. पहले गाँव के लोग शहर क्यों नहीं आना चाहते थे या आये भी तो गाँव क्यों लौट जाना चाहते थे ?
2. वर्तमान समय में लोग गाँव की अपेक्षा शहर में रहना अधिक पसन्द करने लगे हैं, क्यों ?
3. 'गाँव तक हमारी पहुँच नहीं रही'
   – इस कथन से कवि का आशय क्या है ?
4. 'पहुँच नहीं है' और 'पहुँच नहीं रही'
   – कथनों के अभिप्राय में क्या अन्तर है ?
5. 'उस बार' और 'इस बार' की स्थितियों में कवि ने क्या परिवर्तन पाया है ?
6. 'सारे रास्ते' कहने के बाद भी 'डगर' और 'पगडंडियाँ'
   – इस कथन का अभिप्राय क्या है ?

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क) उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

1. ..... भरपेट भोजन किया।
   (क) भिक्षुओं को (ख) भिक्षुओं से
   (ग) भिक्षुओं ने (घ) भिक्षुओं द्वारा
2. रमेश तो ..... आदमी है।
   (क) घरों का (ख) घर का
   (ग) घर में (घ) घर से

3. ..... छात्रों को पढ़ाया गया।

(क) अध्यापक ने (ख) अध्यापकों द्वारा

(ग) अध्यापक द्वारा (घ) अध्यापक से

4. वह ..... गिर पड़ा।

(क) छत से (ख) छत के द्वारा

(ग) छत में (घ) छत के साथ

5. ..... बादल देखकर मोर प्रसन्नता से नाच उठे।

(क) नभ के (ख) नभ में

(ग) नभ से (घ) नभ पर

6. युद्ध में सैनिक ..... लड़ते हैं।

(का शत्रु में (ख) शत्रु को

(ग) शत्रु द्वारा (घ) शत्रु से

(ख) उपयुक्त परसर्ग चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

1. मोहिनी ..... गाय ..... पानी पिलाया।

(क) ने, को (ख) ने, से

(ग) द्वारा, ने (घ) को, ने

2. बच्चों ..... नदी ..... नहाकर बन्दरों ..... केले खिलाए।

(क) को, में, द्वारा (ख) ने, में, के

(ग) ने, में, को (घ) से, में, ने

3. अध्यापक बाजार ..... विद्यार्थियों ..... पुस्तकें लाए।

(का) में, की (ख) से, के लिए

(ग) से, की (घ) द्वारा, को

4. सुरेश ..... बहन ..... विवाह सोमवार ..... संपन्न हुआ।

(का) ने, का, द्वारा (ख) द्वारा, की, को

(ग) पर, ने, को (घ) की, का, को

5. आसमान ..... तारा टूटकर धरती ..... गिरा।

(क) पर, पर (ख) पर, में

(ग) से, पर (घ) से, में

योग्यता-विस्तार

1. गाँव और शहर की तुलना करते हुए यह सिद्ध करो कि दोनों के ही अपने-अपने अलग महत्व है।
2. ग्रामीण और शहरी जीवन में से तुम किसे चुनोगे ? लगभग 100 शब्दों में अपने विचार लिखो।
3. 'शहरीकरण से उत्पन्न समस्याएँ'
   - विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

सैर = भ्रमण

पहुँच = पकड़, विस्तार

रास्ते, डगर और पगडंडियाँ = कवि ने रास्ते का प्रयोग मुख्य मार्गों के लिए किया है तथा डगर का कच्चे और कम प्रचलित मार्गों के लिए। पगडंडियाँ उन पतले-संकरे मार्गों को कहते हैं, जो लोगों के आने-जाने से बन जाते हैं।

14

प्रदीप

देशभक्ति गीतों के रचयिता रामचंद्र द्विवेदी उर्फ प्रदीप का जन्म 6 फरवरी, 1915 ई. को मध्य प्रदेश में हुआ था। बचपन से ही आपको कविता लिखने का शौक था। 1939 ई. में लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप शिक्षक बनना चाहते थे। पर, भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। उसी समय मुंबई में हो रहे एक कवि सम्मेलन में भाग लेने का मोह आप छोड़ नहीं सके। आपकी कविताओं से प्रभावित होकर बॉम्बे टॉकिज के मालिक हिमांशु राय ने आपको **कंगन** फिल्म के लिए गीत लिखने की पेशकश की। 1939 ई. में प्रदर्शित इस फिल्म के गीत जबर्दस्त हिट हुए। 1940 ई. में ज्ञान मुखर्जी के निर्देशन में आपने **बंधन** फिल्म के गीत लिखे। फिर आपने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपने बॉम्बे टॉकिज के बैनर तले **नया संसार, अंजान, झूला, पुनर्मिलन, किस्मत** आदि कई हिट फिल्मों के गीत लिखे।

आप **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, नेशनल इंटीग्रेशन अवार्ड, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, फिल्म जर्नलिस्ट अवार्ड, इम्पा अवार्ड, महान कलाकार का पुरस्कार, राजीव गांधी अवार्ड** तथा **संत ज्ञानेश्वर** जैसे अनेक पुरस्कारों से नवाजे गए हैं।

11 दिसंबर 1998 ई. को भारत का यह महान गीतकार इस संसार से विदा हो गये। प्रदीप आज हमारे बीच नहीं हैं, पर उनके द्वारा लिखे गीत आज भी देशवासियों के दिलोंदिमाग में देशभक्ति का जज्बा बुलंद कर रहे हैं। उनके गीतों में प्रवाह है, ओज है। भाषा शैली सरल-सहज एवं गीतों के भाव अत्यंत स्पष्ट हैं।

साबरमती के संत *कवि एवं गीतकार प्रदीप का बहुचर्चित गीत है। इसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवनादर्शों पर प्रकाश डाला गया है। गांधी जी विलक्षण प्रतिभा के धनी महापुरुष थे। वे ऐसे अनोखे संत थे, जिन्होंने बिना हथियार और गोला-बारुद के ही देश को विदेशी शासन के चंगुल से मुक्त करा लिया। यह स्वाधीनता भारतवासियों के लिए एक चमत्कार था और यह चमत्कार साबरमती के महान संत गांधी जी ने कर दिखाया। भारत से अंग्रेजों को भगाना बड़ा कठिन कार्य था, परन्तु गांधीजी ने इस कार्य को बड़ी आसानी से किया। उनमें गजब की संगठन शक्ति थी। शरीर में मात्र धोती लपेटे और हाथ में लाठी लेकर जिधर से गुजरते, लाखों मजदूर, किसान, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, पठान सभी उनके पीछे चल पड़ते थे। सत्य और अहिंसा ही उनका एकमात्र अस्त्र था, जिसके बल पर शक्तिशाली अंग्रेजी जाति से उन्होंने टक्कर ली थी। उनके प्रयास से देश आजाद हुआ, पर उन्होंने नवगठित सरकार में कोई भी पद ग्रहण नहीं किया। उन्होंने खुद कष्ट झेला, पर देशवासियों को स्वाधीनता-रूपी अमृत प्रदान किया। उन्होंने पूरे विश्व को सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया है।*

साबरमती के संत

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल
आंधी में जलती रहे गांधी तेरी मशाल, साबरमती के संत ...।

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम
घर ही पे लड़ी तूने अजब की लड़ाई
दागा न कहीं तोप न बन्दूक चलाई
दुश्मन के किले पर भी न की तूने चढ़ाई
वाह रे फकीर खूब करामात दिखाई
चुटकी में दिया दुश्मनों को देश से निकाल, साबरमती के संत...।

शतरंज बिछाकर बैठा था यहीं पे जमाना
लगता था मुश्किल है फिरंगी को हटाना
टक्कर था बड़े जोर का दुश्मन भी था जाना
पर तू भी था बापू बड़ा उस्ताद पुराना
मारा वो दाव कसके उल्टी भी न चली चाल, साबरमती के संत ...।

जब-जब तेरी बिगुल बजी जवान चल पड़े
मजदूर चल पड़े किसान चल पड़े
हिन्दू, मुसलमान, सिख, पठान चल पड़े
कदम पे तेरा कोटि-कोटि प्राण चल पड़े
फूलों के सेज छोड़ के दौड़े जवाहरलाल, साबरमती के संत ...।

मन थी अहिंसा की बदन पे थी लंगोटी
लाखों में लिए घुमता था सत्य की सोटी
वैसे तो देखने में भी हस्ती तेरी छोटी
सर देख के झुकती थी हिमालय की भी चोटी
दुनियां में तू बेजोड़ था इंसान बेमिशाल, साबरमती के संत ...।

जग में कोई जिया तो बापू ने ही जिया
तूने वतन की राह पर सब कुछ लूटा दिया
मांगा न तूने कोई तख्त बेताज ही रहा
अमृत दिया सभी को खुद जहर पिया
जिस दिन तेरी चिता जली रोया था महाकाल, साबरमती के संत ...।

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

अ. सही विकल्प का चयन करो :

1. 'गांधी तेरी मशाल' का किस अर्थ में प्रयोग हुआ है ?
   (क) गांधी जी का दीप (ख) गांधी जी की तलवार
   (ग) गांधीजी का आश्रम (घ) गांधीजी का आदर्श
2. स्वाधीनता से पहले भारत पर किसका शासन था ?
   (क) अंग्रेजों का (ख) फ्रांसीसियों का
   (ग) डचों का (घ) पुर्तगालियों का
3. गांधी जी को प्यार से लोग क्या कहकर पुकारते थे ?
   (क) महात्मा (ख) बापू
   (ग) मोहन दास (घ) राष्ट्रपिता
4. गांधीजी के ऊँचा मस्तक के सामने किसकी चोटी भी झुकती थी ?
   (क) विध्यांचल की (ख) हिमालय की
   (ग) महाकाल की (घ) ताजमहल की

(आ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. 'साबरमती के संत' किसे कहा गया है ?
2. गांधीजी ने क्या कमाल कर दिखाया ?
3. महात्मा गांधी का वास्तविक हथियार क्या था ?
4. गांधीजी ने लोगों को किस मार्ग पर चलना सिखाया ?

(इ) संक्षिप्त उत्तर लिखो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. गांधीजी की संगठन शक्ति के बारे में तुम क्या जानते हो ?
2. गांधीजी ने किस प्रकार अंग्रेजों से टक्कर लिया था ?
3. प्रस्तुत गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखो।
4. 'साबरमती के संत' गीत के आधार पर गांधीजी के व्यक्तित्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

(ई) भावार्थ लिखो

(क) मन थी अहिंसा की बदन पे थी लंगोटी
लाखों में लिए घुमता था सत्य की सोटी।

(ख) माँगा न तूने कोई तख्त बेताज ही रहा
अमृत दिया सभी को खुद जहर पिया।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित मुहावरों/वाक्यांशों से वाक्य बनाओ :**
चुटकी में, बड़े जोर का टक्कर, पुराना उस्ताद, बिगुल बजाना, फूलों के सेज

2. **निम्नलिखित शब्दों का विलोम शब्द लिखो :**
अहिंसा, देश, सत्य, अमृत, पुराना, दुश्मन, आजादी, मुश्किल, गुरु, मिशाल

3. पठित कविता में प्रयुक्त **बेजोड़, बेमिशाल** और **बेताज** शब्द अरबी भाषा के शब्द हैं। तुम भी **बे** उपसर्ग लगाकर अन्य दस शब्द बनाओ।

योग्यता-विस्तार

1. भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गांधी के योगदान पर एक परियोजना प्रस्तुत करो।

2. इतिहास में सत्य-अहिंसा एवं प्रेम का मार्ग दिखाने वाले अनेक महापुरुषों के नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। उनमें से भगवान गौतम बुद्ध, पैगम्बर हजरत मुहम्मद और ईशा मसीह के जीवन एवं उपदेशों के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

3. पठित गीत का सीडी संग्रह कर सुनो और लय के साथ विद्यालय के किसी विशेष अवसर पर गाओ।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

खड्ग = तलवार
पतित = गिरा हुआ, पापी
पावन = पवित्र
अजब = अनोखा, विचित्र
करामत = चमत्कार
फिरंगी = अंग्रेज, विदेशी
उस्ताद = गुरु
बिगुल = युद्ध भूमि में बजाया जानेवाला एक वाद्य-यंत्र, युद्ध का शंखनाद
कोटि = करोड़
सोटी = लाठी
बेमिशाल = अतुलनीय
वतन = जन्मभूमि
बेताज = मुकुटहीन
सेज = बिस्तर, सय्या
आंधी में जलती रहे गांधी तेरी मशाल = संकट के समय भी गाँधी जी का आदर्श कायम रहे
साबरमती = गुजरात प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी। इसी नदी के तट पर गांधीजी का आश्रम था। इसे गांधी आश्रम, हरिजन आश्रम और सत्याग्रह आश्रम के नाम से भी जाना जाता है। इस आश्रम का ऐतिहासिक महत्व है। यहीं से गांधीजी ने अपने 78 साथियों को साथ लेकर 12 मार्च, 1930 ई. को **दांडी यात्रा** शुरू की थी और समुद्र किनारे पहुँचकर समुद्र के जल से स्वयं नमक बनाकर **नमक कानून** भंग किया था। साबरमती आश्रम आजकल 'गांधी संग्रहालय' के रूप में राष्ट्रीय धरोहर है।

15

नरेश मेहता

नरेश मेहता का जन्म 1922 ई. में मालवा (मध्य प्रदेश)के शाजापुर कस्बे में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा कई स्थानों पर हुई। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया। कुछ समय तक उनका संबंध वामपंथी राजनीति से रहा और बाद में वे गांधी शांति प्रतिष्ठान से भी जुड़े। 2000 ई. में इनका स्वर्गवास हुआ।

नरेश मेहता ने आरंभ में **आज** और **संसार** (दैनिक समाचार पत्र)में काम किया। आगे चलकर उन्होंने राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के साप्ताहिक पत्र **भारतीय श्रमिक** का संपादन किया। उन्होंने प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका **कृति** का भी संपादन किया था।

नरेश मेहता नई कविता के कवि हैं। उनकी कविता में प्रकृति एवं लोकजीवन के विविध चित्र मिलते हैं। वे विश्वबंधुत्व, करुणा तथा समरसता के प्रति आस्थावान कवि हैं। आधुनिक समस्याओं के प्रति एक दार्शनिक दृष्टि इनकी कविताओं की एक अन्य विशेषता है। उन्हें **मध्यप्रदेश शासन सम्मान**, **साहित्य अकादमी पुरस्कार** और **ज्ञानपीठ पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं– **महाप्रस्थान**, **संशय की एक रात**, **प्रवाद पर्व**, **मेरा समर्पित एकांत**, **वनपाखी सुनो** तथा **प्रार्थना पुरुष**। 'समिधा' नाम से उनका संपूर्ण काव्य दो खंडों में प्रकाशित हुआ है।

*संकलित कविता में एक वैदिक सूक्ति **चरैवेति** का प्रयोग नए संदर्भ में नए अर्थ के साथ करते हुए कवि ने सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। कविता में प्रयुक्त सूर्य, तारे, नदी, मेघ आदि आदिम बिंब हैं, जो नए संदर्भों में स्वाधीनता, प्रगति, विकास तथा समृद्धि के प्रतीक बनकर प्रस्तुत हुए हैं।*

चरैवेति

चलते चलो, चलते चलो!
सूरज के संग-संग चलते चलो, चलते चलो!
तम के जो बंदी थे
सूरज ने मुक्त किए
किरनों से गगन पोंछा
धरती को रंग दिए
सूरज को विजय मिली ऋतुओं की, रात हुई
कह दो इन तारों से चंदा के संग-संग चलते चलो!
रत्नमयी वसुधा पर
चलने को चरन दिए
बैठी उस क्षितिज पार
लक्ष्मी शृंगार किए,
आज तुम्हें मुक्ति मिली, कौन तुम्हें दास कहे?
स्वामी तुम ऋतुओं के संवत् के संग-संग चलते चलो!
नदियों ने चल कर ही
सागर का रूप लिया
मेघों ने चल कर ही
धरती को गर्भ दिया
रुकने का मरण नाम, पीछे सब प्रसार हैं।
आगे हैं रंग-महल, युग के ही संग-संग चलते चलो!

मानव जिस ओर गया
नगर बने, तीर्थ बने
तुम से है कौन बड़ा ?
गगन-सिंधु मित्र बने,
भूमि का भोगो सुख, नदियों का सोम पिओ
त्यागो सब जीर्ण वसन, नूतन के संग-संग चलते चलो !

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

1. कवि ने 'चलते चलो' का संदेश कवि ने किसे दिया है ?
2. कवि ने वसुधा को रत्नमयी क्यों कहा है ?
3. कवि ने किस-किस के साथ निरंतर चलने का संदेश दिया है ?
4. किन पंक्तियों में कवि ने मनुष्य की सामर्थ्य और अजेयता का उल्लेख किया है ?
5. निरंतर प्रयत्नशील मनुष्य को कौन-कौन से सुख प्राप्त होते हैं ?
6. 'रुकने को मरण' कहना कहाँ तक उचित है ?
7. कवि ने मनुष्य को 'तुमसे है कौन बड़ा' क्यों कहा है ?
8. 'युग के ही संग-संग चले चलो' - कथन का आशय स्पष्ट करो।
9. नरेश मेहता 'आस्था और जागृति' के कवि हैं- कविता के आधार पर सिद्ध करो।

1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो :

(क) जो दूसरों के अधीर हो
(ख) जो दूसरों के उपकार को मानता हो
(ग) जो बच्चों को पढ़ाते हैं
(घ) जो गीत की रचना करते हैं
(ङ) जो खेती-वारी का काम करता हो

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

2. **निम्नलिखित समस्त-पदों के विग्रह कर समास का नाम लिखो :**
   पीतांबर, यथाशक्ति, अजेय, धनी-निर्धन, कमल-नयन, त्रिफला
3. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो :**
   अपना उल्लू सीधा करना, आँखों का तारा, उन्नीस-बीस का अंतर, घी के दीए जलाना, जान पर खेलना, बाएँ हाथ का खेल

योग्यता-विस्तार

इस कविता के समान भाव वाली कोई अन्य कविता याद करके कक्षा में सुनाओ।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

चरैवेति = चलते रहो, एक वैदिक सूक्ति।
बंदी = दास, गुलाम।
रत्नमयी = रत्नों से सम्पन्न।
गगन-सिंधु = आकाश रूपी सागर, आकाश में सागर की कल्पना की गई है।
जीर्ण-वसन = फटे-पुराने वस्त्र, पुराने संस्कार एवं रूढ़ियाँ।

16

धर्मवीर भारती

'धर्मयुग' के संपादक के रूप में यश अर्जित करने वाले धर्मवीर भारती का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 1926 ई. में हुआ था। आपने प्रारंभिक शिक्षा सरकारी स्कूलों में पायी। उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और पीएच.डी. की उपाधि अर्जित कर वहीं पर आप हिन्दी विभाग में अध्यापक हो गए। इसके पूर्व इन्होंने इलाहाबाद से छपने वाले साप्ताहिक **संगम** में उप-संपादक के रूप में काम किया। उन्हें शिक्षण की अपेक्षा पत्रकारिता से अधिक लगाव था। फलस्वरूप 1959 ई. में विश्वविद्यालय छोड़कर वे **धर्मयुग** साप्ताहिक पत्र का संपादन करने के लिए मुंबई चले गए।

दूसरा सप्तक में विशिष्ट कवि के रूप में स्थान पाने के कारण उनकी गिनती प्रयोगवादी कवियों में की जाती है, किंतु, मूलत: वे गीतकार ही थे। रोमानी कवि के रूप में वे प्रेम और सौंदर्य के गायक कवि हैं। इसके लिए उन्होंने पौराणिक आख्यानों को भी अपने काव्य का विषय बनाया है। **अंधायुग** और **कनुप्रिया** इसके साक्षी हैं। इन दोनों काव्यों में भारती के काव्य-शिल्प की एक नयी भंगिमा दिखती है।

उपर्युक्त कृतियों के अलावा भारतीजी की अन्य कृतियाँ हैं- **ठंडा लोहा** तथा **सात गीत वर्ष**। भारतीजी ने विश्व साहित्य से चुनकर श्रेष्ठ कविताओं का हिन्दी रूपांतरण भी किया है।

कविता के साथ-साथ भारतीजी ने उपन्यास, नाटक, कहानी और निबंध भी लिखे हैं। इनमें उनकी प्रमुख पुस्तकें **गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ठेले पर हिमालय, कहनी-अनकहनी, बंद गली का आखिरी मकान** आदि हैं। 1997 ई. में धर्मवीर भारती का देहावसान हो गया।

*संकलित कविता **टूटा पहिया** भारती जी के **सात गीत वर्ष** नामक काव्य-संकलन से ली गयी है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है। इसका संदेश यह है कि जीवन में तुच्छ से तुच्छ और लघु से लघु समझी जाने वाली वस्तु अथवा व्यक्ति भी कभी असत्य और अन्याय से लड़ने में अत्यधिक उपयोगी और शक्तिशाली सिद्ध हो सकता है। महाभारत के **चक्रव्यूह** प्रसंग को आधार बनाकर कवि ने यहाँ इसी तथ्य को निरुपित किया है। चक्रव्यूह में घिरे, अकेले और निहत्थे अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे पहिए से असत्य पक्ष के भयंकर अस्त्रों से लोहा लिया था।*

टूटा पहिया

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत!
क्या जाने कब–
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता
हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर
जाय।
अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली-निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें,
तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ,
मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ!
लेकिन मुझे फेंको मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने–
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!!

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. रथ का टूटा पहिया स्वयं को न फेंके जाने की सलाह देता है, क्योंकि –
   (क) उसे मरम्मत करके फिर से रथ में लगाया जा सकता है।
   (ख) किसी दुस्साहसी अभिमन्यु के हाथों में आकर ब्रह्मास्त्र से लोहा ले सकता है।
   (ग) इतिहासों की सामूहिक गति झूठी पड़ जाने पर सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले सकता है।
   (घ) ऊपर के **ख** और **ग** दोनों सही है।

2. 'दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती' किसने दी थी ?
   (का) अभिमन्यु ने (ख) द्रोणाचार्य ने
   (ग) अर्जुन ने (घ) दुर्योधन ने

3. 'अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी ....'
   –यहाँ किसके पक्ष को असत्य कहा गया है।
   (क) युधिष्ठिर का (ख) दुर्योधन का
   (ग) अभिमन्यु का (घ) कृष्ण का

4. 'ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ' – यह किसका कथन है ?
   (क) भीष्म का कथन
   (ख) परशुराम का कथन
   (ग) टूटे हुए पहिए का कथन
   (घ) भीम के गदा का कथन

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो :

1. कवि ने अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों बताया है ?
2. 'दुरूह चक्रव्यूह' का महाभारत के संदर्भ में और आज के संदर्भ में क्या तात्पर्य है ?
3. कवि ने किस तथ्य के आधार पर कहा कि –'असत्य कभी सत्य को बर्दाश्त नहीं कर पाता' ?
4. 'लघु से लघु और तुच्छ से तुच्छ वस्तु' किन परिस्थितियों में अत्यधिक उपयोगी हो सकती है ?
5. 'इतिहास की सामूहिक गति का सहसा झूठी पड़ जाने' का क्या आशय है ?
6. कवि के अनुसार सच्चाई टूटे पहियों का आश्रय लेने को कब विवश हो सकती है ?

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग करो :**
   सामूहिक, आवश्यकता, सनसनाहट, पाठक, पूजनीय, परीक्षित
2. **निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग अलग करो :**
   दुस्साहस, अनुदार, बदसूरत, निश्चिंत, बेकारी, अज्ञानी

योग्यता-विस्तार

1. महाभारत में वर्णित चक्रव्यूह का प्रसंग पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो।
2. 'ब्रह्मास्त्र' क्या है ? इसकी जानकारी हासिल करो और कक्षा में चर्चा करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

दुरूह = कठिन

चक्रव्यूह = चक्र के आकार में सेना की स्थापना, महाभारत के युद्ध में जिस दिन अभिमन्यु लड़ा था, उस दिन द्रोणाचार्य ने इसी व्यूह की रचना की थी।

अक्षौहिणी = चतुरंगिनी सेना का एक विभाग (जिसमें 109350 पैदल, 65610 घोड़े, 21870 रथ और इतने ही हाथी शामिल होते हैं)

दुस्साहसी = खतरे से भरे कार्य के लिए साहस करने वाला

महारथी = योद्धा

ब्रह्मास्त्र = ब्रह्मशक्ति से परिचालित अमोघ माना जाने वाला एक अस्त्र, महाविनाशकारी अस्त्र।

इतिहासों की ... आश्रय ले = ब्रह्मास्त्रों (जैसे आज के परमाणु बम) की सहायता से लड़े गये युद्ध की व्यापक विनाश लीला के बाद इतिहास की गति अवरुद्ध-सी जान पड़े और जो भी साधारण से साधारण व्यक्ति और टूटे पहिये जैसा हथियार शेष बचे, उससे ही इतिहास को नयी गति मिले।

आश्रय = आसरा, सहारा

निडर = जो डरे नहीं

पंथ = मार्ग

असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण हेतु